गंगासागर से हिमालय में स्थित माड़ा गाँव (बद्रीनाथ) तक

गंगा अविरलता यात्रा

जीवन की अविरलता हेतु एक संदेश यात्रा

गंगा सागर 12 जनवरी 2019 (युवा दिवस) से पर्यावरण दिवस तक

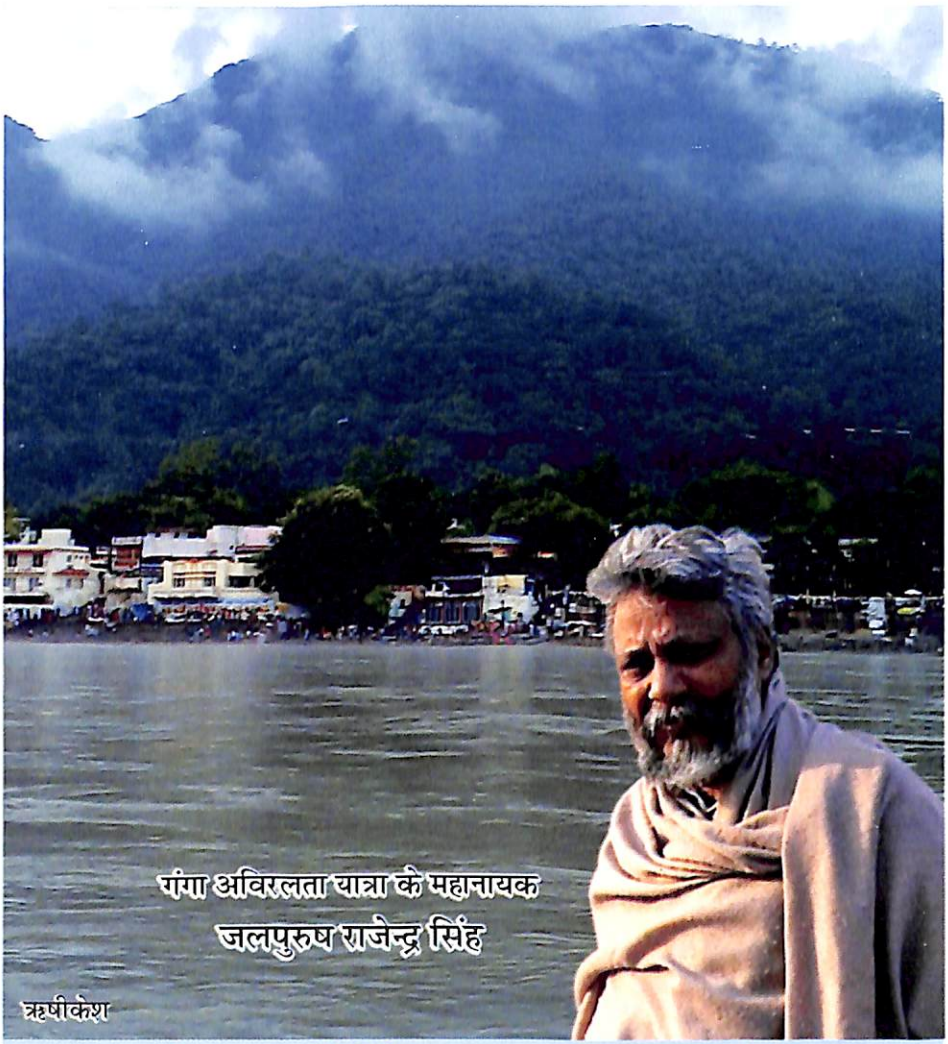

दुनिया की नदियों में जब तक अविरलता बनी रहेगी
तभी तक जीवन में भी अविरलता बनी रहेगी।

15 जनवरी 2019 को गंगा अविरलता यात्रा तरुण भारत संघ मुख्यालय
पर उपस्थित महात्मा गांधी के पौत्र अरुण गांधी,
प्रपौत्र तुषार गांधी, जलपुरुष राजेन्द्र सिंह एवं अन्य जलयात्री

गंगासागर से हिमालय में स्थित माना गाँव (बद्रीनाथ) तक

गंगा अविरलता यात्रा

जीवन की अविरलता हेतु एक संदेश यात्रा

गंगा अविरलता यात्रा के महानायक

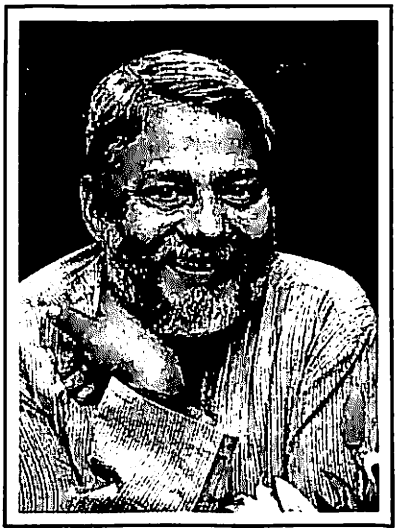

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह

गंगा सागर 12 जनवरी 2019 (युवा दिवस) से

5 जून 2019 पर्यावरण दिवस तक

विश्व पर्यावरण दिवस, 2019

संपादक

सुबोध नंदन शर्मा

प्रकाशक :

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा किशोरी, वाया थाना गाजी

अलवर, राजस्थान

मूल्य

गंगा की निर्मलता और अविरलता के

प्रति श्रद्धाभाव

मुद्रक :

लिथो कलर प्रिंटर्स

अचलताल, अलीगढ़

मो. : 9412535566

गंगासागर से हिमालय में स्थित माना गाँव (बद्रीनाथ) तक

गंगा अविरलता यात्रा

जीवन की अविरलता हेतु एक संदेश यात्रा

अनुक्रम

संपादकीय		3
गंगा अविरलता यात्रा	राजेन्द्र सिंह	5
अविरलता गंगा यात्रा	राजेन्द्र सिंह	11
झूँठ और धोखा देने वालों को गंगाजी दण्डित करती हैं	राजेन्द्र सिंह	38
आधा भारत बाढ़–सुखाड़ का शिकार है	राजेन्द्र सिंह	73
प्रकृति के क्रोध तथा बाढ़ व सुखाड़ का समाधान ढूँढना होगा	राजेन्द्र सिंह	78
भारतीय आस्था और पर्यावरण रक्षा	राजेन्द्र सिंह	83
गंगत्व	राजेन्द्र सिंह	91

गंगा मात्र एक नदी नहीं है, यह एक आस्था है, धर्म है, जीवन दायिनी है, मंगल कारिणी है, सुख दायिनी और दुख हारिणी है, उस मानवता की जिसने उसके भौतिक अस्तित्व को देवनदी का स्वरूप व जल को चरणामृत के रूप में ग्रहण किया है। इसी सत्य को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए राम भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं।

गंग सकल मुद मंगल मूला
सब सुख करनि हरनि सब सूला।

संपादकीय :

गंगा के महानायक की अविरलता यात्रा

हम सभी भारवासियों के लिए गंगाजी की निर्मल और अविरलधारा जिसे हम बहती हुई धारा भी कहा करते हैं को देख लेने मात्र से जो प्रसन्नता होती है उसे इक्कीवीं शताब्दी में विज्ञान और तकनीकी की सहायता से आगे बढ़ रहे इस देश में करोड़ों लोगों को अपनी प्राचीन परम्परा पर आज भी विश्वास है कि गंगा स्नान से न केवल व्यक्ति अपने पापों से मुक्त हो जाता है, बल्कि उसे आनंद की प्राप्ति भी होती है।

विज्ञान के इस युग में यही भारतीय संस्कृति समस्त विश्व को आश्चर्य चकित करती है। गंगा के इसी स्वरूप का स्मरण स्वामी सानंद जी ने किया उसकी विलक्षण शक्तियों को कई–कई बार वैज्ञानिक आधार पर देखा, परखा और जाँचा भी। उसी जीवनदायिनी गंगा में बढ़ते प्रदूषण और मैली हो रही आस्थाओं, निर्मल और अविरल बहती हुई धाराओं को सरकारों द्वारा बाधित करने के प्रयोग दर प्रयोग और बढ़ती हुई व्यावसायिकता के कारणों से जीवन पर बढ़ते संकट ने न सिर्फ स्वामी सानंद जी को चिंतित किया और यहाँ तक की उन्हें आत्म बलिदान के लिए विवश भी होना पड़ा – बावजूद इसके गंगा ज्यों की त्यों मैली और बाधित है। आज हर भारतवासी का यही सबसे बड़ा कष्ट है – गंगा नहीं रही तो जीवन भी नहीं रहेगा, न समृद्धि रहेगी और न आनंद रहेगा। स्वामी सानंद के बलिदान से पूर्व ही भारतीयों के लिए सद्भावना का प्रतीक बन चुके जलपुरुष राजेन्द्र सिंह ने प्रकृति के इस घटनाक्रम से चिंतित और विचार कर कि इस धरती पर जीवन जीवित रहे जीवन जीता जागता रहे, धरती की हरियाली बनी रहे। गंगा की निर्मलता और अविरलता के लिए अपने जीवन के सारे रास्ते ही इस ओर मोड़ लिए थे।

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह का जीवन एक सत्य मार्ग पर चलने वाले सन्यासी और महात्मा के समतुल्य है इसलिए उन्होंने न सिर्फ भारत के लिए बल्कि दुनियाभर में शुद्ध पेयजल के लिए और दर–दर भटक रहे असंख्य प्रणियों के लिए जल की उपलब्धता का अभियान चलाया हुआ है अपने जीवन में सत्य, संयम, सादगी और संवेदना के साथ आगे बढ़ाया हुआ है। दुनिया को इसी सन्यासी से उम्मीदें भी हैं। यह एक सत्याग्रह है गांधी के इस सत्याग्रह को जलपुरुष आगे बढ़ा रहे हैं। दुनिया को फिर से सत्य के लिए लड़ना सिखा रहे हैं। धन्य है, राजेन्द्र सिंह। इस पुस्तक की समस्त सामग्री एवं लेख राजेन्द्र सिंह द्वारा ही लिखे गये हैं। इन आलेखों में जलपुरुष राजेन्द्र सिंह जो लिखा है वह अमूल्य तो है ही भविष्य के संघर्ष भी यह एक अहम सामग्री साबित होगी

ऐसा मेरा विचार है।

'विश्व प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एवं आई.यू.सी.एन. के पूर्व प्रमुख डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन ने गंगा की निर्मलता और अविरलता पर चिंतित होकर कहा है'

अनन्त काल से लेकर आज तक गंगा, हिरण्यगर्भा, अमृतवाहिनी, त्रिपथगा, पतितपावनी आदि अनेक नामों से भारतीय वाड्मय में समाई हुई है। भारतीय सभ्यता को नया रूप देने में गंगा की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इस पर वेदों से लेकर आधुनिक युग तक अनेक रूपों में सामग्री उपलब्ध है। यदि हम यह कहें कि गंगा की पौराणिकता व पवित्रता की तुलना संसार की किसी भी नदी से नहीं की जा सकती, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय नागरिक की आत्मा को प्रमुदित करने वाली यह जल प्रवाहिनी प्रत्येक युग में भारतीय सभ्यता के इतिहास की प्रेरणा रही है। भारतीय सभ्यता के इतिहास में इसकी भूमिका अद्वितीय है। इसी के तट पर इतिहास पूर्व सभ्यता का विकास हुआ है। इसी के किनारे सुन्दर शहरों का निर्माण हुआ है। यहीं से जातियों के बीच आदान–प्रदान का एक रोचक, जीवन्त और ऐतिहासिक सिलसिला आरम्भ हुआ है। भारतीय मनुष्य को भौतिक उत्कर्ष तक पहुंचाने का काम भी इसी महान सरिता के तट से जारी हुआ है। इसे इतिहास की बिडम्बना ही समझिए कि कालान्तर में यह आध्यात्मिक केन्द्रों को महत्व देने वाली तो रही ही है, परन्तु आधुनिक समय में इसे प्रदूषण का शिकार बनना पड़ा है। वह जलधारा जो जीवन को सिंचित और पल्लवित करती रही है, अब एक विकट, रोग–प्रसारी, प्रदूषित जलकोष बनकर रह गई है।

सुबोध नंदन शर्मा

गंगा अविरलता यात्रा

गंगा जी द्वारा सर्जित सभ्यता को नष्ट होने से बचाने हेतु गंगा सद्भावना यात्रा के द्वारा गंगा अविरलता यात्रा का शुभारम्भ 12 जनवरी विश्व युवा दिवस पर गंगा सागर से किया गया विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2019 को गंगा अविरलता यात्रा बदरीनाथ के निकट उत्तराखण्ड की सबसे ऊँचाई पर स्थित माना गाँव पहुँची।

यह भारत के सभी राज्यों में भी गई है। दुनिया के सभी महाद्वीपों में भी गई है। इस यात्रा का लक्ष्य है। गंगा अविरलता हेतु चेतना जगाना। अविरलता के बिना निर्मलता और गंगा की पवित्रता बचाना सम्भव नहीं है। गंगा की सभ्यता पर संकट आ गया है। इसी को बचाने हेतु यह यात्रा आरम्भ हुई है। यह सदैव चलती रहे। ऐसी मां गंगा से प्रार्थना है।

हमारी आस्था एवं पर्यावरण रक्षा को जानना ही आज का नया कल्प है। ऐतिहासिक प्रमाणों से पूर्व सृष्टि (प्रकृति) को ब्रह्मा के तप संकल्प से निर्मित माना गया है। अनेक आवर्तनों से होते हुए वापस ब्रह्मा में लीन होने वाली प्रकृति निश्चित कालचक्र के अनुसार सर्जन एवं प्रलय का आवर्तन दोहराती रहती है। बार–बार उत्पत्ति एवं विनाश सृष्टि का ही होता है। इसके अतिरिक्त न किसी वस्तु या भाव की उत्पत्ति होती है और न ही विनाश।

इस प्रकृति लीला का चित्र प्रत्येक भारतीय मानस पर अंकित था। पुराणों में इस लीला का जो सुव्यवस्थित कालचक्र दिया गया है, इसके अनुसार प्रकृति की लीला अनादि और अनंत चलने वाली है। इसके अनुसार प्रकृति–लीला के आवर्तनों का मौलिक कालांश "चतुर्युग" है। आरम्भिक काल आनन्द का काल है। इस युग में जीव कर्ता से दूर नहीं है, इसलिए इसे "कृतयुग" भी कहा जाता है। इस युग में जीव–जीव में भिन्नता नहीं है। सभी एक हैं। यूं भी कह सकते हैं कि इस युग में वर्ण की अभी बात ही नहीं उठी थी। सहज, जटिलतारहित तथा मद, मोह, लोभ, अहंकार जैसे भाव तो उत्पन्न ही नहीं हुए थे। काम नहीं था। जीवन की आवश्यकताएं बहुत सीमित थी। जीवन चलाने के लिए विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता था। इस सहज आनन्दमय युग में ज्ञान की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए वेद–रचना भी नही हुई थी।

यह आनन्दमय युग लम्बे समय तक चला था, लेकिन समय के साथ–साथ प्रकृति मे जटिलतायें बढती चली गई थी। सहज चलने वाली व्यवस्था विकृत होने लगी थी। धारण करने वाले तत्व की हानि होने लगी थी, कर्ता से जीवों की दूरी बढने लगी, कर्ता को विभिन्न अंशावतारो के रूप में जन्म लेना पड़ा। चूंकि धारण करने वाले तत्व की पुनःस्थापना करने के लिए बार–बार अंशावतारो

को जन्म लेने से जटिलता व जीवन मे गिरावट आई। इस प्रकार 'कृत' का अंत होता गया और त्रेता का प्रारम्भ हुआ।

त्रेता युग एक राजा व एक वेद से आरम्भ होता है। इसमें मद, मोह, लोभ, अहंकार जैसे मनोविकारों की उत्पत्ति होने लगी। प्राथमिक अवस्था के कारण मानवीय मर्यादाओं से इन पर नियंत्रण हुआ। सीमित आवश्यकताओं के इस युग में मानव कुछ कलाकौशल व तकनीक सीखने लगा। इसमे जीवन की जटिलता तेजी से बढनी आरम्भ हो गई। जीव–जीव में विभिन्नताएं तो बढी लेकिन आपसी सम्पर्क एवं संवाद में कोई व्यवधान अभी तक नही आया था। तभी इस युग के अंशावतार थे राम। राजा होते हुए भी भोगवादी संस्कृति को रोकने हेतु उन्होने वानरों, भालुओं, पशु–पक्षियों को इकट्ठा करके प्राकृतिक विजेता बनने एवं 'रावण' को समाप्त करने की योजना बनाई थी।

तकनीकी ज्ञान में निपुण, भोगवादी रावण अपने तकनीकी तंत्र के बल पर प्रकृति के अंग वर्षा, हवा, सूरज, आकाश, धरती पर अपना नियंत्रण कर बैठा था। प्रकृति के अधिकतर हिस्से (देवता रूपी हवा, इन्द्र, वरुण आदि) उसकी जेल मे बंद थे। उसने आज की तरह सभी सत्ताओं का केन्द्रीकरण करके स्वयं को उसका नियंता बनाना चाहा था। उसने अपने नैसर्गिक सुख के लिए एक अशोक वाटिका आज के वन्य जीव अभ्यारण्यों की तरह से बनाकर रखी थी, जिसमें वह स्वयं या उसके अभिजात्य वर्ग के लोगों का ही प्रवेश सम्भव था। सीता को इस वाटिका में रखना भी हमें ऐसे ही संकेत देता है। हनुमान द्वारा लंका में प्रवेश करके इसे उजाड़ना भी आज के जंगल में रहने वालो का जंगल के प्रति असंतोष एवं प्रतिक्रिया व्यक्त करना जंगल उजाड़ने जैसी ही घटना थी। यहां हनुमान द्वारा सोने की लंका को जलाकर लंका की भोगवादी संस्कृति को समाप्त करने की प्रक्रिया आरम्भ हुई दिखती है। वैसे यह प्रक्रिया तो राम की दूरदर्शी सौतेली माँ कैकेयी द्वारा ही आरम्भ कर दी गई थी। कैकेयी जानती थी कि राम ही ऐसी नैतिक शक्ति है, जो भौतिकवादी ताकत रावण को समाप्त कर सकती है।

लंका में उस समय भी आज जैसा प्रलोभन, लूटमार, भय और धोखा सब कुछ था। सीता को सोने का हिरण दिखाकर अपहरण करने की घटना इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। भोगवादी ताकतों के विरुद्ध नैतिक ताकत खड़ी करने वाली कैकेयी को उस समय चारों तरफ अपमान–बदनामी मिल रही थी, क्योंकि उस समय भी पूरा समाज इस स्थिति में नहीं था कि आज की तरह जीवन को सुख देने वाली वस्तु का त्याग करके मूल्यों की स्थापना कराने व करने वालो को प्रतिष्ठित कर सके, बल्कि ऐसे लोगों को निन्दा व मौत का शिकार होना पड़ा था।

राम–रावण युद्ध प्रकृति–प्रमियों व अनैतिक भोगवादी ताकतों के बीच का

युद्ध था। इस बात के स्पष्ट प्रमाण युद्ध आरम्भ से लेकर अंत तक हमें मिलते रहे। राम के साथ पशु–पक्षी सब मिलकर युद्ध की तैयारी करते हैं। समुद्र पर पुल बनाना आपसी सहयोग का अद्‌भुत प्रमाण है। इस तरह से युद्ध में कोई प्रलोभन या धोखा नहीं दिया गया। जबकि रावण ने राम–लक्ष्मण को धोखे से उठवा दिया था। उसने घातक (परमाणु सदृश्य) अस्त्रो का प्रयोग भी किया था। उसके पास बहुत शक्तिशाली अस्त्र थे, लेकिन ये सब लंका को भी नहीं बचा पाये और लंका लगभग समाप्त हो गई, तभी उस संस्कृति का अंत हुआ। इसके बाद के एकमात्र प्रकृति–प्रेमी व नैतिक शक्ति के पोषक विभीषण को वहां की सत्ता सौंप दी गई। इसने यहां एक नई संस्कृति को पैदा किया।

इस प्रकार संस्कृतियों के आवर्तन–प्रत्यावर्तन होते रहे, जिससे मानव एवं जीवों की सरलता समाप्त हो गई और सभी जीवों तथा भावों में विभिन्नता आने लगी। फलस्वरूप विभिन्न विद्याओं एवं विधाओं की उत्पत्ति हुई। इनमें भी विभाजन होकर इनसे भी अनेक शास्त्र निर्मित होते रहे। भारतीय इसे द्वापर युग कहते हैं। उक्त प्रमाण ऐतिहासिक तौर पर खरे हैं या नहीं–यह मैं नहीं कह सकता लेकिन उक्त घटनाक्रम रामायण महाकाव्य का आधार है। ऐसा भाव यदि वाल्मिकी–तुलसीदास जैसे व्यक्ति के मन में आया और उसे करोड़ों लोगों ने स्वीकार किया है, तो मैं इसे तथाकथित प्रमाणों के आधार पर लिखे गये इतिहास से अधिक प्रमाणित मानता हूँ। द्वापर युग की जानकारी देने वाली रामायण भले ही बाद में रचित हुई हो लेकिन यह भारतीय समाज के लिए किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ से बड़ी है।

वैसे भारतीय दृष्टि से जिसे हम इतिहास कहते हैं, उसका आरम्भ द्वापर से ही हुआ दिखता है। इस युग में सृष्टि (प्रकृति) अपनी सहजता से बहुत दूर निकल गई थी। सभी जीव और भावों में विभिन्नता आने लगी थी। इसके कारण विभिन्न विधाओं तथा विद्धाओं की उत्पत्ति हुई। इनमें विभाजन होकर इनके अनेक शास्त्र बन गये। जीवनयापन के लिए कलाओं एवं तकनीक की जरूरत पड़ती है। इस प्रकार सृष्टि की जटिलता बढ़ती गई। खेती भी सरल नहीं रही, अपितु अनाज पैदा करने के लिए प्रयत्न करने पड़े। "यथा कथा च विधया अन्नम् बहुकूनीर्त" – इन विविध शिल्पों और कलाओं के वहन के लिए अब एक ही नया 'शूद्र वर्ण' भी निर्मित हो गया। इस काल मे ही ईर्ष्या, लोभ व क्रूरता लोगों के स्वभाव में निहित हो गई। यहां का राजा क्षत्रियोचित आवेश में ही लिप्त रहा। धारण करने वाले व्यवहार की हानि होने, क्षत्रियों की परस्पर ईर्ष्या, लोभ, कटुता के कारण पृथ्वी विष्णु से प्रार्थना करती कि अब इतना बोझ हो गया है। मेरे लिए सहन करना मुश्किल हो गया है। बिल्कुल आज जैसा भयंकर पर्यावरण संकट उस समय उत्पन्न हो गया था। इस संकट से बचाने हेतु कृष्ण–बलराम जैसे पर्यावरण संरक्षक (अंशावतार) पैदा हुए। तब

भौतिक व नैतिक शक्तियों में युद्ध हुआ। इस युद्ध में भी नैतिक शक्तियों की विजय हुई। इस युद्ध को 'महाभारत' के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध भी दो विचारधाराओं का युद्ध था। एक पक्ष पूरी भूमि व प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करना चाहता था। इसके पास तकनीकी ज्ञान, आर्थिक सत्ता तथा अन्य सभी प्रकार की शक्तियां थीं। दूसरे पक्ष के पास पशुपालकों का नेता कृष्ण था जिसने अपना बचपन गोपालन में बिताया तथा वह जंगलों का संरक्षक था। युधीष्ठर जैसा प्रकृति– प्रेमी अर्जुन जैसा भावुक वीर, भीम जैसा मर्यादाओं में रहने वाला बलशाली, नकुल–सहदेव जैसे प्राकृतिक मित्रता को समझने वाली नैतिक ताकतें थी। ये प्रकृति के चक्र को समझने तथा बचाने की कोशिश करते रहे। इनके नेता कृष्ण प्रकृति चक्र के विषय में गीता में कहते है –

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ।।16।।

गीता, अध्याय तीन आलस्य या लालच के कारण हम श्रम को टालते हैं और प्रकृति के चक्र को तोड़ते हैं। लोभ में आकर जरूरत से ज्यादा लेने की हमारी कोशिश प्राकृतिक नियमों को तोड़ती है। प्रकृति की विविधता एक दूसरे की पूरक है। प्रकृति मे सब प्राणियों की आवश्यकता पूर्ति की पूरी सामग्री मौजूद है, लेकिन हम बिना त्याग के भोग करते हैं, तो यह प्रकृति की चोरी है। वास्तव में त्याग और भोग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आज हम भोग तो करना चाहते हैं, लेकिन इसके लिए जरूरी मेहनत टालते रहते हैं। ऐसा करने वाले चोर हैं।

इष्टांभोगान्हि वो देवा दास्यंते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तनप्रदायेभ्यो यो भुड्त्ते स्तेन एव सः।।12।। गीता अध्याय तीन

"तुम्हारे यज्ञ अर्थात् श्रम से प्रसन्न होकर 'देवता' तुम्हारे लिए इष्ट भोग की वस्तुएं तुम्हें देंगे। इस प्रकार प्रकृति का ऋण चुकाये बिना यानी आवश्यक श्रम किये बिना जो खाता है, वह निश्चय ही चोर है। ईशवास्य उपनिषद् में त्याग और भोग की जो जोड़ी थी "तेन त्यक्तेन भुंजीथा"(त्याग करके भोग करो) यह भाष्य प्रकृति के संरक्षण का सबसे महत्वपूर्ण उपाय है, यदि हम शारीरिक श्रम करके खाते हैं तो प्रकृति का चक्र नहीं टूटता है।

इसके कुछ काल बाद ही फिर पर्यावरण विरोधी कलयुग का आना रुकता नहीं तथा महाभारत के कुछ ही वर्षों बाद प्रकृति प्रेमी श्रीकृष्ण और उनके वंशज यादवों का अंत हो गया और पर्यावरण विनाश की लीला पुनः चालू हो गई।

पाश्चात्य इतिहासकारों की दृष्टि से सिन्धु घाटी की सभ्यता वैदिक काल से पूर्व की सभ्यता मानी जाती है। यह सभ्यता 3000 से 1500 ई.पू. की अत्यंत उन्नत शहरी सभ्यता मानी जाती है। इस सभ्यता में प्रकृति के प्रतीक पीपल को ही जीवनदाता माना जाता था।

सिन्धु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित मुद्राओं में बर्तनों (पोटरी) पर मिले पीपल के वृक्ष इस बात के साक्षी हैं। इस काल में पीपल को प्राणदाता, जीवनदाता माना गया है। इस काल में देवता पीपल की टहनियों के मुकुट धारण किये हुए हैं। अपने मुकुट बनाने के लिए ये पीपल के वृक्ष की रक्षा करने के लिए असुरों से लड़ाई करते हैं। उस युद्ध में प्रायः देवता ही जीतते रहते है। एक बार असुर जीतकर पीपल की कुछ शाखाओं पर पर अपना नियंत्रण कर लेते हैं। लेकिन शीघ्र ही देवता असुरों को मार देते हैं। इस प्रकार वृक्षों को भगवान मानकर उनकी पूजा करने का काम इन सभ्यता में जोरो से होता रहा है।

देवताओं, राजाओं व योद्धाओं का सारा ताना–बाना इस वृक्ष के चारों तरफ ही होता है। वृक्ष इस सभ्यता के केन्द्र में रहा है। इस वृक्ष की रक्षक दिव्य आत्मायें होती हैं। इनका मुख तो मनुष्य जैसा होता था, शेष शरीर कई पशुओ के अंग–प्रत्यंग से मिलकर बना हुआ था। इस प्रकार मुंह को ज्ञान का गुण तथा शेष शरीर मेढे की तरह तीव्रता, बाघ की तरह कुरूपता व आक्रमकता तथा नागराज की तरह जहरीले मृत्यृजनक काटने वाले मिश्रित गुणों वाले होते थे। कुछ रक्षकों में मुख तथा शरीर एक जैसे माने जाते हैं।

एक मुद्रा पर पीपल के वृक्ष की रक्षा सांड (नन्दी) कर रहा है। असुर पीपल की तरफ झपट रहे हैं, नन्दी उनसे पीपल को बचा रहा है। प्लक्ष के पेड़ की रक्षा हेतु भी नन्दी असुरों से सतर्क अवस्था मे खड़ा है। कुछ मुद्राओं मे नागराज भी वृक्षों की सुरक्षा के लिए अपना फन उठाये हुए हैं।

ऐसी भी बहुत सी मुद्रायें हैं, जिनमें प्लक्ष व पीपल के वृक्ष की रक्षा हेतु रेलिंग बनी हुई हैं। कुछ वृक्षों के चारों तरफ चबूतरा बना है। कुछ मुद्राओं में वृक्ष अकेला है, वृक्ष की पूजा करती बहुत सी मुद्रायें हैं। इन्हे देखकर ऐसा लगता है कि वृक्ष की पूजा पुरातन काल से ही होती आई है। इसी कारण इसे यहां की पूजा ने पूर्णरूपेण धारण कर लिया है।

इस काल में पेड़ों के चारों तरफ बने ताने–बाने को जब हम समझने की कोशिश करते हैं तो समझ में आता है कि उस समय के लोगों का पूरा जीवन प्रकृतिमय था। लोगों को यह ज्ञान तो था ही कि पेड़ प्राणरक्षक हैं, ज्ञानदाता हैं, लेकिन उस समय उनके सहज जीवन के लिए सुखदाता भी था। खान–पान की आवश्यकता पूर्ति भी पेड़ों से होती थी तथा लोगों के रहन–सहन के लिए घर भी पेड़ों के खोल ही थे। अतः उस काल का मानव यह मान चुका था कि पेड़ों के बिना जीवन सम्भव नहीं है। यह बात देवताओं के मन में पूर्णरूपेण घर कर गई थी। यदि हमनें जीवित पेड़ों को हानि पहुँचाई तो पेड़ हमारी हानि कर सकता है। इसलिए सिन्धुघाटी की सभ्यता का पेड़ों के चारों तरफ ही ताना–बाना बन गया था। सिन्धुघाटी सभ्यता का वह अंतिम दौर रहा होगा

जब पक्के मकान, नालियां तथा धातु की मुद्रायें बनी होंगी लेकिन उन मुद्राओं पर अंकित मूर्तियां उनके अतीत के जीवन व्यवहार का प्रकटीकरण अवश्य करती रहीं।

सिन्धु घाटी की सभ्यता के बाद वैदिक सभ्यता का उद्‌भव हुआ। इस काल का बहुत ही विस्तार से वर्णन मिलता है। यह गंगा की घाटी में पनपी थी। यह सभ्यता मूलतः ऋषि–मुनियों की देन थी जो घने जंगलों में रहते थे। इस काल में केवल उपयोग हेतु प्राकृतिक वस्तुओं को तैयार उनका विनियोग आरम्भ हो गया था। यह भारतीय सभ्यता प्रकृतिमय रही थी, लेकिन धीरे–धीरे इसमें बर्बरता आने लगी थी। यह कैसे हुआ, यह समझना मुश्किल है, लेकिन रीति विधान की सहायता से कुछ समझा जा सकता है। फिर भी इसकी प्रगति तथा कारणानुबन्ध की दृष्टि से इसे समझने की बहुत आवश्यकता है।

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह

पृथ्वी पर स्थित समस्त नदियों और जल धाराओं की अविरलता के लिए प्रयासरत जलपुरूष राजेन्द्र सिंह यू.एस.ए. सहित सभी देशों में अविरलता की अलख जगाते हुए दुनिया भर में जन-जाग्रति पैदा कर रहे हैं।

अविरल गंगा यात्रा

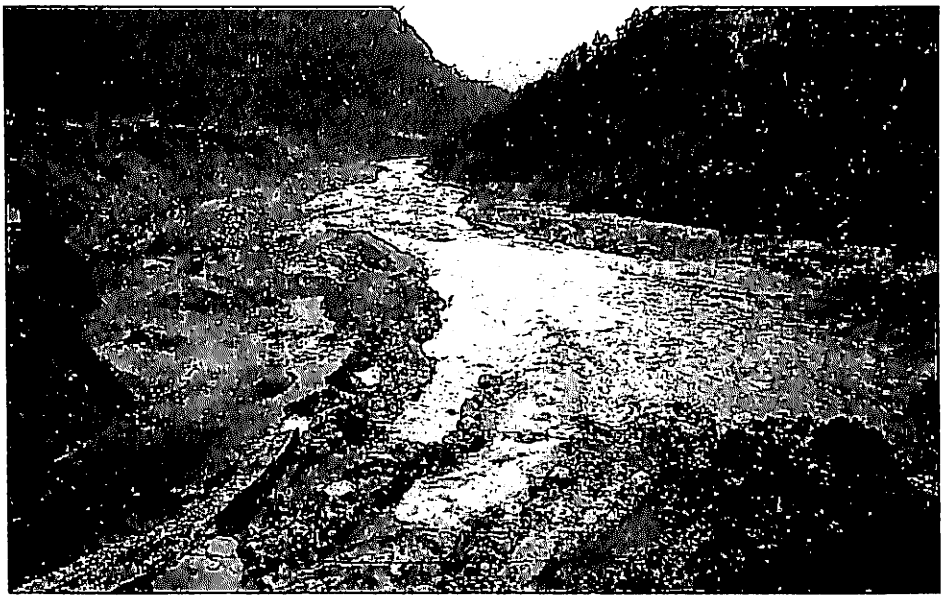

12 जनवरी को गंगासागर में गंगा श्वेत पत्र के प्रारूप पर चर्चा की। उसमें प्रकट शब्द पूरे देश–दुनिया को गंगा सत्य बताने हेतु एवं गंगा को अविरलता प्रदान कराने के लिए देश के सभी राज्यों की राजधानी, शहरों व गाँवों में लोगों को गंगा अविरलता प्रदान करने वाली शक्ति सर्जन हेतु जलपुरुष ने यात्रा आरम्भ की थी। बंगाल की राजधानी में साधु–सन्तों, पत्रकारों, राजनेताओं को सम्बोधित करके राजस्थान के भीकमपुरा गाँव में तरुण भारत संघ के मुख्यालय पर देशभर के गंगा प्रेमियों को गंगा अविरलता हेतु 'गंगा जुड़ाव सम्मेलन' किया। इसमें 15 जनवरी को तुषार गांधी और इनके पिता अरुण गांधी भी शामिल हुए। देशभर के सभी राज्यों से 200 से अधिक जल–योद्धा तथा नदी–योद्धा शामिल हुए। सभी ने गंगा माई के बिगड़ते स्वास्थ्य की चिंता की तथा स्वास्थ्य सुधार हेतु अविरलता जरूरी है, इस पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया। साथ ही साथ सभी मिलकर गंगा जी के लिए काम करेंगे। सभी ने गंगा अविरल चेतना जगाने का संकल्प लिया। राज्यों वार जिम्मेदारी लेकर अपने अपने क्षेत्रों में प्रस्थान किया। अविरल गंगा केवल गंगा जी के दैहिक (शारीरिक राज्यों) तक ही सीमित नहीं रहेगी। पूरे देश व दुनिया में अविरलता के बिना निर्मलता सम्भव नहीं है, यह सच बताने का काम करेगी।

राजस्थान से महाराष्ट्र, बिहार तथा दिल्ली में अनेक स्थानों से होते हुए यह यात्रा चली। जहाँ गंगा की अविरलता हेतु लोगों में तैयारी दिखी यह यात्रा

वहीं गई। पहले दौर में गंगा अविरलता संरक्षण हेतु नेतृत्व निर्माण शिविर आयोजित हुए। इसके बाद दूसरे दौर में कार्यकर्ताओं को प्रदर्शित करने हेतु प्रतिबद्धता–समर्पण के लिए महाराष्ट्र में अग्रणी नदी व महाकाली नदी की यात्रा की। कर्नाटक में ईचन हल्ला तथा हेमावती आदि नदियों की यात्रा की। कावेरी, कृष्णा, नर्मदा व गोदावरी आदि बड़ी नदियों के हालात पर चर्चा शुरू कर के मूल गंगा पर आते रहे। गंगा की सेहत सभी नदियों की सेहत सुधार के लिए जरूरी है। अविरलता गंगा यात्रा में इन मानवीय और नदी रिश्तों को समझाने का अवसर गहराई से चर्चा में आया। लोगों का मन–मस्तिष्क–आत्मा नदियों के साथ जुड़े, ऐसा भरसक प्रयास किया गया। अरुणाचल, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, सिक्किम व आसाम आदि उत्तर पूर्वी राज्यों की छोटी नदियाँ और ब्रह्मपुत्र नदी की समस्याओं पर भी गहन चिंतन–मनन हुआ। तमिलनाडु की ताम्रवर्णी से लेकर कृष्णा, कावेरी आदि नदियों की यात्रा तथा आरवीओ नदी घाटी संगठन निर्माण की लम्बी बातचीत हुई। केरल की 44 नदियों पर केरल नदी संरक्षण कार्यकर्ताओं से बातचीत करके इन्हें भी पुनर्जीवित करने का कार्यक्रम बना। इस प्रकार पदयात्रा उत्तर–दक्षिण–पूर्व–पश्चिम के सभी राज्यों में गई। सभी राज्यों की नदियों को गंगा के साथ जोड़कर चर्चा की। सभी को गंगा कहना–सुनना बहुत भाया। इन्हें अच्छा लगा।

'अविरल गंगा यात्रा' गंगासागर से 12 जनवरी को चलकर पश्चिम बंगाल के कार्यक्रम करके तरुण भारत संघ राजस्थान में देशभर के कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं जिम्मेदारियाँ दे कर 19 जनवरी को पूर्वी भारत के उड़ीसा भुवनेश्वर पहुँची। यहाँ के मुख्यमन्त्री एवं कार्यकर्ताओं के साथ उड़ीसा की नदी पुनर्जीवित नीति प्रारूप देकर आदिवासी क्षेत्र झारसुगुड़ा में किसान सम्मेलन करके 20 जनवरी को तेलंगाना राज्यपाल एवं सांसदों से नदियों व जल संरक्षण के लिए नदी साक्षरता आरम्भ कराने की बातचीत की।

21 जनवरी को महाराष्ट्र के अमरावती में महाराष्ट्र की शिक्षा में जल संरक्षण को कैसे शामिल करें, इस पर अधिकारियों व नेताओं से बातचीत हुई। यहाँ बड़ा सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें सर्वसम्मति से जल साक्षरता द्वारा महाराष्ट्र को अकाल मुक्त बनाने की लम्बी बातचीत व कार्य योजना पर चर्चा हुई। 22 जनवरी को मोदी विश्वविद्यालय राजगढ़ में मोदी परिवार की उपस्थिति में बहुत अच्छी वार्ता रही। यह महिला विश्वविद्यालय है। इसमें नीर–नारी–नदी की बातचीत करना अच्छा लगा। सभी ने पसन्द किया। 23 को खगड़िया में किसान सम्मेलन को सम्बोधित किया। यहाँ भारत भर के आए किसान कार्यकर्ताओं से तथ्यात्मक संवाद किया गया। 24 को दहिसर मुम्बई में पुराने कॉलेज में शिक्षकों व विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। उन्हें नदी की यात्रा करने हेतु प्रेरित करके मुम्बई से हुबली से होल कोटी के एक्शन हल्ला होते

हुए दक्षिण के कुम्भ सिद्धेश्वर पहुँचे। यहाँ रात्रि में किसानों को नदी–खेती–वर्षा आदि सम्बोधित करके रायचूर पहुँचा। यहाँ से हैदराबाद में गंगा की अविरलता पर भाषण देकर रायपुर में बातचीत करके रात्रि में सम्बलपुर अशोक प्रधान के घर पर उड़ीसा कार्यकर्ताओं को नदी संकट किसानी–पानी के संकट पर बातचीत की। नदी कार्यकर्ता सुरेश त्रिपाठी ने झारसुगुड़ा के दस हजार से अधिक किसानों के सम्मेलन को सम्बोधित किया। यहाँ किसानी–पानी–जवानी की अच्छी बातचीत करके महाराष्ट्र हेतु प्रस्थान किया। यहाँ नासिक के किसान मेले में किसानों को सम्बोधित करने के बाद राहोरी होते हुए अहमदनगर पहुँचे। यहाँ से प्रकाश राव के साथ पुणे से हैदराबाद गया। सभी जगह लोगों से गंगा जी की बातचीत की।

कर्नाटक, तेलंगाना महाराष्ट्र सभी दुष्काल जैसी भयानक परिस्थिति झेल रहे हैं। इनसे निपटने की सरकारी तैयारी तो नहीं दिखाई दी, लेकिन मुझे बुलाकर सुनने की इच्छा तो सभी जगह दिखाई दी। प्रकाश राव ने हैदराबाद के अपने राज्य की बाल्मतारी सरकारी पानी–मिट्टी के प्रशिक्षण संस्थान में नदियों की साक्षरता पर अच्छा लम्बा संवाद किया। यहाँ इन्होंने कृष्णा, गोदावरी, कावेरी नदी का पुनर्जीवित कार्य सामने रखा। मैंने कहा कि आपको प्रकृति के स्थान पर पुनर्जीवन के लिए नदी, नीर और नारी के सम्मान को बढ़ाना होगा। यही इस युग (21वीं सदी) में आशा की किरण व बीज बन सकते हैं। अब सभी तरफ निराशा है, इसे आशा में बदलने की जरूरत है। हम सभी अपनी–अपनी नदियों के पुनर्जीवन के कामों में जुड़ेंगे, तभी हमारे भविष्य में शुभ होगा। अब लालची लाभ को भूलकर शुभ की ही चिंता करनी जरूरी है। लालच ही गंगा का हत्यारा है। राजनेताओं को गंगा जी से वोट का लालच है। वह चुनाव से पहले कुछ भी बोलते हैं। चुनाव जीतकर गंगा जी को भूल जाते हैं। गंगा को पुनर्जीवित करके अविरलता प्रदान करने हेतु अब इस गोरखधन्धे को रोकना चाहिए।

आई.आई.टी. चेन्नई में जल के निजीकरण के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करने वाली जलयोद्धा पर एक लम्बी पुस्तक का विमोचन किया। दक्षिण के लिए गंगा क्यों जरूरी है? यह भारत की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक नदी है, केवल इसीलिए नहीं, बल्कि भारत के पेयजल की गुणवत्ता का मापक भी गंगाजल ही बनना चाहिए। यह तभी सम्भव होगा, जब विशिष्ट गुणवाला गंगाजल हमारे पास बचेगा। वह नहीं बचेगा तो हमारे पास जल की भारतीय गुणवत्ता का आधार भी सुनिश्चित नहीं होगा। शुद्ध जल की गुणवत्ता का मापक तो गंगा जल ही है। महान् वैज्ञानिक प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल ने इस बात को कहा है। वे आई.आई.टी. कानपुर तथा केंद्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड के अध्यक्ष के बतौर, इस बात को बोल चुके हैं। इसलिए अब गंगा माँ को पूरे भारत के लोग स्वस्थ

रखेंगे, तभी हम सभी स्वस्थ रहेंगे। मेरे इस भाषण का आई.आई.टी. मद्रास में बहुत स्वागत हुआ। इस भाषण के बाद प्रयागराज में आयोजित अर्धकुम्भ हेतु प्रस्थान किया।

29 को प्रयाग के साथियों से बातचीत करके 30 को धर्म संसद कुम्भ में गंगा अविरलता पर भाषण दिया। स्वामी स्वरूपानंद जी शंकराचार्य के पास जाकर उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया। स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द जी का उत्साह जनक साथ मिला। 30 को स्वामी शिवानंद सरस्वती जी के आश्रम में आत्मबोधानन्द ब्रह्मचारी जी के गंगा सत्याग्रह को समर्थन दिया। किसानों के संगठन स्वामी अमोक्षानन्द जी से मिले। उनसे गंगा अविरलता आन्दोलन में साथ लेने की प्रतिबद्धता प्राप्त की। पूरे दिन प्रयाग में व्यस्तता बनी रही।

31 जनवरी को गंगा जी की छोटी नदियों को पुनर्जीवित करने की बातचीत की। जल बिरादरी के पण्डाल में जाकर सम्मेलन को सम्बोधित करके शिवानन्द जी के आश्रम में अविमुक्तेश्वरानन्द जी को बुलाकर अच्छा सम्मेलन आयोजित किया। आत्मबोधानन्द जी को समर्थन दिया। मीडिया को गंगा सत्याग्रह के सवाल उठाने पर जोर दिया। अपने साथियों को कहा कि वे अन्य क्षेत्रों में जाकर आत्मबोधानन्द जी के लिए उपवास कर के गंगा जी की तपस्या को समर्थन प्राप्त करें। उन्हें बैनर लगाने के लिए भी कहा। जल बिरादरी के साथियों ने आत्मबोधानन्द जी की तपस्या के बैनर भी लगाए। आत्मबोधानन्द की गंगा तपस्या प्रयागराज कुम्भ में चर्चा का मुद्दा बनी, लेकिन राजनेताओं ने ध्यान नहीं दिया। किसी ने भी आकर बात नहीं की। सत्याग्रह जारी ही रहा। स्वामी जी कृत संकल्प हैं। वे गंगा जी की अविरलता व निर्मलता का काम करना चाहते हैं। उन्होंने खनन को रुकवाने का भी तय किया है। संकल्प के साथ सत्याग्रह चालू ही रहा। अविरलता यात्रा यहाँ से बुन्देलखण्ड व राजस्थान के लिए निकली। राजेंद्र सिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंन्दू कॉलेज में समझाया कि नदी, नीर, नारी और पंचमहाभूत (भगवान) की समझ व सम्मान कम होने से ही जलवायु परिवर्तन का बुरा असर होने लगा है। हमारा प्रकृति–प्रेम पुरुष प्रधान वाला बन गया है, जबकि हमारा भगवद् प्रेम तो प्रकृति और नीर, नारी और नदी के गुणों की प्रधानता वाला था। पुरुषत्व में अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण होता है, नारीत्व में पोषण–प्रेम–सम्मान और संवर्धन होता है। यही प्रकृति का पुनर्जीवन करता है। विकास में लाभ और लालच है जो पुरुषत्व स्वभाव वाला है। प्रकृति पुनर्जीवन में पोषण और प्रेम है, जो नारीत्व का गुण है। अतः हमें अभी इसी की जरूरत है।

यहाँ पूरा हॉल देश के शिक्षाविदों व उद्योगपतियों से भरा था। सभी ने गंगा अविरलता के काम में सर्वसम्मति से सहयोग करने का वचन दिया। यहाँ से इनका वचन सुनकर मैंने अपनी यात्रा खगड़िया बिहार के लिए शुरू कर

दी। दिल्ली, पटना से प्रातः कार से खगड़िया पहुँच गया। यहाँ किसानों के सम्मेलन को सम्बोधित करके गंगा प्रवाह हेतु आन्दोलन करने को कहा। इन्होंने वचन दिया और आन्दोलन की तैयारी की। इनकी जिम्मेदारी देवेन्द्र सिंह ने ले ली। दशरथ सिंह ने जल्दी ही देशभर में चल रहे किसानों के संगठनों को बुला कर आगे की रणनीति बनाना तय किया। यहाँ से 24 फरवरी को वर्दे कॉलेज में बड़ा सम्मेलन सम्बोधित करके नदी साक्षरता जुम्बिश चलाने का आह्वान किया। यहाँ से हुबली कर्नाटक पहुँचा। यहाँ कृष्णा नदी से सम्बन्धित 06 राज्यों के साथियों की नदी से अविरल गंगा यात्रा ने देश दुनिया में गंगा चेतना से संवेदनशील बनाने का काम किया है। फ्रांस, ब्रसेल्स, नीदरलैंड व बेल्जियम आदि देशों में गंगा मित्रों को ढूँढ़ा। उनके साथ बातचीत करके उन्हें संवेदनशील बनाया। गंगा हेतु 2007 से चल रहे 'गंगा आन्दोलन' का विवरण बताया। गंगा जी के लिए 5 सन्तों ने प्राणों का बलिदान दिया। स्वामी निगमानन्द जी, स्वामी नागनाथ जी, स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द जी (प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल) ने गंगा सत्याग्रह करके अपने प्राणों का बलिदान दिया। स्वामी परिपूर्णानन्द जी, गोकुलदास जी व गोपालदास जी का अपहरण करके उनके प्राण लिए। ब्रह्मचारी आत्मबोधानन्द जी के आमरण अनशन के 160 दिन पूरे हो चुके हैं। पाँच व्यक्तियों ने गंगा पर नए बाँध रुकवाने हेतु अपने प्राणों की बाजी लगाकर सन्देश दिया कि गंगा का अविरल होना क्यों जरूरी है? अन्य भी सभी यह बात समझाने और गंगा चेतना जगाने की कोशिश में लगे हैं। यह सूची सतत् बढ़ती जा रही है। ये सब अहिंसामय तरीके से गंगा जी के संघर्षशील कामों में जुटे हैं। वैसे तो यह संख्या सैकड़ों, हजारों, लाखों और करोड़ों में है। जिन सभी को अभी हम नहीं जानते हैं, लेकिन वे भी गंगाजी के लिए अवसर आने पर लड़ेंगे। यह लड़ाई अब केवल भारत में ही नहीं है, यह अब पूरी दुनिया में विस्तार पा चुकी है।

बड़े बाँध बनाने वाली कम्पनियाँ ही अविरलता में बाधक हैं। इन्होंने पूरी दुनिया की नदियों की हत्या कर दी है। दुनिया की दूसरी नदियों के जल में गंगा अमृत (बायोफाज) नहीं है। मरते समय हर हिन्दू गंगा जल की दो–बून्द अपने कण्ठ में डालना चाहता है। ऐसी आस्था और भक्ति वाली नदी, दुनिया में दूसरी नहीं है। गंगा पर बनने वाले बाँध बायोफाज को सिल्ट के रूप में नीचे जल से अलग करके बैठा देता है, जिससे गंगा जल का मूल गुण समाप्त हो जाता है। यह विज्ञान प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल (स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द जी) ने पूरी दुनिया के सामने रखा था। यह सत्य अब चन्द लोगों को समझ आ गया है। ये चन्द लोग ही अब गंगा जी की अविरलता हेतु लड़ रहे हैं। वर्तमान सरकार और नई आने वाली कोई भी सरकार अब गंगा जी की अविरलता के लिए देश की जनता की अनसुनी व अनदेखी नहीं कर सकती। अनदेखी

करने वालों को जनता देखेगी। अब चुनाव के समय जनता भी उनकी अनदेखी करेगी। इस बार के 2019 के लोक सभा चुनाव में गंगा की अनदेखी करने वालों की जनता द्वारा अनदेखी करने हेतु तैयार करेंगे। पक्ष–विपक्ष का सवाल नहीं है, अनदेखी मुख्य सवाल है। अभी तक अनदेखी सरकार ने की है, अब चुनाव में समाज भी ऐसों की अनदेखी करेगा।

2 फरवरी को मुम्बई में रोटरी इण्टरनेशनल सम्मेलन में गंगा अविरलता के लिए वक्तव्य दिया। जलवायु परिवर्तन के इस शताब्दी में होने वाले दुष्प्रभाव से बचने हेतु जल संरक्षण करना होगा। रोटरी ने पोलियो अभियान में जिस तरह भागीदारी निभाई थी, अब जल साक्षरता अभियान चलाना जरूरी है। रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष और गवर्नर ने इसे स्वीकार किया। अब भविष्य में रोटरी का लक्ष्य दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध से बचाने के लिए अपनी सक्रियता बढ़ानी चाहिए। मेरे प्रस्तावों पर अध्यक्ष ने बहुत ही सकारात्मक संकेत दिया।

3 फरवरी को जयपुर से भीकमपुरा व करौली गया। वहाँ फिलिप और मिनी जैन को विश्व जल साक्षरता के काम बढ़ाने की दिशा दी। साथ ही इस संगठन को गंगा अविरलता के काम में जुड़ने हेतु प्रेरित किया। मिनी और फिलिप दोनों ने गंगा कार्य में जुड़कर काम करने का संकल्प लिया। इन्होंने देश के बाहर लोगों को गंगा से जोड़ने की बात कही। वे अब गंगा अविरलता क्यों जरूरी है? यह भली प्रकार समझ गये थे। मिनी अभी तक जानती थी कि बाँध विद्युत व अन्न का उत्पादन करते हैं, उनका विरोध नहीं होना चाहिए; लेकिन आज समझ में आया कि गंगा एक विशिष्ट जल वाली नदी है। इसके जल में मानव स्वास्थ्य रक्षण में आरोग्य बनाए रखने वाले विशिष्ट गुणों (बायोफाज) को बनाये रखने का काम अविरलता ही करती है। यह गुण गंगा जी को हिमालय प्रदान करता है। हिमालय की वनस्पति व खनिज गंगाजल को मानव स्वास्थ्य रक्षण में सहायक बनाते हैं। यह मामूली शक्ति नहीं, दुनिया में सबसे विशिष्ट और अलग है। इस गुण को बचाना पूरी दुनिया और भारतवासियों का कर्तव्य बनता है। मिनी जैन ने कहा कि मैं फिलिप के साथ मिलकर गंगा जी हेतु अपना कर्तव्य पूरा करूँगी। मैंने कहा गंगा जी को हिमालय की सिल्ट ही विशिष्ट बनाती है। इसे गंगा जल में प्रकृति स्वरूप में बनाए रखना तथा मैदानी क्षेत्रों की सिल्ट इस जल के साथ अधिक नहीं जाने वाली व्यवस्था बनाने की आवश्यकता है। मिनी ने कहा मैं चम्बल बेसिन की नदी 'तेवर' में तरुण भारत संघ के साथ कुछ तो करूँगी। हम विश्व जल स्कूल में गंगा जी के बारे पढ़ाएँगे।

4 फरवरी को अन्ना हजारे से मिले। उन्हें कहा किसानों की माँग को किसान संगठन अच्छी प्रकार उठाएँगे। हम उन्हें केवल मदद करें। आप जैसी नैतिक शक्ति को पवित्रता बचाने में जुड़ना चाहिए। यह कार्य गंगा अविरलता बचाने का है। उन्होंने अविरलता की मांग पर हस्ताक्षर किए। गंगा आन्दोलन

में जुड़ने का संकल्प सुनाया। कहा– मैं गंगा जी को अविरल बनाने के काम में जुड़कर इसे मद्द करूँगा।

शाम को महाराष्ट्र के जल–नायकों, जल–योद्धाओं, जल–प्रेमियों, जल–दूतों, जल–सेवकों व जल–कर्मियों के सम्मेलन अंबेजोगाई में जाकर उन्हें गंगा अविरलता के बारे में बताया। उन्हें समझाया कि गंगा अविरलता का सवाल महाराष्ट्र की नदियों से क्या रिश्ता रखता है? गंगा की अविरलता–निर्मलता हम कर पाये तो महाराष्ट्र की नदियों के पुनर्जीवन की नीति बनवा सकेंगे। हमें यह काम पुरजोर कोशिश से करना होगा। भारत की राष्ट्रीय नदी गंगा जी के लिए जो कुछ होगा, वह सभी नदियों पर ध्यान आकर्षित करेगा। आज अपनी नदियों को भी हम गंगा जी मान कर ही काम करें। गंगा जी में विलक्षण प्रदूषण नाशिनी शक्ति है। मरते समय भी हम अपने कण्ठ में दो–बूँद गंगाजल की ही डालना चाहते हैं, अन्य नदियों की नहीं। वह गुण और व्यवस्था तो गंगा जी में ही है। वहीं से हम अपनी नदी को गंगा मानकर काम करेंगे तो हमें कोई रोक नहीं पाएगा। राज–समाज–सन्त सभी गंगा जी से जुड़ेंगे। आज गंगा जी से जुड़ने की जरूरत है। यह कार्य अंबेजोगाई का मानव लोक संस्थान में स्वर्गीय श्री दुर्गादास लोहिया स्मृति में करें। इस काम का नेतृत्व अनिकेत लोहिया करें। सभी ने सकारात्मक बातें रखीं और देर रात तक कार्यक्रम तय हुआ। साथ ही नरेंद्र चुघ ने महाराष्ट्र को दुष्काल मुक्त बनाये रखने का प्रस्ताव रखा। मैंने जल साक्षरता चेतना यात्रा करने की बात समझाई। इससे सभी सहमत हुए।

5 को प्रातः सुभाष चंद्र बोस विद्यालय में जाकर दुष्काल मुक्त जल साक्षरता कैसे करें? किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? क्या बोलना और क्या नहीं बोलना अच्छा होगा ? इसका एक व्यावहारिक प्रयोग करके दिखाया। इससे दुष्काल मुक्ति यात्रा का शुभारम्भ मान लिया गया है। आज 3 कॉलेजों में जाकर भी यह यात्रा शुरू करने की बात हुई। सभी में गंगाजल के विशिष्ट गुणों का वैज्ञानिक पक्ष भी समझाया।

महाराष्ट्र जल बिरादरी ने गंगा जी को अविरलता प्रदान कराने के लिए अपने को लामबंद करने की बात कही। नरेंद्र चुघ ने अपनी दुष्काल मुक्ति यात्रा में भी गंगा जी की अविरलता–निर्मलता के लिए चल रहे आन्दोलन और स्वामी सानन्द जी के बलिदान को उजागर करने, स्वामी गोपाल दास जी के अपहारण और आत्मबोधानन्द जी की तपस्या से प्रेरित करने की बातें सभी सभाओं में रखने का अपना संकल्प बताया।

6 फरवरी को राजेंद्र पण्डित के साथ कोपर गाँव पहुँचा। रास्ते में औरंगाबाद का भी कुछ काम देखा। कोपर गाँव के के.जे. सौम्या कॉलेज गोदावरी गंगा जी के तट पर पहुँचे। यहाँ 2 वर्ष पूर्व मैंने वृक्षारोपण किया था उसे देखा। इस वर्ष रोपण में गाद्धो की वारी पर एक फिल्म बनी है। इसमें भी

गंगा जी की दुर्दशा पर विचार रखें। विद्यार्थियों को गंगा जी की अविरलता का आह्वान किया। सभी ने अपना सकारात्मक रुख रखते हुए अविरल गंगा चेतना यात्रा में जुड़ने की बात कही। यहाँ से शिर्डी में प्रेसवार्ता और जिलाधिकारियों के साथ बात करके सीधे जयपुर में गिरधारी बाफना के घर पहुँचा। वहाँ अशोक गहलोत एवं भाई जी डॉ0 एस.एन. सुब्बाराव जी से मिलकर उनके जन्मदिन पर उन्हें बधाई देकर गंगा जी की बात में युवाओं को जोड़ने का निवेदन किया। आज यहाँ पी.वी. राजगोपाल, जिला हर्रिष रामजी भाई आदि की उपस्थिति में गंगा जी का सवाल उठाया। इनसे कहा सर्वोदय आदोलन को अब गांधीजी की चाह के अनुरूप–नदियों में, खासकर गंगा जी में अवैध निर्माण के विरोध में अभियान चलाना चाहिए। पी.वी. राजगोपाल जी ने सकारात्मक सुझाव दिए। अब गंगा में मोदी जी का झूठ सबके सामने लाना जरूरी है, नहीं तो नरेंद्र मोदी प्रधानमन्त्री बनकर देश को तोड़ कर तबाह करेगा। भाई जी की कामना अब गंगा जी की सद्भावना में शामिल हो। हम सभी इस काम में जुटें।

7 फरवरी को राजस्थान सरकार ने भाई जी का जन्मदिन मनाया। उसमें भी मैंने गंगा जी की बात रखकर कहा "लोकसभा चुनाव 2019 में गंगा के साथ मोदी जी के धोखे की बात स्पष्ट करना तथा स्वामी सानन्द जी की हत्या का इस सरकार से बदला लेना जरूरी है। स्वामी सानन्द जी कह कर गए हैं, मोदी जी ने गंगा जी को धोखा दिया है। मैं राम जी के पास जाकर उन्हें दण्डित कराऊँगा। इनका वचन सच होगा। मोदी जी दण्डित होंगे ही। हमें गंगा जी के साथ खड़े होकर पुण्य कमाना चाहिए। मेरे इस प्रस्ताव पर गहलोत जी नहीं बोले। मैंने इन्हें गंगा श्वेत पत्र भेंट कर दिया। गिरधारी बाफना एवं मधुसूदन मिस्त्री ने अपनी बात में गंगा का उल्लेख जरूर किया। इन्हें भी गंगा श्वेत पत्र की प्रति भेंट कर दी।

8 फरवरी को टी.के. मिश्रा के बुलावे पर कोरापुर उड़ीसा पहुँचा। यहाँ पूर्व के 5 राज्यों के किसान नेता एवं कृषि वैज्ञानिक मौजूद रहे। इन्हें नदी और खेती का रिश्ता समझाया। हमने गंगा बेसिन की 9 नदियाँ कैसे पुनर्जीवित की हैं? वह सब दिखाया तथा बताया है। आज गंगा जी की अविरलता हेतु एक देशव्यापी आन्दोलन शुरू करना तय किया। मिश्रा जी बड़े वैज्ञानिक हैं। उन्हें प्रो. जी.डी. अग्रवाल जैसे वैज्ञानिक के जाने का बहुत ही गहरा दुःख है। उन्होंने कहा इस देश को उनकी इच्छानुरूप काम सम्पन्न कराना चाहिए। वैज्ञानिकों–किसानों सभी को मिलकर उनके अधुरे कार्य पूर्ण कराने में जुटना अच्छा होगा।

09 फरवरी को पंजाब विश्वविद्यालय में सरस्वती पुनर्जीवन पर भाषण दिया। अविरलता से निर्मलता और सजीवता रहती है। जब नदी का प्रवाह कम होता है, तब मानव अपना लालच पूरा करने के लिए नदी जल का शोषण

करने में जुटा रहता है। तभी नदी मरती है। लालची लक्ष्मी हमारी सरस्वती को दबा देती है। वह धरती में अन्दर दब जाती है। लक्ष्मी हमारा लालच बढ़ाती रहती है। सरस्वती लालच के दुष्प्रभाव में दब जाती है। वही आज सरस्वती नदियों के हालात हैं। इन्हें स्वस्थ रखना है। अपना लालच कम करना है। अपना लालच आज भी सरस्वती को ठेकेदारों, इंजीनियरों को सौंप कर इसे पुनर्जीवित करने के नाम पर लाभ ही कमाना चहाते हैं। लाभ के लालच से ही सरस्वती मरी थी, शुभ की चाह से ही वह पुनर्जीवित होगी। आज भी सब इससे अपना लालची लाभ साधने में ही जुटे हैं। यदि व्यर्थ लाभ से बचेंगे और शुभ में लगेगें तो सरस्वती नदी पुनर्जीवित होकर फिर से बहने लगेगी। जैसे राजस्थान में हमारे समाज ने नदियों को पुनर्जीवित किया हैं, वैसे ही आप करेंगे, तभी सरस्वती नदी पुनर्जीवित होगी। भू–जल पुनर्भरण से जल स्तर ऊपर आएगा तो नदी बहने लगेगी। लालची लाभ भूजल का शोषण करके नदी को सुखाता और मारता है। आज हम वही गंगा जी के साथ कर रहे हैं। गंगा अविरल नहीं रहेगी तो सूख कर मर जाएगी। इसलिए पूरे देश में हमने 'गंगा अविरल चेतना यात्रा' शुरू की है। आज यह यात्रा पंजाब विश्वविद्यालय में नदी को अविरलता प्रदान करने का सन्देश देने आई है। अभी पहले गंगा जी को बचाओ फिर सरस्वती को पुनर्जीवित करना अच्छा होगा। खचाखच भरे हॉल में कुलपति ने अपने सभी को यही सकारात्मक रुख रखते हुए आह्वान किया कि हम जल्दी से जल्दी राजस्थान जाकर काम देखेंगे, फिर सरस्वती का काम शुरू करेंगे।

10 को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में गंगा श्वेत पत्र को जारी किया। इस पर लम्बी बातचीत करते हुए कहा चुनाव से पहले यह सभी राज्यों की राजधानी में जारी होना चाहिए। इसका मूल्य गंगा श्रद्धा है। जिसकी जितनी श्रद्धा उतना ही इसका मूल्य है। यह बहुत अद्‌भुत् दस्तावेज है। यह गंगा जी का सत्य प्रस्तुत करता है।

11 को जोधपुर में सम्मेलन करके गंगा श्वेत पत्र जारी किया। जल बिरादरी व जल भागीरथी के साथियों से मिलकर गंगा की अविरलता हेतु एवं जल नीतिकरण के विरुद्ध मिलकर आन्दोलन शुरू करना है।

बाड़मेर–जैसलमेर की धोरों में 12 फरवरी का पूरा दिन बिताया। रेगिस्तान में टाँको की भूमिका आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी पहले थी। यहाँ गंगा जी का पानी लाया जा रहा है। कायलाना झील को गंगाजल से भरा जाता है। अब गंगा जी की अविरलता पर विचार करने की जरूरत है। इसमें सभी जुटें। यही अविरल गंगा चेतना यात्रा का संदेश भारत सीमा के जिलों में दिया है।

13 फरवरी को चन्द्रपुर में जल साक्षरता यात्रा आरम्भ की। वित्तमन्त्री श्री सुधीर मुनमुनगुंटीवार जी भी इस यात्रा के शुभारम्भ अवसर पर आए।

उन्होंने जल साक्षरता द्वारा ही महाराष्ट्र को दुष्काल मुक्त बनाने की बात कही। चन्द्रभागा नदी भी गंगा जैसी पवित्र नदी है। उसे पुनर्जीवित करने की बात कही। अविरल गंगा चेतना यात्रा की तरफ से कहा "भारत की सभी नदियाँ गंगा हैं लेकिन हिमालय से निकलने वाली गंगा जी का जल विशिष्ट है। इसीलिए यह विशिष्ट नदी है। इसकी विशिष्टता बचाने हेतु अविरलता जरूरी है। अविरलता के बिना यह निर्मल नहीं रह सकती है। गंगा की निर्मलता के नाम पर 20 हजार करोड़ रुपये खर्च करना व्यर्थ हो रहा है। उसे रोककर अविलता का काम पहले किया जाए।" यहाँ से यात्रा शुरू हो कर सबसे पहले बाबा आमटे के आश्रम पहुँची। यहाँ डॉ0 विकास आमटे, उनकी पत्नी और पुत्र के साथ–साथ आश्रम कार्यकर्ताओं से मिलकर उन्हें अविरल गंगा चेतना यात्रा के विषय में बताया। डॉ विकास आमटे ने कहा भारत जोड़ो यात्रा शुरू करेंगे और अविरलता यात्रा की तरफ से मैंने कहा– जल, गंगाजल को बचाना भारत जोड़ने का अच्छा माध्यम है। उसी दिशा में आपकी यात्रा चलेगी तो राष्ट्र के लिए शुभ होगी। भारत प्रत्यक्ष रूप से जुड़ेगा डॉ0 विकास ने सहमति दिखाते कहा सभी के साथ मिलकर तय करेंगे।

14 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय नदी स्वास्थ्य सम्मेलन काशी में हुआ। यह सम्मेलन काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ था। इसका शुभारम्भ करते हुए मैंने कहा कि गंगा की अविरलता के लिए सर्वप्रथम पण्डित मदन मोहन मालवीय जी ने हरिद्वार में आवाज उठाई थी और निर्मलता की आवाज काशी में उठाई थी। वे हरिद्वार में गंगा जी को अविरलता प्रदान कराने में तो सफल हो गये, पर काशी में निर्मलता प्रदान कराने में सफल नहीं हुए। आज यह बात सिद्ध है। अविरलता के बिना गंगा जी स्वस्थ नहीं रह सकती। अतः अविरलता की बात पहले करें, फिर निर्मलता की बात करें। छोटी नदियों के स्वास्थ्य सुधार से गंगा जी के स्वास्थ्य में सुधार होगा।

आज नदियों पर अतिक्रमण – प्रदूषण व जल शोषण का संकट है, इसका समाधान गंगा जी था। नदी पुनर्जीवन की नीति है। आज सबसे पहले तय हो कि नदी की जमीन केवल नदी के लिए ही सुनिश्चित हो। नदी के स्वस्थ जल में शहर, उद्योग व गाँव का गन्दा जल नहीं मिलाएँ। गन्दा जल और नदी का स्वच्छ जल अलग–अलग रखना होगा। मानव व उद्योग नदी के जल को लेकर वापस नदी को नहीं दे। भले ही नदी सूखी रहे। गन्दा जल नदी में एक बार आने से ही नदी भी दूषित हो जाती है। फिर उसे ठीक करना सम्भव नहीं रहता। अतः नदी की भूमिका स्वास्थ्य ठीक रखना है। उसके जल प्रवाह को स्वस्थ और सफल रखना अत्यन्त जरूरी है। नदी की जमीन और पानी पर नदी का ही प्रथम अधिकार था। नदी पर जब हम शहर का उद्योग बैठाते हैं तो हम ही नदी को मैला ढोने वाली मालगाड़ी मानकर उसके साथ व्यवहार करते

हैं। अतः मानव के नदी व्यवहार ने नदी का स्वास्थ्य खराब किया है। पहले मानव व्यवहार में सुधार होगा, तभी नदी के स्वास्थ्य में सुधार करना सम्भव है।

आज नदी की स्वास्थ्य नीति 'नदी संरक्षण प्रबन्धन कानून' की जरूरत है। यह कार्य सबसे पहले गंगा जी के लिए किया जाए। फिर अन्य नदियों को तो वैसा ही व्यवहार करना ही पड़ेगा। भारत की नदियों का स्वास्थ्य सुधार नहीं हुआ तो पूरा भारत बीमार होगा। एक दिन हमारी स्थिति इतनी खराब होगी कि जब नदी जल से बीमारी बढ़ेगी तो एंटीबायोटिक भी काम करना बन्द कर देगी। सुपरबग हो सकता है। जैसे आज गंगा जी की बीमारी से गंगा जी के दोनों तरफ कैंसर के रोगी बढ़ गए हैं। वैसे ही आने वाले समय में माँ गंगा नदी की बीमारी से हम सभी बीमार नहीं हों। वेसी योजना बनाना होगी। कृष्णा और अस्सी दोनों की हालत बहुत खराब है। ये दोनों गंगा जी की बीमारी बढ़ा रही हैं। ऐसे ही कृष्णा, महाकाली, हिण्डन, यमुना जी को बीमार करती हैं। हमें समय रहते सभी नदियों पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। इस अन्तर्राष्ट्रीय नदी स्वास्थ्य सम्मेलन काशी को पण्डित मदन मोहन मालवीय जी के रास्ते पर चलना चाहिए। जैसे उन्होंने हरिद्वार में गंगा अविरलता की लड़ाई लड़कर जीती थी। वैसे ही इस सम्मेलन की घोषणा होनी चाहिए। यहाँ गंगा सद्भावना यात्रा में तैयार श्वेत पत्र भी जारी किया गया।

15 फरवरी को बैतूल में नदियों के पर्यावरणीय प्रवाह पर सम्मेलन को सम्बोधित किया। यहाँ के जिलाधीश को इस जिले के जल संकट व समाधान के रास्ते बताए। पूरे जिले के नेता, अधिकारी व मीडिया सभी मौजूद थे। सभी को सामुदायिक विकेन्द्रित जल संरक्षण सिखाया। जिले की छोटी नदियाँ ही बाढ़–सुखाड़ के कारण हैं। इन्हें ही सँभालने से बैतूल जिला पानीदार बनेगा। आज गंगा पर संकट है हम सब भारत के लोग इकट्ठा होकर गंगा जी को निर्मलता प्रदान कराने हेतु अविरल बनवाएँ। अब यही संकट नर्मदा जी पर भी है। इसे भी शुद्ध सदानीरा बनाने में जुटना पूरे भारत की प्राथमिकता बनना चाहिए। यहाँ के पत्रकार बबलू आदि ने इस में काफी उत्साह दिखाया। यहाँ के लोगों को तरुण भारत संघ में लाकर वैसा काम दिखा कर काम करने हेतु प्रेरित किया।

16 फरवरी को पुलिस एकेडमी हैदराबाद में आई.पी.एस. अधिकारियों को गंगा की अविरलता क्यों जरूरी है? पढ़ाया। इसमें भूटान, मालदीव, नेपाल व भारत के 180 अधिकारी थे। इन सब को समझाया कि मानव स्वास्थ्य और नदी स्वास्थ्य का रिश्ता क्या है? इनमें गंगा जी का स्वास्थ्य भारत के स्वास्थ्य के साथ क्या रिश्ता रखता है? अब नदियों के विवाद कैसे बढ़ रहे हैं? इन विवादों के समाधान में पुलिस अधिकारी की भूमिका क्या है? 2 घंटे की बातचीत में पुलिस अधिकारियों की भागीदारी और रुचि देखकर अच्छा लगा। पुलिस

अधिकारी भी नदी स्वास्थ्य से चिंतित हैं। ये भी भावी नदी संकट को समझना चाहते हैं। मुझे कई अधिकारियों ने गंगा अविरलता हेतु काम करने की तैयारी दिखाई।

मातृ सदन हरिद्वार में आत्मबोधानन्द जी के अनशन में समर्थन देने गया। वहाँ अब तक गंगा जी के लिए हुए शहीदों की स्मृति में बातचीत करी। गंगा श्वेत पत्र की प्रतियां दी। सुबोध नन्दन शर्मा भी मुझ से मिलने यहाँ आये। उन्हें साथ लेकर राजाजी नेशनल पार्क में बाढ़ से हुए विनाश को दिखाया। 2013–14 की बाढ़ से राजाजी नेशनल पार्क में भी गंगा जी की धाराओं से बड़ा विनाश हुआ था। वह अभी तक वैसा ही है। यह विनाश नदी में बीमारी डालने से हुआ था। अलकनन्दा, मन्दाकिनी की धाराओं पर बन रहे बाँधों के टनल से निकली बजरी को दोनों तरफ डालने से वह पानी के सामने आ गई। इससे नदी का तल ऊपर उठा। नदी तल ऊपर उठने से पहाड़ पर भी बाढ़ आ गई। इस बाढ़ के विनाश पर मैंने पहले ही एक पुस्तक लिखी थी। कुमारप्पा स्वराज संस्थान ने इसका संपादन किया था। उसमें आपको पूरे विनाश का दर्शन मिलेगा। रायवाला के बिहारी गाँव में मैं उस बाढ़ के समय भी गया था। आज भी यहाँ रात्रि निवास किया और राधा माँ आनन्दमयी कॉलेज स्कूल आदि में भाषण देकर देहरादून होकर पटना पहुँचा।

19 फरवरी को प्रातः पटना में पीवी राजगोपाल जी मिलने आए। उनके साथ जय जगत यात्रा में जल को मुख्य मुद्दा बनाने पर बातचीत हुई। इनका मन सत्य और अहिंसा को ही मुख्य मुद्दा रखने का है। मैंने कहा गंगा जी के साथ जो हिंसा हो रही है, उसे पकड़ कर हमें पूरी दुनिया की नदी और जल निजीकरण रोकने की चेतना जगाने से दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध से बचाने मैं सफलता मिलेगी। उसी से शांति कायम रख सकते हैं। जल जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। इसी सत्य को हम जीवन का व्यवहार बना सकते हैं। जीवन के साथ अहिंसात्मक व्यवहार ही हमारे जीवन की सुख–समृद्धि कायम रखने में सफल होगा। आओ अब अत्य और अहिंसा को हमारे जीवन का व्यावहारिक पक्ष बनाने वाली जय जगत यात्रा करें। लम्बी बातचीत के बाद गंगा श्वेत पत्र जारी किया। हमने अपने सम्मेलन हेतु प्रस्थान किया।

बिहार में जलवायु परिवर्तन की सबसे ज्यादा मार गरीब किसान पर पड़ रही है। आज किसान को बदलते वर्षाचक्र का कोई अंदाजा नहीं लग पाता है। उसकी शक्ति–श्रम सभी कुछ जल जुटाने पर खर्च हो जाती है। किसान का खर्च और कष्ट बढ़ता ही जा रहा है। पहले किसान अपने वर्षाचक्र का अन्दाजा 99ः ठीक से लगा लेता था। इसलिए वर्षाजल से बीज, बुआई करके अपना श्रम और खर्च सभी कुछ सुरक्षित करता था। आज नहीं कर पाता है। इस बिगड़ते मौसम और धरती को चढ़ते बुखार ने किसान की कमर तोड़ दी है।

अब किसान की हालत में सुधार करने से ही जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं अनुमूलन करना सम्भव है। यह कार्य बिहार में जल साक्षरता द्वारा करने से ही होगा। इस सम्मेलन में बिहार की स्वैच्छिक संस्थाएँ और विशेषज्ञ आए थे। रमेश कुमार सिंह ने इस का आयोजन किया था। रमेश कुमार सिंह महात्मा गांधी के विचारों से खेती वन औषधि आदि स्वावलम्बन और ग्राम स्वराज के कार्य कर रहे हैं। इन्होंने बिहार में जल साक्षरता का कार्य आगे बढ़ाने के साथ–साथ गंगा अविरलता की लड़ाई हेतु बिहार को आगे लाने का संकल्प लिया है।

20 फरवरी को आन्ध्रा के राजमंदरी पहुँचा। यहाँ गोदावरी नदी का समुद्र से संगम होता है। यहाँ के सम्मेलन और कॉलेजों में बहुत से भाषण दिन भर हुए। विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मैंने गंगा तथा दक्षिण की गंगा, गोदावरी की समानता और अन्तर से चर्चा शुरू की। मैंने कहा नदियों को अब हम कैसे ठीक कर सकते हैं? नदियों और मानवता के सम्बन्ध तथा नदियों के किनारे हुए मानव के विकास को आज हम कैसे समझ सकते हैं? इस पर बहुत विस्तार से लम्बा भाषण दिया। मैंने कहा जब हम नदियों को केवल सभ्यता का विकास मान लेते हैं, तो इनसे हम केवल शोषण–अतिक्रमण ही सीखते हैं। जब हम इन्हें सांस्कृतिक विकास का आधार मानते हैं तो इनसे नीर–नारी–नदी सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पुरुषत्व तो सभ्यता स्थापित करता ही है, लेकिन नारीत्व संस्कृति स्थापित करती है। इससे हम पोषण, सभ्यता – सादगी का व्यवहार करते हैं। सभ्यताएँ लालची विकास के प्रभाव के कारण अतिक्रमण, शोषण व प्रदूषण सिखाती हैं। भारत नदियों को माँ इसीलिए कहता था, क्योंकि नदी में नारीत्व पोषण तत्त्व है। आज हम नदी, नीर और नारी के रिश्ते को भूलते ही जा रहे हैं। पुरुषत्व प्रधान सभ्यता के दुष्परिणाम अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण का ही व्यवहार करने लगे हैं। अतः हमें नदी की संस्कृति को जीवित विरासत के रूप में अपनाना होगा; तभी हम और नदी के सत्याधारित अहिंसक रिश्ते कायम रख कर अपने जीवन में तथा नदी के जीवन में सुख शान्ति और उसका स्वास्थ्य कायम रख सकते हैं।

21 जनवरी को दिल्ली और यू.पी. के गाँवों में चला गया। 23 जनवरी तक हिण्डन, यमुना, गंगा के गाँवों में शोकाकुल होकर घूमता रहा। 24 जनवरी को भोपाल जाकर यहाँ गंगा अविरल चेतना यात्रा तैयारी सम्मेलन को सम्बोधित किया। बुन्देलखण्ड को सुखाड़ मुक्त बनाने हेतु जल साक्षरता यात्राएँ आरम्भ कराई। पत्रकारों से नई सरकार को नदी तथा जल साक्षरता हेतु क्या करना चाहिए? आदि बातचीत करके मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में जल साक्षरता यात्राओं के संचालन की जिम्मेदारी संजय सिंह को देकर पश्चिम उत्तर प्रदेश में प्रस्थान किया। यहाँ हिण्डन और यमुना के कार्यकर्ताओं से बातचीत करी।

26 जनवरी को प्रयागराज इलाहाबाद कुम्भ में शामिल हुआ। यहाँ पर भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारियों के साथ गंगा अविरलता की बातचीत करके गंगा पुनर्जीवन सचिव यू. सिंह जी के साथ व प्रधान सचिव यू.पी. सरकार मनोज सिंह जी से गंगा अविरलता की अच्छी बातचीत करके गंगा श्वेत पत्र की पुस्तक सभी को भेंट की। मन्त्री श्री के.जे. एल्फांसो उत्तर प्रदेश सरकार के 4 मन्त्रियों को भी गंगा श्वेत पत्र प्रदान किया। प्रेस के साथ बातचीत करके वापस दिल्ली विश्वविद्यालय एवं हरियाणा की मानव संरचना विश्वविद्यालय में विज्ञान एवं तकनीकी पर भाषण दिया। आज नदियों और नारियों के विज्ञान को जानने की जरूरत है। मेरा पूरा भाषण 'नदी, नीर और नारी' विज्ञान पर ही केंद्रित रहा। यहाँ से उत्तर प्रदेश के गाँवों की यात्रा पर निकला।

मार्च

1 मार्च को राजस्थान जयपुर पहुँचा। यहाँ पर लक्ष्मण, संग्राम, राजेश, पूजा व मीना आदि को गंगा कार्यों में हुई प्रगति के बारे में समझाया। राजस्थान में जल साक्षरता की जरूरत पर काम करने हेतु लक्ष्मण को तैयार किया। पूरे राज्य में एक यात्रा की जरूरत है, वह हमें करनी चाहिए। सर्वसम्मति से गंगा अविरलता की बात भी जल साक्षरता में जोड़ें। राजस्थान की जल साक्षरता 'नदी, नीर और नारी' केन्द्रित दूसरे राज्यों से अलग तरह की करनी होगी। इस विषय पर सर्वसम्मति बनी।

2 मार्च को पृथ्वीराज के दफ्तर में विश्व में तथा भारत में हो रहे जल निजीकरण के विरुद्ध एक नेटवर्क बनाने की जरूरत महसूस की गई। इस हेतु फ्रांस में एक जल मार्च करने की जरूरत है। इसके लिए 17 से 22 तक फ्रांस में बैठक की तैयारी करना भी तय हुआ।

3 मार्च को करौली में 'नदी, नीर और नारी प्रशिक्षण शिविर' आयोजित किया गया। इसमें 70 पुरुष–महिला देशभर से शामिल हुए। इसमें मैंने क्रान्ति परिवर्तन विकास और पुनर्जीवन पर बातचीत शुरू करके 'नदी–नीर–नारी' सम्बन्ध को समझाया। इस शिविर को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने हेतु कैडर निर्माण प्रक्रिया कह सकते हैं। उसमें अविरल गंगा चेतना यात्रा के सम्पर्क में आए युवाओं को बुलाया था। यह शिविर मासलपुर और भीकमपुरा में किया गया।। यहाँ दक्षिण भारत, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, पाण्डिचेरी के साथ–साथ उत्तर प्रदेश राज्य से भी लोग आए थे। इन सब ने मिलकर अपने मासलपुर–भीकमपुरा शिविर में जो घोषणा की, वह यहाँ दी जा रही हैं। यह घोषणा पत्र 2019 इन शिविरार्थियों ने ही अपने शिविर के अन्तमें लिखकर तैयार किया है। यह निम्नवत है–

भीकमपुरा – घोषणा पत्र 2019

हम भारत के लोग भारत को पानीदार समृद्ध बनाने हेतु संकल्प करते हैं। इस संकल्प को लेते हुऐ हम, तेलंगाना, कर्नाटक के सरकारी लोग तथा राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और दिल्ली आदि राज्यों के सामाजिक कार्यकर्ता व हम सब लोग संकल्प बद्ध होकर 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 08 मार्च 2019' को भीकमपुरा में नीर–नारी–नदी को सम्मान देकर क्रांति, परिवर्तन, स्थायी विकास द्वारा भारत में पुनर्जीवन प्रक्रिया चालएँगे।

परिवर्तन : आक्रोश सहन न होने के कारण जब कुछ लोग स्वयं में, तीव्रता से, आवश्यक बदलाव लाते हैं और समाज और राष्ट्र के लिए नये आदर्श बन जाते हैं; तब उनके अनुकरण में समाज में छोटे–छोटे परिवर्तन होते हैं। और जब व्यक्ति निसर्ग–मारक से निसर्ग–पूरक जीवन–शैली अपनाने का प्रयास करते हैं, तब वह उसका निजी–परिवर्तन का मार्ग बन जाता है। निजी–परिवर्तन से ही समाज और पर्यावरणीय परिस्थिति में 'बिगड़ी को बनाने वाला और बनाये रखने वाला' परिवर्तन बनता है।

विकास : परिवर्तन से हुए निर्माण को कई बार लोग रचना और विकास कहते हैं। जीवन की आवश्यकता के लिए समाज की जीवन–धारा में लाया गया जीवन–पूरक बदलाव जब संस्कार से समाज की संस्कृति बन जाये, तब वह मानव और प्रकृति के रिश्ते को परस्पर–पूरक और पोषक बनाये रखता है। आगे जाकर बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार दिशा–दृष्टि में भी विकास लाने की आवश्यताएँ जीवित रखता है। यह जीवन–पूरक बदलाव ही विकास है। विस्थापन आरम्भ करने वाला विकास ही विकृति पैदा करता है। यही विनाश का रास्ता बनाता है। विस्थापन, विकृति, विनाश मुक्त विकास, स्थायी विकास ही ज्ञान, हरियाली, मिट्टी, जल जंगल, परम्परा–संस्कृति का संरक्षण करने वाला ही सनातन, सदैव, नित्य, नूतन निर्माणकारी, विकास ही स्थायी विकास है। यही पुनर्जीवन है।

पुनर्जीवनः क्रान्ति, परिवर्तन और विकास के यशस्वी प्रयोग से जब आशा के बीज प्रेरित और प्रस्फूटित होते हैं, तभी समाज का प्रकृति पूरक कार्य व्यापक बनता है। मारक–जीवनशैली से विस्थापित और विनष्ट हुई प्राकृतिक धाराएँ, मानव–निष्ठा और मानव की श्रमनिष्ठा से संजीवनी पाकर, फिरसे प्रस्फूटित और स्वयं–प्रवाहित हो जाती है, तो पुनर्जीवन होता है। यही प्रक्रिया पंचमहाभूतों के संरक्षण से प्रारम्भ होती है। आज प्राकृतिक संकट से धरती को बुखार और मौसम का मिजाज बिगड़ा है। इसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। यह बिगाड़ विकास ने ही किया है। इसलिए 21वीं सदी में यह विनाशकारी विकास नहीं चाहिए। भारत को अब प्रकृति का पुनर्जीवन व पुनर्भरण चाहिए। इसकी शुरुआत जल से ही है। हम जल को समझेंगे, सहेजेंगे और समझाएंगे। हम

पूरे विश्व को जल–साक्षर बनाने का काम करेंगे। गन्दे जल को स्वच्छ जल में नहीं मिलने देंगे। वर्षा जल से धरती माता का पेट भर देंगे। हम हमेशा जल की स्वच्छता और पवित्रता के सिद्धान्तों का पालन करेंगे। हम संकल्प करते हैं कि इसका उपयोग पूरी प्रकृति व जीव–जगत के लिए नदी, नीर और नारी को सम्मान देकर ही करेंगे।

नीर : जीवन का शुभारम्भ ही नीर है, यह ब्रह्माण्ड, सृष्टि, प्रकृति, धरती और पंचमहाभूतों का विलय करने वाला इस सृष्टि का सबसे सशक्त महाभूत है।

नारी : नीर से निर्मित नया जन्म देने वाली माता, प्रकृति, धरती, नारी ही सबको जन्म देती है और सबका पोषण करती है – वही माँ और नारी है।

नदी : नीर से निर्मित नारी ने अपने जीवन को चलाने के साधन पैदा करने के लिए जो मुक्त प्रवाह निर्माण किया, और जो अविरलता, निर्मलता और स्वतन्त्रता से बहती है, वही नदी है।

क्रान्ति : जब परिस्थिति के भीतर उपस्थित आक्रोश को संवेदनशील मानव सहन नहीं कर पाता तो वह विचार क्रान्ति की ओर बढ़ता है – ताकि पर्यायी व्यवस्था बन सके या वर्तमान व्यवस्था में अन्तर–बाह्य उत्क्रान्ति शुरू हो जाये। यह वैचारिक क्रान्ति जब व्यवहार में आने लगती है, तो उस परिवर्तन को ही क्रान्ति कहते हैं।

7 मार्च को 9:09 काशीपुर में देशभर के प्रबन्धक व विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। हमने राजस्थान में गंगा बेसिन में जल प्रबन्धन करके, कैसे नदियों को पुनर्जीवित किया ? वह अनुभव यहाँ बाँटा। इसके बाद उनके सवालों के जवाब दिए। अन्त में अविरल गंगा चेतना यात्रा 22 मई से आरम्भ करने का निर्णय लिया। यहाँ के निदेशक, शिक्षकों व विद्यार्थियों से लम्बी बातचीत के बाद गंगा के पंच प्रयागों के विशिष्ट गुणों को समझाने हेतु यात्रा आयोजित करना तय हुआ। यहाँ से भीकमपुरा जाकर सरकारी अधिकारियों व कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के बाद उन्हें कार्य योजना निर्माण करना सिखाया।

9 मार्च को उत्तर पूर्व के राज्यों में प्रस्थान किया। यहाँ राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय एवं न्याय एकेडमी में भाषण दिया। वर्तमान कानूनी कमियों का आपबीता अनुभव बाँटा। इसके बाद जलवायु परिवर्तन की आधुनिक समस्याओं के समाधान में कानूनी व्यवस्था बदलने वाली नई विधि क्रान्ति की जरूरत पर चर्चा करते हुए कहा "विधि शिक्षण संस्थान वर्तमान विधि विधान से संतुष्ट है। इसलिए विधि क्रांति अब बहुत कठिन है। आज हमें पहले वर्तमान न्यायपालिका व विधि विधान की कमियों से अवगत होना होगा। जब इनसे हमारे मन मस्तिष्क में क्रोध बढ़ेगा, तब विधि क्रांति के बीज अपने आप बुनकर अंकुरित होंगे। तभी परिवर्तन का रास्ता हम पकड़ेंगे।

भारत में जलवायु परिवर्तन का वैश्विक कारण भी हो सकता है, लेकिन

हमें इसका समाधान भारतीय विधि विधान से ढूँढ़ना जरूरी है। मैंने राजस्थान के समाज में जलवायु परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव लाने हेतु ग्राम सभाओं में कैसे कानून कायदे बनाकर काम किया था ? कैसे 35 वर्षों के कार्यानुभव बाँटकर जलवायु परिवर्तन अनुकूलन शहरों से गाँव की तरफ पलायन और धरती को चढ़ते बुखार को कम करके मौसम का मिजाज कैसे ठीक किया। इस पर राजस्थान की स्लाइड दिखाकर न्यायाधीश, कुलपति, कुलसचिव, शिक्षक व विद्यार्थियों के सवाल – जवाब दिए। अन्त में गंगा की अविरलता और ब्रह्मपुत्र नदी पर बान्ध के अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण आदि की समानताओं पर चर्चा करते हुए बताया। आसाम की बाढ़ ब्रह्मपुत्र नदी से आती है। इसके प्रवाह की तीव्रता को कम करें। फ्लो को स्लो करने से बाढ़ व सुखाड़ दोनों का इलाज हो जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी पर बड़े बाँध बनाने के बजाय हम भूजल के भण्डारों को जानकर इसी में अरुणाचल की पहाड़ियों के सूखे झरनों को पुनर्जीवित करने का काम शुरू कर दें। यह काम पहाड़ियों में मिट्टी का कटाव कम करेगा। सिल्टिंग कम होगी तो नदी का तल ऊपर नहीं आएगा। जब मिट्टी से नदी तल ऊपर उठता है, तभी नदी का जल गाँव और शहरों में प्रवेश करता है। फलस्वरूप वहाँ बाढ़ आ जाती है। जहाँ से मिट्टी कट कर आती है, वहाँ सुखाड़ आता है। जहाँ नदी का पानी गाँव में प्रवेश करता है, वहाँ पर बाढ़ आती है। इसका इलाज मिट्टी कटाव को रोकना ही है। सरल भाषा में यह बातचीत सभी को समझ आई। सभी ने इसे उत्तर पूर्वी भारत की नदी–नीर–नारी समस्याओं से जोड़कर समाधान ढूँढा। इस दिशा में काम करने का निर्णय सुनाकर मुझे कुलपति एवं गुवाहाटी आई.आई.टी. शिक्षकों ने आश्वस्त किया।

उत्तर पूर्व राज्यों की संस्थाओं के कार्यकर्ताओं से मिलकर यहाँ जल साक्षरता व नदी साक्षरता अभियान चलाने का निर्णय भी हुआ है। हेम भाई ने स्वामी जी के साथ गंगा व हिमालय यात्रा में भागीदार होने का आश्वासन दिया। शान्ति समाधान आश्रम में 11 मार्च प्रातः 8:00 बजे बातचीत में भावी कार्य योजना निर्माण की गई। मीटिंग के बाद सीधे मदुरई प्रस्थान किया। शाम को त्रणनवैली के कनुनवेदी में देखा कि ताम्रवर्णी नदी का पानी लेकर चल रही फैक्ट्रियों ने पूरे क्षेत्र का पानी प्रदूषित कर दिया है। इस फैक्ट्री को बन्द करने का आदेश है, फिर भी चल रही है। इसके खिलाफ आन्दोलनरत फातिमा से देर रात तक बातचीत हुई। वह अपने आन्दोलनकारी साथियों के साथ मिलने आई। इसने अपना पूरा विवरण सुनाया। मैंने इनके आन्दोलन में सम्पूर्ण नैतिक सहयोग का वादा देकर आगे निकला। त्रणननवैली के गाँव में रात को रुका।

12 मार्च को दांडी मार्च दिवस है। आज रातभर महात्मा गांधी की यात्रा 'दाण्डी मार्च' और अपनी अविरल गंगा यात्रा के विषय में विचार करता रहा। अच्छी नींद नहीं आई। सुबह जल्दी ही ताम्रवर्णी के समुद्र संगम पर पहुँचे। यहाँ

मछली विविधता व मछली व्यापार देखा समझा। इसकी समृद्धि भी यहाँ समझ में आई। यह ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है। ईसाइयों के चारों तरफ चर्च दिखाई देते हैं। चर्चगेट आदि सभी कुछ इसाईमय है। यहाँ का मछली पालन नहीं व्यापार है। इस व्यापार में बहुत अनुशासन है। यहाँ मारा मारी दिखाई नहीं दी। ताम्रवर्णी समुद्र के पास जाकर कई धाराओं में बँट जाती है। समुद्र से पहले इस पर कई बैराज बन गए हैं। अब केवल बाढ़ के दिनों में ही समुद्र में जल जाता है। यह 140 किलोमीटर लम्बी नदी है। यही एक मात्र शुद्ध सदानीरा नदी थी। इसे उद्योगपतियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने अब सुखा दिया है। मैंने इसका तीन जगह से उद्योगपतियों द्वारा उठाया गया जल देखा। खनन के कारण इस नदी की हत्या मैंने अपनी आँखों से देखी है। इस नदी की यात्रा आज दाण्डी मार्च जैसी ही हुई। मेरे साथ फादर तथा कई ईसाई धर्म के नेता, हिन्दु–मुस्लिम व अन्य सभी स्थानीय समुदायों के जिम्मेदार कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघरों, व सामाजिक स्थानों पर ताम्रवर्णी पुनर्जीवन करने के तरीकों पर विचार किया। देर रात तक सभी ने मिलकर तय किया कि गंगा की तरह ताम्रवर्णी नदी का भी श्वेत पत्र निर्माण करना चाहिए। इस काम के लिए समिति का निर्माण किया गया। सभी ने अपनी–अपनी जिम्मेदारी सँभाल ली। गुरु स्वामी ने इस काम का समन्वय करना स्वीकार किया।

इसके बाद मदुरई पहुँच कर वहाँ से त्रिवेन्द्रम प्रस्थान किया। यहाँ केरल में नदियों के पुनर्जीवन, केरल की बाढ़ से विनाश आदि पर दिन भर मलायम मनोरमा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पहुँचकर केरल की बाढ़ के कारणों को बताया। इस बाढ़ के बाद यहां की सुखाड़ की मार का असर ज्यादा दिखाई दे रहा है। इस राज्य में 44 नदियों हैं, पर सभी नाले बन गई हैं। इसलिए यहाँ अब नई–नई बीमारियाँ आ रही हैं। इनसे बचना है तो यहाँ की नदियों को स्वस्थ रखने की जरूरत है। यहाँ सभी नदियाँ समुद्र में मिलती हैं। इनका मीठा हल्का जल समुद्र में विविध प्रकार की अधिक मछलियाँ पालन करने में मदद कर रहा है।

औद्योगिक प्रदूषण यहाँ बहुत अधिक है। इसे कम करना जरूरी है। यहाँ के औद्योगिक जल को नदी में नहीं मिलने दे। मलायम मनोरमा ने प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल के विषय में बहुत लिखा है, लेकिन इनके आन्दोलन ज्यादा प्रचारित–प्रसारित करने की जरूरत है। इस कार्यक्रम में शशि थरूर भी मौजूद रहे। उन्होंने गंगा अविरलता हेतु काम करने का अपना संकल्प भी सुनाया। गंगा श्वेत पत्र का विमोचन करके कहा यदि उनकी सरकार बनी तो वे गंगा को अविरल बनाने का काम करेंगे। गंगा आन्दोलन की माँगों को ज़ायज़ बताकर इस दिशा में काम करने का भरी सभा में संकल्प सुनाया। इन्होंने अपने राज्य की नदियों को शुद्ध सदानीरा बनाने के लिए काम करने की भी बात कही। मैंने

अपने भाषण में कहा कि नदी, नीर और नारी का सम्मान करने वाला ही सरकार बनाएगा। शशि थरूर ने मेरा परिचय भी दिया। उन्होंने सभी के साथ बहुत अच्छा सम्मानजनक व्यवहार किया। अपने पूरे भाषण में राजस्थान के काम की जानकारी दी। केरल में इस वर्ष के सुखाड़ पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा– हमें राजेंद्र सिंह जी को केरल बुलाकर केरल की नदियों को पुनर्जीवित करने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। यदि हमारी सरकार बनी तो हम ऐसा ही करेंगे। गंगा के लिए जो उनकी माँगें हैं, उन्हें भी पूरा करेंगे। मैंने उनके जाने के बाद केरल की रेजिडेंट्स एसोसिएशन के सवालों के जवाब दिए। सभी ने केरल जल संकट तथा जल निजीकरण के सम्भावित खतरों की तरफ ध्यान आकर्षित किया।।

केरल की बाढ़ मानव द्वारा आमन्त्रित है। यहाँ की नदियों की भूमि पर अतिक्रमण व प्रदूषण का खतरा है। यहाँ की नदियों में खनन द्वारा बहुत बड़ा शोषण हो रहा है। इसे रोकने का काम सरकार ही कर सकती है। लेकिन सरकार ने तो खनन का एक बड़ा शक्तिशाली माफिया तैयार कर दिया है। इन के विरुद्ध जो भी आवाज उठाता है, उसे माफिया अपहरण करके मरवा देते हैं। इस समय देश में उद्योगपतियों का राज है। दिल्ली की सरकार अड्डाणी और अम्बानी जैसो की ही मदद करती है, प्रकृति की रक्षा करने वालों को तो डरा–धमका कर मरवा देती है। गंगा जी के लिए तपस्या करने वाले प्रो0 जी. डी. अग्रवाल (स्वामी ज्ञानस्वरूप सानन्द) को मरवा ही दिया है। सरकार चाहती तो उनसे बात करके उनके प्राणों की रक्षा कर सकती थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। गोपाल दास का अपहरण कर के उन्हें भी शान्त कर दिया। अब देश ऐसी भयानक परिस्थित में है कि इसमें एक नई क्रान्ति और परिवर्तन की जरूरत है। लालची विकास को रोककर प्रकृति पुनर्जीवन कार्य करना चाहिए।

इसके बाद मैंने यहाँ से चैन्नई प्रस्थान किया। 15 मार्च को चैन्नई में इंजीनियरों को सम्बोधित किया। इंजीनियरों से कहा अब समय है, प्रकृति पुनर्जीवन की इंजीनियरिंग पढ़ें। यह नहीं पढ़ेंगे तो जिसे आप विकास मानकर निर्माण करेंगे, उस से विस्थापन के साथ ही विनाश की शुरूआत होगी। उससे समाज और प्रकृति दोनों में विकृति आयेगी। यह विस्थापन और विकृति अन्त में विनाश पर ही जाकर रुकती है। आज हमारी नदी सूख गई है, दूषित व बीमार होकर मरने को तैयार है। भूजल के अन्दरूनी भण्डार भी सूख गये हैं। नदी को सुखाने वाला काम शोषण करने वाली इंजीनियरिंग ने ही हमें सिखाया है। हम उसी तकनीक से शोषण करके भारत के भू–जल भण्डार को सूखा रहे हैं, खाली कर रहे है। यही हमारा असली बैंक है। आज भारत का असली बैंक भू–जल भण्डार खाली होकर हमारे गाँवों का पलायन शहरों में बढ़ा रहा है। गाँव खाली होकर शहर बढ़ाते जा रहे हैं। बढ़ते शहरों से भारत

की भू–संरचना पर दबाव पड़ रहा है। यही भारत की शहरी बसावटों के लिए खतरनाक संकट है। इससे बचने के लिए हमें नदी पुनर्जीवन की शिक्षा और पढ़ाई सीखनी जरूरी है। हमने भारत भूमि पर अरवरी, रूपारेल, सरसा, भगाण ी, जहाजवाली, महेश्वरा, सैरनी, तेवर, महाकाली व अग्रणी आदि नदियों पर पुनर्जीवन कार्य करके शहरी आबादी को पुनः गाँवों की तरफ मोड़ा है। विकास से गाँव उजड़ते हैं। शहरी आबादी बढ़ती है। पुनर्जीवन के काम से गाँव बसते हैं और शहर भी बसे रहते हैं। कोई उजड़ता नहीं है।

आधुनिक विकास तो उजाड़ से शुरू होकर विनाश पर ही जाकर रुकता है। नदी पुनर्जीवन किसी को उजाड़ता नहीं है, बल्कि उजड़ों को बसाता है। पुनर्जीवन से भारत के संविधानानुसार हमारी समानता की तरफ रास्ता मुड़ता है। प्रकृति और मानवता दोनों का सन्तुलित सम्बन्ध बना रहता है। न्याय और शान्ति कायम रहती है। शोषण, प्रदूषण व अतिक्रमण रुकता है। व्यवहार में हिंसा रुकती है। सत्य और अहिंसा की स्थापना होने लगती है। हमारा व्यवहार लाभ की जगह शुभ को तलाशने लगता है। चेन्नई के इंजीनियरों के सम्मेलन में बहुत अच्छा संवाद हुआ। यह संवाद लार्सन एण्ड टबरो ने रखा था। यहाँ के प्रबन्धक निदेशक आदि लोग भी यहाँ मौजूद थे। इन्हें इनकी कम्पनियों में सुख की चिन्ता समझाई। शुभ कम्पनियों के स्थायित्व हेतु भी अति आवश्यक है। कम्पनी का स्थायी शुभ के बिना सम्भव नहीं है। इस हेतु हमारे नदियों के काम को देखो। जब आप नदी पर कोई बड़ी बाँध बनाते हैं तो वहाँ की मिट्टी–पेड़–पौधे, जीव–जगत सभी का विस्थापन आरम्भ हो जाता है। इस विस्थापन से प्रकृति में विकृति की प्रक्रिया से विनाश का रास्ता ही बनता है। इसलिए अब लार्सन टबरो जो अपने को भारत निर्माण कम्पनी कहती है उसे समझना है। यह निर्माण नहीं विनाश ही है। आप के बनाए एक बाँध में कितना पानी रुकता है। उतना ही पानी हम 1000 छोटे बाँधों में रोक देते हैं। इनसे किसी भी प्रकार का विस्थापन नहीं होता है। आपने गंगा में जो बाँध व बैराज निर्माण किया है। उससे गंगा जी मर गई हैं। हमने जो बाँध बनाकर धरती का पेट पानी से भरा है, उससे हमारी नदियाँ पुनर्जीवित होने लगी हैं। आप केवल धरती के ऊपर जल संरचना बनाकर उसी से सिंचाई की माप करते हैं। हम धरती का पेट पानी से भर कर उससे सिंचाई की माप करते हैं। फसलों का उत्पादन बढ़ाते हैं। धरती से जितना लिया उसे अपनी मेहनत से उतना ही वापस लौटाने का काम हम सदैव ही करते रहते हैं। प्रकृति केवल हमारे लिए ही नहीं है, प्रकृति में हम भी बने हैं अतः हमारा भी हिस्सा है, लेकिन पूरी प्रकृति हमारे लिए नहीं है। नीर जीवन है, नारी जीवन देती है, नदी जीवन चलाती है। इसीलिए भारत तो नीर–नारी–नदी की संस्कृति वाला राष्ट्र है। यह पुरुष प्रकृति वाला देश नहीं है। पुरुष अतिक्रमण, शोषण व प्रदूषण करने

वाला होता है। नारी पोषण, सहिष्णु व सद्भावना वाली होती है। अतः जल से जन्मे जीवन को सदैव ही सद्भाव से जीती है। नदी जीवन का प्रवाह बनकर सनातन, सदैव नित्य नूतन निर्माण करके अमन चैन कायम रखती है। आधुनिक शिक्षा ने रावण का निर्माण किया है, जो सभी पर अपना नियन्त्रण कायम करने की चाह रखते हैं।

आज की शिक्षा ने भारत के भगवान को भुला दिया है। भारत का भगवान प्रकृति (पंचमहाभूत) है। इनसे ही ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ है। जल जो भगवान के अन्त में 'न' से नीर बनता है, उसमें इस ब्रह्माण्ड के 118 तत्त्वों में से 109 को अपने अन्दर घोलने की शक्ति है। यह सबसे अधिक शक्तिशाली है, जो पंचमहाभूतों का विलय करके मानव को भी बनाता है। भगवान (भ–भूमि, ग–गगन, व–वायु, अ–अग्नि व न–नीर) यही तो हमारा भगवान है। इसी को हम मानते रहे हैं। अब हमने इसे भगवान मानना छोड़ दिया है। हमारी आधुनिक शिक्षा में जिसने हमें बनाया है, वह नहीं पढ़ाया जाता। इसलिए हम बनाने वाले से दूर हो गए हैं। कृतज्ञता बोध भी बचा नहीं है। इसलिए सबसे पहले विकास ने हमारे ज्ञान का ही विस्थापन कर दिया है। अब हमारा मान और ज्ञान दोनों ही गायब हो गए हैं। इसलिए गंगा की पवित्रता का बोध कराने वाला बायोफाज का महत्त्व भी हमारे जीवन में रहा नहीं है। इसीलिए बिजली और अन्य उत्पादन के लालच ने हमें अन्धा बना दिया। इसलिए हम अब गंगाजल को सामान्य जल मानकर उसके साथ दुर्व्यवहार करने लगे हैं। गंगा जी ने कहा था जब तक मेरा सम्मान करोगे तभी तक मैं गंगा जी रहूँगी। जब मेरा सम्मान करना छोड़ दोगे तो मैं गंगा नहीं रहूँगी। इसीलिए बाँधों में बँधी गंगा नदी गंगा जी नहीं हो सकती। गंगा जी तो अपनी आजादी से बहने वाली शक्ति माँ है। जो पालती–पोषती है। तभी तो हर भारतीय मरने से पहले दो–बूँद गंगाजल अपने कण्ठ में चाहता है। आज भी चाहता है, जबकि हमारी माँ गंगा की वह मूल शक्ति बची ही नहीं है। अब तो केवल आस्था बची है। यह भी ज्यादा दिन नहीं बचेगी, मर जाएगी। काल–चक्र में सभी कुछ परिवर्तनशील है। गंगा का गंगत्व स्थायी था, जिसे हमने नष्ट कर दिया है, इसे गंगाजल से अलग कर दिया है। गंगत्व नष्ट नहीं होता, अलग हो जाता है। गंगा का यह प्राकृतिक चरित्र है। मानवीय दखल सभी को नष्ट नहीं कर सकता है। उसके स्वरूप को बदल सकता है। यह गंगत्व स्वरूप परिवर्तन है।

हमें अपने गंगा धर्म का संस्मरण करने की जरूरत है। गंगा जी को आजादी देनी चाहिए। हम अभी गंगा के विशिष्ट गुण वाली जल धाराओं को आजादी दें। भागीरथी, अलकनंदा, मंदाकिनी देवप्रयाग में मिलकर गंगा जी बनती हैं। यहाँ इन्ही नदियों पर पंच–प्रयाग विष्णु, कर्ण नन्द देव आदि प्रयाग हैं। प्रयाग उन्हीं स्थानों को कहा जाता है। इन्हें बचाने की कार्य योजना निर्माण

की। इस कार्य में गंगा के दोनों किनारे के लोगों को, संस्थानों, संगठनों, स्वैच्छिक संस्थाओं अन्य सभी को सक्रिय करना तय हुआ। मैंने पत्र लिखकर व मिलकर जोड़ना शुरू भी कर दिया है।

16 मार्च को चेन्नई में प्रेस वार्ता आयोजित कर के सभी को आह्वान किया। वोट उसे ही देना, जो नदी बचाने का काम करे। इस सदी में भारत को बाढ़–सुखाड़ मुक्त बनाना हमारी प्राथमिकता बननी चाहिए। आज हमारा नेता वही होगा जो सारे भविष्य को बचाने बनाने का काम करेगा।

17 मार्च को प्रातः फ्रांस–पेरिस पहुँचा। इस यात्रा का उद्देश्य था– दुनिया एक है, जल और जीवन भी एक ही हैं, सभी मिलकर बचाएँगे तो ही यह बचेगा। हम अब अलग–अलग नहीं रह सकते हैं। 21वीं सदी में सभी का सब पर एक समान ही हक है। इसलिए दुनिया में अब शोषण, प्रदूषण और अतिक्रमण करने वालों से लड़ाई भी एक ही होगी। फ्रांस से शुरुआत करने का लक्ष्य यह है। यही जनवादी पहली क्रांति हुई थी। इन्होंने लालची विकास में फँस कर जल–जीवन पर कम्पनियों को जलपूर्ति सेवा के नाम पर जल का काम दे दिया था। जल सेवा यहाँ सबसे ज्यादा महँगी हुई तो इनका जीवन संकट में आ गया। इसीलिए जल निजीकरण के विरुद्ध जल सामुदायिकरण कार्य ही आरम्भ हुआ है। इन सब से हमारा परिचय है। मेरी विदेश यात्रा भी 1991 में सबसे पहले इसी देश में हुई थी।

मैं जब पहली बार फ्रांस आया था, तब मित्रों यहाँ के राष्ट्रपति थे। उन्होंने मेरे जैसे मामूली सामाजिक कार्यकर्ता को द्वितीय विश्व सम्मेलन "पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992 रियोड़ी जैनेरियो" की तैयारी के लिए हम सब दुनियाभर से एक हजार लोग इकट्ठे किए थे। मजेदार बात यह थी सारी दुनिया से प्रकृति और मानवता का बराबर सम्मान करने वाले ही लोग यहाँ दो सप्ताहों के लिए मिलकर विविध भाषाओं में बात कर रहे थे। मुझे अंग्रेजी बोलनी नहीं आती थी, मेरा भाषण हिन्दी में हुआ। उसका सभी भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था की गई थी। मुझे उस समय एक शान्त–सुन्दर प्राकृतिक राष्ट्र दिखता था। तब मुझे 2 सप्ताह रहने पर भी मालूम नहीं हुआ। यहाँ जल का निजीकरण है, क्योंकि मेरे कमरे में ही नहाने व पीने–खाने का सभी सामान सजा था। तब मुझे साझे भविष्य की दुनिया में साझी चिंता करने वाला देश दिखाई देता था।

2015 में जब 21वाँ पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ तो मुझे यहाँ की जल सहकार संस्थान (युवा कोडियनियल फ्रांस) संगठन ने बुलाया। मैं मौलिक के साथ 20 दिन यहाँ रहा। इस समय हम ने एक नारा दिया। जल ही जलवायु है। जलवायु ही जल है। मेरा यह नारा बहुत ही चला। हम सभी ने इसे साझा नारा मान लिया। अब मुझे जल का काम करते हुए 31 वर्ष पूरे हो चुके थे। जल संरक्षण से धरती का बुखार और मौसम का मिज़ाज़ सुधार का अनुभव

और आभास हो गया था। जिसे मैंने अपने किसानों तथा वैज्ञानिकों की मदद से दूसरों को बताने के लिए तैयार कर लिया था। उसे दिखाने का मुझे इस सम्मेलन में बहुत बार अवसर भी मिला। यह सरल अनुभव की सिद्धि सरल प्रस्तुति यहाँ बहुत लोगों को समझ आई। मैंने भी बार–बार दिखाई।

इस प्रस्तुति में हमारे क्षेत्र के रूठते बादल कैसे आकर अब बिना रूठे बरसने लगे हैं। हमने लालगर्मी को नीलीगर्मी की मदद से हरीगर्मी में कैसे बदला? हरी गर्मी ने बादलों का रूठना बन्द कर दिया, क्योंकि धरती का बुखार अब कम हुआ है। मौसम का मिजाज सुधर गया है। इसके मैंने प्रत्यक्ष अनुभव दिखे। सूखी नदी सदानीरा बनकर अब बहने लगी है। यह सब प्रत्यक्ष आँखों से देखकर पूरी दुनिया के लोगों ने 21वें पृथ्वी शिखर सम्मेलन जल ही जलवायु की बात बहुत जोरों से उठाकर जीत हासिल करली। पेरिस पृथ्वी शिखर सम्मेलन में ही जलवायु परिवर्तन पर जल का ही सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। यह बात संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणाओं में शामिल हुई थी। उक्त सभी बातों के स्मरण से इस बार फ्रांस से ही जल निजीकरण के विरुद्ध कार्ययोजना निर्माण के लिए अलग–अलग बहुत बैठकें आयोजित हुईं। इन सभी में पृथ्वीराज, कनुप्रिया जी व पीवी राजगोपाल के साथ–साथ मैं भी रहा।

17 की शाम 3:00 बजे डैनियल मित्राओं (पूर्व राष्ट्रपति की पत्नी) के दफ्तर में ब्रनाउ मुनियार, जैंन्कलोड, ईडिट फिलिक्स आयोजक संस्था के अध्यक्ष सदस्यों के साथ डैनियल फ्रांस कोडियनल के निदेशक आदि बहुत से फ्रांस के जल क्षेत्र में काम करने वाले गणमान्य लोग मौजूद रहे। पृथ्वीराज ने विस्तार से विश्व जलमान्य की वैज्ञानिक खामियाँ बताईं। इनके विरुद्ध हमने जो मुकदमा किया है, वह भी सभी विस्तार से इन्हें बताया। मैंने कहा इस संस्था का पहला सम्मेलन मोरक्को में 1997 में आयोजित हुआ था। दूसरा और तीसरा क्वटो में और चौथा मैक्सिको में हुआ था। तब तक यह मेरे जैसे लोगों को बुलाते थे। पाँचवाँ सम्मेलन जब टर्की में हुआ तो तब से इन्होंने हम जैसे 'जल तथा प्रकृति पर लोगों का सम्मान अधिकार है,' ऐसी बात करने वालों को बुलाना बन्द कर दिया। अब यह केवल जल का निजीकरण करने वाली कम्पनियों को ही बुलाते हैं। यह संगठन अपने को संयुक्त राष्ट्र संघ से जुड़ा मान्यता प्राप्त कहकर दुनिया को धोका दे रहा है। इस संगठन के इस झूठ को पर्दाफाश करने के लिए सेनेगल में 2021 में आयोजित सम्मेलन को रद्द करने की शुरुआत आज से ही करनी चाहिए। मेरे इस विचार पर आंशिक सहमति बनी। बेनियार मुनियर ने इस पर गंभीरता दिखाई। अपना वैकल्पिक मन्य सैनेगल ड़कार में इसी वर्ष जून में आयोजित करने के मेरे प्रस्ताव पर विचार करके सभी साथियों से बातचीत करके निर्णय बताने को कहा।

18 मार्च को गबिरियाल अमार्ड के दफ्तर में बैठक हुई। यह यहाँ की विपक्षी

पार्टी का युवा प्रभावी नेता है। इसे पृथ्वीराज ने पूरा केस समझाया। इसने भी हमारी लड़ाई में मिलकर लड़ने के लिए बात कहीं। इसे भी सेनेगल जल सम्मेलन का विरोध करने हेतु तैयार किया। इसने जनेवा यात्रा में सम्पूर्ण साथ देने की बात स्वीकार कर ली। इसी मीटिंग में राजनेताओं को जल निजीकरण के खतरे से अवगत कराने हेतु एक व्यापक आन्दोलन जल निजीकरण रोकने हेतु प्रेरित किया जाए। इस कार्य में युवा राजनेताओं का 1 सम्मेलन करने का प्रस्ताव भी रखा। विचार–विमर्श के बाद इसे करने की जरूरत है। लेकिन गैर राजनीतिक व्यक्ति ही इस काम को प्रभावी ढंग से कर सकता है। उसकी बात सभी दल सुनेंगे। राजेंद्र सिंह जी ही ऐसा करेंगे। गेबिरियाल ने बहुत जोर देकर यह बात कहीं। इसे स्वीकारते हुए मीटिंग समाप्त हुई।

19 को प्रातः ब्रसेल्स पहुँचे। यहाँ यूरोपियन पब्लिक सर्विस यूनियन हेड क्वार्टर में मीटिंग आरम्भ हुई। इस बैठक में यूरोपियन पब्लिक सर्विस के कई अधिकारी व नेता मौजूद रहे। यहाँ विश्व जल कोसिंल का बियोलिया ने कब्जा कर लिया है। ये निजी कम्पनियाँ देशों की सरकारों को गुमराह करके या साँठगाँठ करके उन्हें रिश्वत देकर भ्रष्टाचार बढ़ाने का काम कर रही हैं। इस काम में फ्रांस की कम्पनियाँ सभी से आगे हैं। फ्रांस में अब इनके विरुद्ध लड़ाई आरम्भ हो गई है। इस लड़ाई की अफ्रीका में अब सबसे ज्यादा जरूरत है। सेनेगल में होने वाला विश्व जल आयोजित नहीं हो। इसे रोकना सबसे पहला काम होना चाहिए। जनता का सरकारी धन यह निजीकरण कम्पनियाँ फोर्म (मंच) आयोजन के नाम पर झूठा बोल कर खर्च करा रही हैं। विश्व जल परिषद् बोलता है, मंच आयोजन पर सरकारें जो खर्च करती हैं, उसका 70: वापस आ जाता है। आज तक का रिकॉर्ड है 10–15 और 25: ज्यादा किसी भी मंच आयोजन में अब तक वापस नहीं मिला। अभी तक टर्की मासे (फ्रांस) ब्राज़ील में से इन्होंने क्रमशः 60, 70 लाख यूरो फीस (वौद्धिक ज्ञान) की शुल्क लिया है। 30 से 40 लाख यूरो इन्होंने सरकारों से आयोजन पर खर्च कर आए हैं, लेकिन उन राष्ट्रीय सरकारों को इस खर्च का आज तक कभी भी 30: से ज्यादा वापस नहीं मिला है। फिर भी यह सरकार को गुमराह करके जनता का धन बर्बाद करा रहे हैं। यह बर्बादी रोकने के लिए सेनेगल मंच का आयोजन रोकना जरूरी है। इस विषय पर लम्बी बातचीत के बाद ब्रसेल्स बैठक में सेनेगल फार्म रोकने हेतु पूरे यूरोप को एकजुट होकर इस कार्य में जुटना चाहिए। ब्रसेल्स के साथियों ने इस काम को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले ली है। हम भारतीय टीम अभी और इस दिशा में खोज कर रही है। सेनेगल में आयोजित विश्व जल मंच रुकना ही चाहिए। इस दिशा में काम करने वालों को जोड़ने का काम जारी रखें।

20 को फिर पेरिस में क्रीड के दफ्तर में बैठक आरम्भ हुई। इस बैठक

का एजेंडा भी सेनेगल जल सम्मेलन को रोकना तथा फ्रांस से जनेवा तक चल मार्च करना है। जय जगत से जिल और राजगोपाल जी भी पेरिस में आए हैं। इस बैठक का संचालन क्रीड के सदस्यों ने किया है। इसमें इस संस्था के कई खास सदस्य आए थे। सभी ने मासे से जनेवा जल मार्च के विषय में गहरी रुचि दिखाई। सेनेगल विश्व जल मंच रोकने की अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की। यात्रा का आज रूट ही तय करने की कोशिश हुई है। शाम को छोटी–छोटी अन्य बातें बैठकर पीवी राजगोपाल जी आदि के साथ हुई। सीआरआईडी फेडरेशन लेजिरेटिव 144 रियो की बैठक के बाद सेनेगल में एक वैकल्पिक व्यवस्था बनाने के काम में उत्साह बढ़ गया है।

21 को गुस्स मसहियह के साथ सुबह 11 बजे मीटिंग शुरू हुई। इसमें पीवी राजगोपाल ने जय जगत यात्रा के विषय में बताया। गुस्स मसहियह ने इसमें बहुत रूचि लेकर उन्हें मदद करने का विश्वास दिलाया। फिर हमने जल की लूट कम्पनियाँ कैसे कर रही है ? सरकारी मंच बताकर जनता का पैसा निजी कम्पनियाँ खर्च करा रही है। इसे रोकने हेतु सच बताना जरूरी है। इस मीटिंग के बाद ओलिवि एवं अन्य के साथ मीटिंग शुरू हुई। इसमें भी हमारा एजेंडा यही बना रहा है। सर्वसम्मति से मिलकर एक वैश्विक संगठन खड़ा करने का निर्णय हुआ।

शाम को डेविट और थॉमस के साथ बैठक हुई। मेरि बुनार्ड बैठक में पहुंच ही नहीं पाई। डेविट राष्ट्रीय सचिव है। यह ग्रीन पार्टी यूरोप है। इन्हें भी जलवायु परिवर्तन का काम समझकर करने हेतु पहले जल समझने की जरूरत पर ध्यान आकृष्ट करने की जरूरत समझाई। उन्होंने बहुत रुचि लेकर कहा, ये भारत अगर वियोलिया के द्वारा किए विनाश को समझाने के लिए आने को तैयारी बताई। चुनाव के बाद आना अच्छा होगा।

22 को सुबह इमाउस के दफ्तर में स्टीफन मेलचोरी के साथ बैठक हुई। यह सॉलिडेरिटी इंटरनेशनल संगठन है। गरीबों के लिए ही काम करता है। पूरी दुनिया के 60 देशों में काम करता है। तमिलनाडु में भी इनका काम है। कम साधनों से चलने वाला यह संगठन प्रभावी है। इसमें पीवी राजगोपाल ने जय जगत मासे से जनेवा यात्रा के विषय में बताया। मैंने इस यात्रा में साधनों कि मदद की बात की। यात्रा का लक्ष्य समझाया। उन्होंने मदद करने का आश्वासन दिया।

सेनेगल सम्मेलन रोकने में मदद तथा जल मानवाधिकार सभी को जीने के लिए जल मिले इस पर काम करने का विश्वास दिलाया। अच्छी बातचीत और विश्वास के साथ यहाँ से निकले। आज पीवी राजगोपाल का स्वास्थ्य खराब था। फिर भी वे पूरे दिन सभी जगह हमारे साथ रहे। पेरिस की सिटी हॉल में विश्व जल दिवस मनाया। यहाँ की मेपर सिटी कोलि सदस्य, मीडिया

आदि मौजूद थे। सैकड़ों पेरिस के लोग आए थे। इस में विश्व जल परिषद सदस्य भी आई थी। पृथ्वीराज ने विश्व जलपरिषद का भ्रष्टाचार समझाया। इसे रोकने हेतु काम करने का अपना संकल्प बताया। मैंने जल प्रतिज्ञा कराई। फ्रांस मिसियो से कहा "जल भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा केंद्र आज फ्रांस है। यहां की कंपनी आज पूरी दुनिया के जल पर कब्जा कर रही हैं। इन्हें रोकने हेतु यहां की जनता को आना है। अन्यथा आपको भी बेपानी बना देगी। इसमें सभी ने रुचि लेकर दुनिया के जल लूट रोकने हेतु आगे आने का संकल्प मेरे साथ लिया।" सेनेगल की महिलाओं से मिले। यहां की एक लड़की संसद अध्यक्ष की भतीजी है। उसने भी हमें मदद करने का विश्वास दिलाया। सम्मेलन के बाद देर रात तक भोजन एवं यात्रा समापन आन्तरिक मूल्यांकन किया। इसी यात्रा के परिणाम तथा भावी कार्यक्रमों पर चर्चा के बाद अन्तिम दो काम करने की स्पष्टता बनी है।

यह माना : 1. सेनेगल सम्मेलन रुकवाना 2. दूसरा मास्से से जानेवा जल यात्रा। अब इन्हीं कामों पर केंद्रित करना तय हुआ। ऐडिट जैन्क फ्रन्कलोड ओलिवा ने राजेंद्र सिंह से प्रार्थना की। गंगा जी के आपके काम में मदद करेंगे, लेकिन आप आमरण अनशन नहीं करना। मैंने कहा लड़ेंगे जीतेंगे। गंगा मां है। उसके प्रति कृतज्ञता पूरी करेंगे। अब गंगा पर आगे नये बाँध नहीं बनें। नया कानून बने। इसके बाद सामूहिक फ्रांस यात्रा सम्पन्न हुई।

23 को एडिट ओलिवर दोनों मुझे एयरपोर्ट पर छोड़कर गंगा के काम में मदद करने की बात करने लगे। उन्होंने गंगा की लड़ाई का डिटेल बताया। अपना संकल्प भी बताया। माँ की सेवा धर्म है। वह निभाया है। अब गंगा पर नया बाँध नहीं बने, यह जरूरी है। इसकी सभी चर्चा करें। क्या नहीं बनना चाहिए क्योंकि गंगा में बायोफाज है। ऐसा ही बायोफाज दूसरी नदियों में नहीं है। इसलिए इस नदी को और इसके बायोफाज का बचना जरूरी है। इसे समझाने में मैंने समय शक्ति लगाई, लेकिन यह दोनों समझ गए हैं। फिर कहने लगे अब गंगा को बचाने में हम भी आपके साथ ही हैं। हमें भी काम बताए। हम भी गंगा जी के लिए काम करेंगे। दुनिया में गंगा परिवार बनाना भी इस यात्रा का लक्ष्य है। इसे बढ़ाने बनाने में फ्रांस के साथी मदद करे। इस निर्णय के बाद हवाई जहाज में बैठकर मुम्बई प्रस्थान किया।

चेन्नई में दोपहर को सद्भावना सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा आज हमारी साम्प्रदायिक सद्भावनाओं के साथ प्राकृतिक नीर–नारी–नदी की सद्भावना जरूरी है। वह मिलकर बचाएँ। वह बचेगी तभी हम अपने भगवान को समझेंगे। हम सभी धर्मों की शक्तियों में एक ही भगवान है। जो हमें बनाता व चलाता है। वही हमारा भगवान माना जाता है। वही सर्वशक्तिमान है। सर्व शक्ति को सभी धर्म भगवान मानते हैं। वही तो पंचमहाभूत है। उसी भगवान को

जब सब समझ कर जिएंगे तो धर्म के नाम पर कोई लड़ाई नहीं करा सकेगा। कोई धार्मिक बनकर हमें लड़ाता है। हम पहले उसकी लड़ाई रोके। वही सच्ची सद्भावना है। भगवान को बचाने की कामना ही सच्ची सद्भावना है। अब यही हमारा साझा भविष्य है। भगवान् किसी एक धर्म–देश का नहीं पूरी दुनिया का एक ही है। इस भाषण के बाद फ्रांस के लिए प्रस्थान किया।

माना गाँव (हिमालय) में गंगा अविरलता सत्याग्रह यात्रा द्वारा शपथ समारोह

झूठ और धोखा देने वालों को गंगा जी दण्डित करती हैं।

पिछले चुनाव 2014 में नरेंद्र मोदी जी ने कहा था– "मैं गंगा का बेटा हूँ, गंगा ने मुझे बुलाया है, मैं गंगा को अविरल–निर्मल बनाने के लिए काम करूँगा।" 5 साल चले गए हैं, गंगा जी की निर्मलता–अविरला हेतु कुछ भी काम नहीं हुआ है। गंगा जी जैसी पहले थी, अब उससे भी ज्यादा मैली हो गई हैं। अविरलता के लिए तो कहीं कुछ भी काम नहीं हुआ है। बल्कि हिमालय के पंच प्रयागों को नष्ट करने के लिए हिमालय में बाँध बनाये जा रहे हैं। उच्चतम न्यायालय द्वारा बाँध का काम रोकने के आदेश के बावजूद बाँधों का काम जारी है। अलकनन्दा और मन्दाकिनी की सहायक पिंडर, धौलीगंगा व नन्दाकिनी आदि पर बाँध बन रहे हैं। स्मरण रहे गंगा जी अकेली भागीरथी ही नहीं हैं, भागीरथी पर तो पिछली सरकार ने निर्माणाधीन 3 बाँधों लोहारी नागपाला, पालामनेरी व भैंरूघाटी के काम रद्द कर दिया थे। इस सरकार को मन्दाकिनी और अलकनन्दा की सहायक नदी पिंडर, धौलीगंगा और नन्दाकिनी पर बन रहे बाँधों के काम रद्द करने होंगे; तभी गंगाजी अविरल बनेंगी। उन्हें रद्द नहीं किया गया, इसीलिए उन्होंने अविरलता को पूर्णतः भुला दिया है। निर्मलता के नाम पर भी केवल घाट बनाए गये हैं, लेकिन गंगा का स्वास्थ्य ठीक करने का कार्य नहीं हुआ।

इस बार के चुनाव में गंगा के मंत्री कह रहे हैं कि 2020 मार्च तक गंगा को निर्मल बना देंगे। यह सफेद झूठ 2019 में वोट लेने हेतु बोला जा रहा है। उमा जी ने भी इसी पद पर रहकर कई बार घोषणाएँ की थीं। उन्होंने कहा था यदि अक्टूबर 2018 तक गंगा जी निर्मल नहीं हुई तो मैं गंगा–समाधि ले लूँगी, लेकिन ऐसा अभी तक नहीं हुआ। अभी वर्तमान में इसी पद पर आसीन श्री गडकरी जी भी वही बात बोल रहे हैं। कुछ वैसा ही जैसा नरेंद्र मोदी जी और उमा जी ने बोला था। अब 25 से 26 मार्च को 2 दिन से मीडिया में गडकरी जी का बयान सुनकर भी ठीक वैसा ही आभास हो रहा है। इस सरकार ने बड़ी कम्पनियों के लिए तो सब कुछ कर दिया है, लेकिन गंगा जी के लिए कुछ भी काम नहीं किया है। उक्त सभी को सुनकर ऐसा लगता है जैसे भारत के 'सत्यमेव जयते को झूठमेव जयते में बदलने में सफल रहे हैं।' जो कहा वैसा कुछ भी नहीं किया है। गडकरी जी का बयान इस बार के चुनाव प्रचार में गंगा जी पर कारगर नहीं होगा। क्योंकि हमारी माँ गंगा जी अब बहुत क्रोधित हैं। वे यदि किसी को विजयी बनाती हैं तो उसे पराजित भी करती हैं। यदि गंगा जी को दिया वचन पूरा हो जाता तो दोबारा भी लाभ मिल जाता; लेकिन माँ गंगा जी पहले से ही धोखा खाए बैठी हैं, इसलिए इस बार झूठ का लाभ इस

सरकार को नहीं मिलेगा।

गंगा पुत्र प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल जी की आत्मा जीवित है। उनकी आत्मा राम जी के दरबार में जाकर गंगा जी को धोखा देने वालों को दण्डित करायेगी। यह वचन उन्होंने प्रधानमन्त्री को अपने लिखे तीसरे पत्र में स्पष्ट रूप से लिखा था। उनकी आत्मा की पुकार और गंगा जी को मिला धोखा अब इस सरकार को बहुत ही भारी पड़ेगा। गंगा जी अब झूठे वचन पर वोट नहीं दिलाएँगी। अब यह सरकार जितना झूठ बोलेगी, उसे उतनी ही हानि होगी। 2019 में गंगा जी इस सरकार को हराने वाली ही हैं। अब जितना झूठ बोला जाएगा, गंगा का क्रोध भी उतना ही ज्यादा बढ़ेगा। सरकार को अब झूठे वचन बोलना रोकना ही होगा। प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल जी कहते थे, यदि यह सरकार हमारी जनता का खजाना गंगा जी के नाम पर कुछ खास लोगों को बाँटना बन्द कर दे तो भी गंगा मैया उन्हें माफ कर देंगी। लेकिन इन्होंन माई से कमाई करना रोका नहीं है। इसलिए अब इसका दण्ड इन्हें भुगतना ही पड़ेगा। गंगा जी की अविरलता हेतु समर्पण करने वालों की सूची तो बहुत लम्बी है। संवेदनहीन सरकार पर इसका क्या असर होगा, यह तो 2019 का लोकसभा चुनाव परिणाम ही बताएगा।

1985 में पहली बार भारी बहुमत से राजीव गांधी जी की ऐतिहासिक विजय केवल उनकी माता श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की संवेदनशीलता मात्र के कारण ही नहीं मिली थी, बल्कि युवा नेता श्री राजीव गांधी जी के द्वारा गंगा जी हेतु निर्मलता का संकल्प ही मुख्य कारण था। यह पहला चुनाव था, जब धार्मिक और धर्म निरपेक्ष सभी वोट उन्हें मिले थे, क्योंकि गंगा जी उसमें मुख्य मुद्दा थी। 2009 में मनमोहन सिंह जी ने भी भागीरथी को पहले जैसी बनाने के लिए तीन निर्माणाधीन बाँधों को रद्द करके भागीरथी नदी को संवेदनशील घोषित कर दिया था। यह सरकारी काम दूसरी बार पहले से ज्यादा सीट दिलाने में सफल हुआ था। 2014 में नरेंद्र मोदी जी ने भी कहा था कि मैं गंगा को अविरल–निर्मल बनाऊँगा, पर यह घोषणा मात्र थी, लेकिन लोगों में विश्वास पैदा करने में सफल हुई। सबसे ज्यादा गंगा जी के 11 राज्यों में इनके सांसद जीते हैं, लेकिन **प्रधानमंत्री बनने पर गंगा जी को दिया वचन भूल गए हैं। इस झूठे और गंगा जी के साथ किए धोखे से अब यह बचते फिर रहे हैं। अब गंगा जी के मंत्री को आगे कर रहे हैं। अब वह भी झूठ बोलने में लग गए हैं। लगता है कि प्रधानमंत्री बनने के सपने देखने से पहले ही ये झूठे आश्वासन देना शुरू करते हैं। भारत में इनसे पहले के प्रधानमंत्री कभी भी ऐसा झूठ नहीं बोलते थे। वे जो भी बोलते थे वही करते थे। अब जो यह बोलते हैं उसके पीछे उनका केवल स्वार्थ और लाभ ही छुपा रहता है। वह वोट का लाभ ही होता है। इस लाभ**

के सामने गंगा जी की अविरलता भूलना सरल और सहज है।

अब हमारी सरकार वैज्ञानिक व आध्यात्मिक बड़े व्यक्ति प्रोफेसर जीडी अग्रवाल जी जैसे को भी मार दे और उनकी बातों और सुझावों पर कोई सुनवाई नहीं हो। इन्होंने भारत का सम्मान, विश्वास, श्रद्धा, आस्था और भक्ति की प्रतीक गंगा जी को पूर्व विशिष्ट गुणों वाले जल के साथ प्रभावित रखने का प्रयास किया था। वे कहते थे कि जिस बायोफाज ने गंगा जी के प्रति आस्था और विश्वास को पैदा किया है, वह वैज्ञानिक सत्य है। यही वह सत्य था, जो मैं अपने विद्यार्थी काल में अमेरिका बर्कले में जाकर भी गौरव का गीत गाता था– "मैं उस देश का वासी हूँ, जिस देश में गंगा बहती है।" उस काल में गंगा जी के जल में जो विशिष्ट गुण विद्यमान थे, वे अब नहीं बचे हैं। सांस्कृतिक धर्मरक्षक कहलाने वाली इस सरकार का सबसे पहला धर्म और कर्तव्य है कि भारत की विरासत धर्म और सांस्कृति की रक्षा करे। गंगा जी तो साक्षात् जीवित विरासत हैं। भारत के विरासत संरक्षण कानून के तहत इसे बचाना भारत सरकार और हम सबका दायित्व है। पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, नदी संरक्षण कानून तथा भारत के संविधान की धारा जी–52 की पालना में गंगा जी को बचाना सबसे पहला काम होना चाहिए। उक्त सभी बातों के साथ–साथ स्वयं प्रधानमंत्री जी द्वारा 2013–14 में चुनाव के दौरान और उससे पहले उनके द्वारा दिए गए आश्वासन को स्मरण कराना भी प्रो0 जी.डी. अग्रवाल जी ने जरूरी समझकर पहले भी उन्हें पत्र लिखें हैं। पत्रों का जवाब नहीं मिलने पर उन्होंने ऋषिकेश में आमरण अनशन किया। अन्न ग्रहण करना बन्द कर दिया। जब 109 दिन तक सरकार ने उनकी माँग पर विचार नहीं किया और ना ही उनके तीन पत्रों का कोई जवाब दिया तो उन्होंने भोजन के साथ–साथ जल लेना भी बन्द कर दिया। मरने से पहले उन्होंने कहा था कि मेरी आत्मा रामजी के दरबार में जाकर उनकी पूज्या गंगा को धोखा देने वाली सरकार को दण्डित कराएगी। वे चले गए, पंचमहाभूत निर्मित भगवान तो भगवान में ही मिल गया, लेकिन उनकी आत्मा अभी भी जीवित है। उनकी आत्मा तब तक जीवित रहेगी, जब तक उनका संकल्प पूर्ण नहीं हो जाता। उन्हें जब मोक्ष तब ही मिलेगा, जब उनकी चाहत पूर्ण हा जायेगी। आत्मा की मुक्ति ही तो मोक्ष होती है। वह उस क्षण तक सक्रिय रहती है जब तक वह अपने पुराने भगवान रूपी पंचमहाभूतों से निर्मित शरीर काल के संकल्पों को पूर्ण नहीं कर लेती। इसलिए मेरी आत्मा मेरा संकल्प संपूर्ण होने तक सक्रिय रहेगी। उन्होंने मुझसे कहा था कि आप सबको मेरी आत्मा अब सब को गंगा माँ की चिकित्सा पूरी कराने का स्मरण कराती रहेगी। मैंने उन्हें विश्वास दिया था कि मैं शेष जीवन में गंगा जी (नदियों) के पुनर्जीवन हेतु निरन्तर काम करता रहूँगा। शिक्षण, चेतना, गंगा संगठन, सत्याग्रह व गंगा की अविरलता हेतु संघर्ष ही मेरे जीवन

का लक्ष्य है। भगवान की समझ व शक्ति जितनी भी मिलेगी वह सम्पूर्ण गंगा जी में ही लगेगी। इस हेतु अभी मैंने व्रत धारण किया है कि "जब तक सरकारें गंगा जी की हरिद्वार से ऊपर की मुख्यधारा, धाराओं, उप–धाराओं पर भविष्य में बाँध नहीं निर्माण करने की अपने निर्णय की घोषणा नहीं करेगी, तब तक मैं अपने शरीर से बाल नहीं कटाऊँगा।" मेरा यह गंगा व्रत 29 सितम्बर 2018 से जारी है। इसी दिन प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल (स्वामी ज्ञानस्वरूप सानन्द जी) ने हमारी 'गंगा सद्भावना यात्रा' का शुभारम्भ किया था। हरिद्वार से गोमुख और गोमुख से गंगासागर तक यह यात्रा जनवरी 2019 को सम्पन्न हुई।

12 जनवरी को गंगा सागर से गंगा अविरल यात्रा आरम्भ हुई है। इन यात्राओं का लक्ष्य गंगा अविरल का अविरल सुनिश्चित कराने की सरकारी पहली सीढ़ी है। निर्माणाधीन बान्धों पर रोक लगे और नये बाँधों का काम अब शुरू नहीं होना चाहिए। हमारा अन्तिम लक्ष्य है कि गंगा जी पूर्ण शुद्ध–सदानीरा बनकर वही भारतीय गंगा–गौरव पुनः स्थापित करे। जिससे हम गा सकें "मैं उस देश का वासी हूँ, जिस देश में गंगा बहती है" यह बात हमारे मुँह से तभी निकलेगी, जब गंगा जी अपनी विलक्षण प्रदूषण नाशिनी शक्ति से प्रवाहित होंगी। इस अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने हेतु भावी बाँध निर्माण रुकें। सरकार को समझमें आ सके कि अविरलता के बिना निर्मलता सम्भव नहीं है। तभी सरकार नया निर्माण रोकेगीतथा तथा पुराना हटाएगी। हम अहिंसक सत्याग्रही हैं, इसी से हमें अपने संघर्ष में सफलता की सिद्धि प्राप्त करनी है। यही हमारी अविरल गंगा यात्रा का अन्तिम लक्ष्य है। इसी हेतु यह यात्रा पूरे भारत और दुनिया में चेतना जगाने का काम करेगी; जिससे कि हमारी सरकार पर लोकतान्त्रिक दबाव बने और सरकार गंगा की अविरलता हेतु काम करने लगे। भारत के सभी राज्यों– उत्तराखण्ड से लेकर गंगा के 12 राज्य पश्चिम बंगाल तक को इस कार्य में लगाने का प्रयास जारी है। उत्तर प्रदेश के बागपत, गाजियाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, बुलन्दशहर, हापुड़ मेरठ, मुजफ्फरनगर व सहारनपुर आदि गंगा के दोनों तरफ के सभी जिलों में अविरल गंगा हेतु सभाएँ, सम्मेलन आयोजित हुए। इसी प्रकार उत्तराखण्ड, झारखण्ड, बिहार, बंगाल, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में जो गंगा बेसिन प्रदेश हैं, इन सभी में 'जल बिरादरी' द्वारा 'जल जन जोड़ो अभियान' चलाकर लोगों को गंगा अविरलता हेतु तैयार किया है। गंगा बेसिन के बाहर भी तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल तथा पाण्डिचेरी आदि सभी दक्षिण भारतीय राज्यों में विविधत सम्मेलन एवं शिविर आयोजित हुए हैं।

10 मार्च से 11 मार्च तक उत्तर पूर्वी राज्यों के लोगों से गंगा की बातें की हैं। 10 से 11 को असम में सम्मेलन किया है। इसमें सभी उत्तर पूर्वी राज्यों

के कार्यकर्ता गुवाहाटी में आकर मिले। इन्हें नदियों को समझने–सहेजने तथा बचाने हेतु काम करने के गुर सिखाए । इस शिविर में विभूति आदि ने उत्तर पूर्व में गंगा कार्य करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। 12 मार्च को तमिलनाडु में ऐसा ही शिविर किया है। 8 से 9 को कर्नाटक में कार्यकर्ताओं को तैयार करने का काम किया है। सभी जिलों से आए वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने विश्वास दिलाया है कि वह नदी पुनर्जीवन का काम करेंगे।

12 से 13 को तमिलनाडु के कार्यकर्ताओं ने भी गंगा अविरलता का संकल्प लिया है। इन्होंने अपनी नदियों को समझने–सहेजने के साथ–साथ गंगा अविरलता हेतु काम करने का निर्णय भी लिया है। मदुरई सम्मेलन के बाद चेन्नई में भी सम्मेलन हुआ। यहाँ अड्यार नदी बचाने के साथ कूवमकुदमवाकम नदी संगठन बनाने की प्रक्रिया शुरू की है। इस काम को करने की जिम्मेदारी गुरु स्वामी, दिया, वन्कटेश, नन्दकुमार सर्वसनक, स्नेहलता आदि ने मिलकर ली है। इसके बाद तमिलनाडु सद्भावना सम्मेलन के साथियों को भी गंगा अविरलता में लगाने का संकल्प हुआ। यहाँ से यूरोप यात्रा शुरू की। यूरोप के पाँच देशों फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, स्विजरलैंड तथा स्पेन आदि देशों के कार्यकर्ताओं से बेल्जियम में बातचीत करके नदी अधिकार हेतु आन्दोलन चलान का तय किया। फिर वापस भारत आकर सीधे महाराष्ट्र के आदिवासी जिले पालघर में पाणेरी नदी बचाने व बडेरी ताल पुनर्जीवित करने का निर्णय हुआऔा काम शुरू किया। यहाँ 2 दिनों में समुंदर किनारे तक पाणेरी के उद्गम से संगम तक की सम्पूर्ण यात्रा के बाद माहिम पंचायत घर में सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में बतायाकिपाणेरी की अविरलता गंगा जी की अविरलता से जुड़ा सवाल है। भारत में नदियों के पर्यावरणीय प्रभाव की नीति व कानून बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसलिए महाराष्ट्र व राजस्थान सभी जगह गंगा जी हैं। मूल गंगा हिमालय से आरम्भ होकर समुद्र में मिलती है। उनके लिए अविरलता नीति बन जाएगी तो देशभर की सभी नदियों को बचाने का एक जैसा ही व्यवहार और कानून बन जाएगा। इस पर सभी की सहमति बन गई। सभी ने मिलकर एकमत होकर संकल्प लिया। महाराष्ट्र ने नीर पुनर्जीवन कार्य करने की जिम्मेदारी के लिए किशोर धारिया, राहुल तिवरेकर, नरेंद्र चुघ, विनोद बोधनकर के साथ जयसम्भव आदि स्थानीय साथियों ने बहुत उत्साह पूर्वक निर्णय किया। यहाँ से फिर कर्नाटक जाकर वहाँ के कार्यकर्ताओं के साथ 26 को पुनः सम्मेलन किया। पिछले प्लान को क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी देना, समूह निर्माण करना आदि लिखित कार्य पूरे किए। यहाँ से सीमांकित के जिला कोल्हापुर साँगली के साथियों से बातचीत की। 26 की रात को इचलकरंजी में सम्मेलन किया।

27 को कोल्हापुर विश्वविद्यालय में पंचगंगा पुनर्जीवित करने की योजना

बनाई। यहाँ से बिहार पटना गया। पटना विश्वविद्यालय 102 वर्ष पुराना है। इसमें 50 वर्ष से विद्यार्थी शिक्षक अब कुलपति के रूप में काम करने वाले रासबिहारी सिंह जी के साथ गंगा अविरलता हेतु काम करने का आह्वान किया। उनका पुराना बढ़ा सीनेटहॉल शिक्षकों व विद्यार्थियों से पूरा भरा हुआ था। इन्हें संबोधित करके संकल्प दिलाया। यहाँ रवीन्द्र सिन्हा नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ भी गंगा अविरलता का सम्मेलन करने को कहा। ये दोनों विश्वविद्यालय मिलकर गंगा अविरलता हेतु सम्मेलन करने को तैयार हुए। यहाँ से मैंने मध्य प्रदेश इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। मध्यप्रदेश में क्षिप्रा नदी की प्रकार पर सामाजिक विज्ञान संस्थान में सम्बोधन दिया। राजीव पहावा, पुष्पेन्द्र मिश्र, रवीन्द शुक्ला आदि ने उत्साहजनक भागीदारी लेने को कहा। उज्जैन तथा इन्दौर के पुराने दर्जनों साथियों से आज मिलना हुआ। मैंने इन्हें गंगा के साथ हुए अन्याय की कहानी भी बताई। हमने कहा गंगा यात्रा आज उज्जैन आई है, क्षिप्रा और गंगा मिलन हुआ है। अब हम सबको मिलकर नदी बचाने का अपना अभियान और आन्दोलन चलाने की जरूरत है। इस कार्य में पूरा भारत एक होकर भारत की सभी नदियों को बचाने में जुटने का आह्वान किया। राजीव पहावा, सुधीन्द्र मोहन, सन्दीप चतुर्वेदी, पुष्पेन्द्र वर्मा आदि ने छपरा पर काम करने का संकल्प लिया। यह संगठन गंगा जी के काम में भी उसी मुस्तैदी से जुटेगा, ऐसा मुझे आश्वासन दिया। पानी पर्यावरण की सच्ची चिंता उक्त सभी को है। क्षिप्रा–गंगा में अविरलता और पर्यावरणीय प्रवाह दिलाने का कोई काम नहीं हुआ है। उसी दिशा में चेतना जगाने हेतु राजीव पहावा ने सभी को बुलाया। अच्छी बातचीत हुई। अच्छे संकल्प भी हुए। यहाँ काम भी अच्छा होगा। उम्मीदों के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ। रातभर सफर करके त्रिवेन्द्रम पहुँचा। यहाँ से कार से सुबह अललफड कोलम जिला पहुँचा। यहाँ 150 दिन से समुद्र कटाव से बचने हेतु खनन रुकवाने के लिए आन्दोलन चल रहा है। इस आन्दोलन के 150वें दिन मुझे यहाँ बुलाया है। मैंने यहां के आन्दोलनों को गहराई से समझ कर इसमें जुड़ने का अपना संकल्प सुनाया। इस विषय पर एक लेख भी लिखा।

अलपाड आन्दोलन को गंगा अविरलता आन्दोलन में जोड़ने का आह्वान किया। आनन्दमयी माँ से भी मिला। उन्हें भी गंगा आन्दोलन की संक्षिप्त जानकारी मैंने दी। इस पर यह मोन रही। यहाँ से मैंने कर्नाटक हुबली की यात्रा करके गदक पहुँचा। गदक में 2 अप्रैल को ग्रामीण विकास विश्वविद्यालय में भाषण दिया। सभी गंगा का जल गाँव में प्रबन्धन–संवर्धन करके ही ग्राम स्वराज की कल्पना साकार कर सकते हैं। गाँव की मिट्टी गाँव में, गाँव का पानी गाँव में, गाँव में बने खाद–बीज का संरक्षण किया जाए। ग्राम स्वाबलम्बन बनेगा तो फिर आएगा ग्राम स्वराज। भारत गाँवों का देश है। जब तक गाँव

में गाँव के लोगों को रोजगार नहीं मिलेगा। तब तक ग्राम स्वराज नहीं होगा। ग्राम स्वराज बापू की कल्पना थी। उस पूरी कल्पना को मैंने सभी को समझाया। कुलपति, कुलसचिव, शिक्षक और विद्यार्थियों सभी ने मेरा पूरा भाषण सुना। भाषण के बाद इन्होंने अपना नया कैंप भी मुझे दिखाया। मैंने कैंप को पानीदार बनाने के अपने सुझाव दिए। वर्षाजल पूरे कैंपस में रुकना चाहिए। इस निर्णय के साथ वापस कृषि विज्ञान केंद्र होल कोटि में जाकर सो गया। कोठी से फिर 3 अप्रैल सुबह गदक होते हावेरी से हुबली पहुँचा। हावेरी में बहुत से लोगों से मिला। कैसे क्या करें कर्नाटक को दुष्कल मुक्त बनाने हेतु ? इस विषय पर गृहमन्त्री एम.बी. पाटिल तथा हावेरी प्रभारी मन्त्री से मिला। इनसे भी गंगा के विषय में वार्ता की। गंगा अविरलता के लिए प्रधानमन्त्री ने कैसे झूठ बोलकर धोखा दिया है। इस विषय पर लम्बी अच्छी बातें हुईं। इस बार की यात्रा में दक्षिण भारत के सभी राज्यों में गंगा को मिला धोखा व झूठ। सत्याग्रहियों को मरवाने की सच्चाई को विस्तार से समझाने में सफलता हुई है। इसका असर लोगों पर दिखाई दिया है। गंगा को धोखा देने वालों को दक्षिण भारत के लोग दण्डित करेंगे ऐसी उम्मीद है।

4 अप्रैल को दिल्ली में मीडिया के साथियों एवं अपने साथियों से गंगा सत्याग्रह की योजना पर चर्चा की। शाम को संवाददाता सम्मेलन में गंगा अविरलता व पानी–पर्यावरण से सम्बन्धित जन घोषणा पत्र जारी किया जो हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मीडिया को सौंप दिया। इस पर पत्रकारों के साथ अच्छी बातचीत हुई। इसे जागरण जैसे अखबार ने भी प्रमुखता से प्रकाशित किया। गंगा में चल रहे भ्रष्टाचार पर भी विस्तार से बात हुई। अविरलता के लिए सरकार क्यों काम नहीं करना चाहती ? क्योंकि बड़े बाँध बनाने वाली कम्पनियों का सरकार पर प्रभाव है। इसीलिए वे सरकारों व राजनैतिक दलों का ध्यान नीर–नारी–नदी के जीवन पर नहीं जाने देती है। हमने आज नीर–नारी–नदी का पर्चा भी यहाँ जारी किया है। इन्दौर से जानापाऊ पहाड़ पर पहुँचे। यहाँ से 15/2 नदियों का उद्गम है। यह ऊपर से सपाट पहाड़ हैं। यही परशुराम जी की जन्मस्थली मानी जाती है। नदियों को पुनर्जीवित कैसे करें? इस सम्मेलन में 2 घंटे की प्रस्तुति हुई। यहाँ जामिया के महाराजा भी आए थे। अच्छी सभा हुई। मीडिया भी था। मैंने कहा– अब राजनेताओं की आँखों में पानी नहीं बचा है। जब आँखों का पानी सूखता है, तब धरती और नदियाँ भी मर जाती हैं। यहाँ की सारी नदियों के सूखने का सबसे बड़ा कारण है, पहाड़ों का नंगा होना। ऊपर न तो मिट्टी है और न ही पानी। वर्षा में पूरी मिट्टी कटकर बह जाती हैं। पेड़ पानी का बाप है, धरती पानी की माँ है। जब माँ और बाप दोनों बीमार हो जाते हैं तो नदी (संतानों) की चिंता नहीं बचती है। ऐसा ही कुछ हुआ है यहाँ, और पूरे भारत में गंगा

की जलधारा सूख गई है। अब इसे बचाने हेतु पर्यावरणविद् काफी प्रयास कर रहे हैं, पर सरकार सुन ही नहीं रही है। पूरे भारत में इस हेतु आन्दोलन करने की जरूरत है। इसीलिए मैं 'गंगा अविरलता आन्दोलन' में आप सबका सहयोग चाहता हूँ। आप इस काम में मदद करें। ज्यादातर लोगों ने सहयोग करने की सहमति दी। यहाँ सत्ताधारी दल के नेता भी थे, पर उन्होंने तो कोई टिप्पणी भी नहीं की। सहयोगियों को वचन भी नहीं दिया। जनता का सहयोगी वचन पाकर मैं यहाँ से छत्तीसगढ़ रायपुर होते हुए लालपुर पहुँच गया।

6 मार्च नवरात्रा स्थापना दिवस पर बिलासपुर में वैज्ञानिकों व इंजीनियरों का सम्मेलन एनटीपीसी के हाल में हुआ। इसमें मैंने शोषणकारी शिक्षा के दुष्प्रभाव बताते हुए पोषणकारी शिक्षा की जरूरत पर ध्यान दिलाया। हमने राजस्थान में कैसे नदियों को पुनर्जीवित किया? उस अनुभव को बाँटा। पूरे 2 घण्टे में इन्होंने कोई सवाल नहीं पूछा। मैंने जरूर इनसे सवाल पूछते हुए कहा– गंगा की अविरलता हेतु 600 करोड़ रुपए की हानि एन.टी.पी.सी. ने भुगती है, यह अच्छी बात है। 2010 में लोहारी नागपाला, पालामनेरी व भैंरूघाटी प्रोजेक्ट रद्द होने की हानि एन.टी.पी.सी. ने ही उठाई थी; पर इससे हानि नहीं, बल्कि एक नया शिक्षण हुआ है। लोग अब पूछते हैं, ऐसा क्यों हुआ है? हम लोगों को समझाते हैं। उन्हें सभी कुछ समझ में आता है। गंगाजल की विशिष्टता उसकी सिल्ट में है, बाँध बनने पर वह नीचे बैठ जाती है। इसीलिए तत्कालीन सरकार ने वे बाँध अविरलता हेतु रद्द किए थे। इस अविरलता की चल रही चेतना यात्रा में यह उदाहरण हमें बहुत मदद करता है। इस संगठन को भी यह सकारात्मक रूप में ही लेना चाहिए।

शाम को बिलासपुर की जनता को सम्बोधित किया। इसमें ज्यादातर महिलाएँ ही आई थीं। इन्हें भी नदी, नीर और नारी का रिश्ता समझाया। मानव और नदी स्वास्थ्य का क्या सम्बन्ध है? नदी के स्वास्थ्य के लिए अविरलता क्यों जरूरी है? यह विस्तार से समझाया। जैसे हमारी शिरा और धमनियाँ दोनों को ही निरन्तर रक्त प्रवाह चाहिए, उसी प्रकार हमारी धरती की धमनियाँ नदी हैं, जो अविरल प्रवाहित रहने चाहिएँ। इनकी बाधाएँ इन्हें बीमार बना देती हैं। बीमार नदी का जल हमारे शरीर में जाकर हमें बीमार बना देता है। इसलिए नदियों का शुद्ध–सदानीरा होना जरूरी है। इस दिशा में हमें मिलकर काम करना है। इस सभा के बाद आन्ध्रा, विशाखापट्टनम पहुँचा। सत्या बुलशैट्टी के घर पर मिला। यह हमारी जल बिरादरी के राष्ट्रीय समन्वयक हैं। दक्षिण का काम दिल्ली से जुड़कर करते हैं। इनके साथ भारत सरकार के पूर्व सचिव ई.ए.एस. शर्मा आई.ए.एस. व उनकी पत्नी के साथ लम्बी बातचीत हुई। वे पानी–पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्षरत हैं। इनके कुछ साथी भी आए। सभी ने मिलकर विशाखापट्टनम की पुरानी पोट बीमुनि पट्टम के तालाब देखे। दिनभर

तालाबों पर अतिक्रमण–प्रदूषण व जल–शोषण के कारणे सूखते तालाब देखे। बहुत बर्बादी हैं। यहाँ भी मैंने 'नदी, नीर और नारी' का पत्रक जारी किया। गंगा सद्भावना यात्रा की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। यहाँ प्रोफेसर विक्रम सोनी से भी लम्बी बातचीत हुई। इस बातचीत में राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने बहुत खास निर्णय दिया है। मैं इस केस का याचिका कर्ता हूँ। जजों ने निर्णय दिया कि सरकार से 100 करोड़ रुपये वसूलने तथा 10 हजार करोड़ रुपये की जो हानि हुई है, उस हानि की भरपाई होनी चाहिए। इस आदेश द्वारा हुई हमारी जीत को देखते हुए संवाददाता वार्ता आयोजित की गई। इसमें मैंने अपनी बात रखी। संवाददाता वार्ता में बहुत से सवालों का जवाब देते हुए मैंने कहा– 2019 में हमें ऐसे ही लोगों को चुनना चाहिए, जो प्रकृति व पंचमहाभूतों (भगवान) के साथ प्यार और सम्मान का रिश्ता रखते हों तथा नदी, नीर और नारी' का सम्मान करते हों। हमें लालची विकास नहीं चाहिए, क्योंकि इसमें हमारे ज्ञान हरियाली और आवास प्रकृति और पर्यावरण सभी का विस्थापन हो रहा है। यह विस्थापन हमें प्रकृति बिगाड़ के रास्ते पर चलाता है और अन्त में बाढ़–सुखाड़ से विनाश होता है। इस विकास के नाम पर होने वाले विनाश को रोकने का संकल्प लेकर जो वोट माँगता है, यदि वह चुनाव के बाद अपनी बात पूरी नहीं करे तो बाद में उसे पकड़ सकते हैं। वोट हमारी शक्ति का हस्तान्तरण हैं, हम वोट देकर अपने अधिकार की शक्ति उसे सौंप देते हैं। शक्तिशाली बनकर वह उस अधिकार का दुरुपयोग नहीं करे, इस बात का हम ध्यान रखें।

आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री को आपने कृष्णा नदी की हत्या करने के लिए नहीं चुना था। उसने कृष्णा नदी में अपना घर निर्माण करके खनन द्वारा नदी को मरवा दिया है। इसीलिए हरित न्याय प्राधिकरण ने उसे दण्डित कर दिया है। हम चाहते हैं कि अब आन्ध्र में नदी की हत्यारी सरकार चुनकर नहीं आए। यहाँ ऐसी सरकार बने, जो नदी और मानवता को समान अधिकार देकर, इनकी रक्षा करे। अभी तक हुए विनाश को रोककर नदी को पुनर्जीवित करने में जुटे अमोल गांधी और सत्या ने कृष्णा नदी को बचाने के लिए जी–जान लगाकर काम किया है। सरकार ने हम सभी को बहुत डराने धमकाने का काम किया, लेकिन बिना डरे काम का परिणाम है कि इस सरकार को हरित न्याय प्राधिकरण ने दण्डित किया है, क्यों कि दोषी या अपराधी से अपराध होने पर हानि की क्षतिपूर्ति करने का आदेश है। अभी तक की प्राथमिक रिपोर्ट के अनुसार दस हजार करोड़ की हानि हुई है जबकि वास्तविक हानि इस से 10 गुना अधिक है। अभी केवल तकनीक और भौतिक रेत खनन की हानि की गणना ही इस रपट में है, जबकि पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय हानि तो बहुत बड़ी है। इससे बचने हेतु अभी उचित समय है। हमें मिलकर लालची विकास के झूठे नारों–वायदों से बचकर सच्चा काम करने की जरूरत है।

सच्चा काम है, सृष्टि–प्रकृति को पुनर्जीवितन करना। इस काम को भौतिक विज्ञान तकनीक और इंजीनियरिंग नहीं कर सकती। यह तो मौलिक भारतीय पारम्परिक ज्ञानतन्त्र से ही सम्भव है। जब हम अपनी सुविधाओं के क्षणिक सुख के लालच में फँसते हैं, तब जल्दी सुविधा देने वाला काम हमारी प्राथमिकता बनता है। जैसे हमने अधिकतम प्रकृति शोषण की तकनीक तो सरलता से सीख ली। प्रकृति के भण्डारों का पता लगा लिया। जब हमें पता चला धरती के पेट का पानी जलकर ऊर्जा भी दे सकता है तो हमने उसी पानी को अलग–अलग नामों से डीजल–पेट्रोल के रूप में गाड़ियों के लिए उपयोगी बना लिया। उसका बेतहाशा शोषण शुरू हो गया। नई–नई गाड़ियाँ बनने लगी। इसको ऊर्जा स्रोतों के रूप में अत्यधिक काम में लेने से धरती को बुखार चढ़ गया। धुआँ से मौसम का मिज़ाज़ बिगड़ने लगा। इसे ही जलवायु परिवर्तन भी कहते हैं। इसके प्रभाव से बेमौसम वर्षा होने लगी। किसान वर्षा के चक्र से कट गया। उसे इसकी पहचान भी नहीं रही। इसलिए फसलों की बुवाई से लेकर पकने तक धरती के पेट से पानी निकालकर उपयोग करने लगी। इससे हमारी धरती का पेट खाली हो गया। फलस्वरूप सुखाड़ आ गया। सुखाड़–बाढ़ दोनों बढ़ने लगे। इस काम में नदियों के खनन ने कैंसर में कोढ़ की बीमारी पैदा कर दी। इस बीमारी का इलाज विज्ञान और तकनीक में सम्भव नहीं है। हमें नदियों की बीमारी को समझ कर बीमारी के मूल कारण खनन को रोकना होगा। हरित प्राधिकरण न्यायालय का निर्णय बहुत अच्छा है। उसकी पालना कराना अब समाजिक कार्यकर्ताओं व पर्यावरणविदों की जिम्मेदारी है। इस पर प्रोफेसर विक्रम सोनी, राणी ऐवीएस, अमृता आदि से लम्बी बातचीत के बाद इस निर्णय को पूरे देश में क्रियान्वित कराने का प्रयास करना है। देश के सभी राज्यों में जाकर राजधानी एवं अन्य प्रमुख स्थानों पर प्रेस आयोजित करके काम शुरू किया है। पहले पटना फिर दिल्ली, शिमला से चेन्नई जाना चाहिए। बैंगलूरू एक बार और जाया जाए। इस प्रकार पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करके मैंने पटना हेतु प्रस्थान किया।

मेरे पास जाने–आने का साधन व्यवस्था नहीं है, इसलिए मैंने बुलावे के अनुसार नहीं, अपनी सुविधा अनुसार आमन्त्रण स्वीकार करना तय किया। उत्तर भारत व पूर्वोत्तर दक्षिण भारत में चुनाव से पहले एक बार पूरे देश में प्रकृति और पर्यावरण करने वालों की समझ, कुशलता, दक्षता पढ़कर भयमुक्त करने वालों को चुनकर लाने का आग्रह करना है। 8 को विशाखापट्टनम से दिल्ली होते हुए 9 को पटना पहुँचकर बिहार की बाढ़–सुखाड़ मुक्ति हेतु जल प्रबन्धन सम्मेलन का उद्घाटन किया। बिहार सरकार गंगा अविरलता हेतु प्रतिबद्ध है। इस सरकार को अपने राज्य को बाढ़ सुखाड़ मुक्ति के उपायों पर अपने इस चुनाव में बातचीत बढ़ाने हेतु आगे आना चाहिए। इनके घोषणा पत्रों में केवल

वोट खींचने की विधि ही है। हमने सारे भविष्य को सुरक्षित एवं बेहतर बनाने वाले विषय पर बहस चलाने का प्रयास किया है।

दूसरा लेखा

केरल में विकास और प्रतिरक्षा के नाम पर विकास अधिक हो रहा है। यहाँ गार्डगिल कस्तूरी रंगन की सरकारी रपट को सरकार ने वेस्टर्न घाट और समुद्र के सम्बन्धों को बनाए रखने से नकार दिया है। यहाँ तो बहुत ही अनर्थ हो रहा है। मैंने 150 दिन पूरे होने वाले सम्मेलन में कहा यह केरल पंचायती राज की बड़ी जीत का उदाहरण बन सकता है। यहाँ की पंचायत उच्चतम न्यायालय में जाकर लड़ेगी तो जीतेगी। इस काम में गुरु स्वामी और संजय पारीक मदद कर सकते हैं। ये जनहित में निःशुल्क केस लड़ने वाले वकील हैं। मैं उनसे सम्पर्क करके निवेदन करूंगा। अपने पूरे भाषण में सरकारी सुरक्षा और विकास के नाम पर हो रहे विनाश को रोकने का काम आप करें। मैं भी आपके साथ हूँ। आप लड़ेंगे तो जीतेंगे।

150वें आन्दोलन दिवस पर उन्होंने अच्छा संकल्प लेकर आन्दोलन जारी रखने एवं उच्चतम न्यायालय में लड़ाई आरम्भ कराया है। सनैल जो कि पूरी दुनिया में मोटरसाइकिलिस्ट रहा, यात्रा करने का सपना देखता है। भारत में भ्रमण करके भारत को भ्रष्टाचार मुक्त एवं प्रकृति शोषण मुक्ति का काम सीख रहा है। केरल में अच्छी बात करने वाले अच्छे लोग हैं, लड़कर जीतने और हारने वाले भी हैं। हाथों से काम करने वालों की संख्या कम है, दिखते ही नहीं हैं। यहाँ लिखने पढ़ने का काम बहुत तेजी से होता है। 200 कम्पनी नौकरों को रोजगार देने के नाम पर दो बहुत बड़ी पंचायतों के 25 हजार व्यक्तियों की अनदेखी करना ठीक नहीं है। 150 दिन से हिंसक आन्दोलन चल रहे हैं। यदि इन्हें नहीं सुना तो यह औरभी ज्यादा हिंसक बन सकता है। अब कोई महात्मा गांधी जैसे नेता नहीं है, जो हिंसक आन्दोलन को अहिंसक बना सके। अहिंसक को हिंसक बनाने बाली भीड़ बड़ी है। इसलिए मुझे इसका भविष्य ऐसा दिखता है। आयामी उदघोषक हैं, युवा महिला कार्यकर्ता हैं, जय मोहन पुराने कार्यकर्ता हैं, एक पंचायत में 16 वार्ड गाँव अलग–अलग बसे हैं। टी.एस. कैनाल और समुद्र के बीच 16 गाँव एक पंचायत की 25 हजार जनसंख्या का जीवन कष्ट बढ़ रहा है।

आज साइट पर जाकर जब देखा तो मशीनें मेग्रो के प्राचीन जंगलों को उखाड़ कर समुंद्र की तरफ से उखाड़ कर लेक की तरफ डालकर मिट्टी में दबा रहे हैं। यहाँ कई खास खनिज निकलते हैं। थोरियम, यूरेनियम, लड़ाकू हवाई जहाजों के निर्माण की सामग्री कई खास अन्य खनिज भी एटम बम निर्माण में काम आती हैं। एटॉमिक एनर्जी की जरूरी सामग्री है, लेकिन लाभ भारत को बहुत कम मिल रहा है। गतवर्ष कुल 200 करोड़ की बचत केरल कम्पनी को हुई

है। भारत सरकार की रक्षा कम्पनी होने के कारण लाभ बताती नहीं है। पीएस कर्नल त्रिरांगुर, कैनाल, नेशनल वाटर वैज घोषित किया। 1200 सौ करोड़ मंजूर किया। काम चालू है। 87.50 किलोमीटर था अब कुल 7.50 किलोमीटर ही है। चेरियणीक्कल गाँव में मंदिर के पास 'आलिपयाड बचाओ आंदोलन' 150 दिन अजहीक्कल तालुका में चल रहा है। समुद्र और कैनाल ने इस गाँव को बाँध दिया है। 80 वर्ग किलोमीटर भूमि समुद्र ने पचा ली है। 1955 से आज चन्द्रबाबू गांधीदास, मोहनदास, हुसैन, सहेनवा, अजिना, अदीसा सुनामी में सबसे ज्यादा लोग चेरियषीक्कूल गाँव में मरे थे।

केरल में अप्रैल–मई में देवी उत्सव है। यहाँ दुर्गा पूजा का उत्सव बहुत जोरों से मनाया जाता है। के.सी. श्रीकुमार आन्दोलन के विषय में गलत पद्ध ति थी, कम्पनी आन्दोलन चलवा रही है। पर्यावरणीय सवाल समझा पाए। ऑस्ट्रेलियन कम्पनी ऑस्ट्रेलियन सैण्ड 1994 दोनों कम्पनी रनिपस कम्पनियों को यहाँ लगाया। रेचर रेन को विदेश में भेजने के लिए सरकार राजनेताओं को मिलकर दोनों कम्पनियों को मछुआरों ने बाहर कर दिया। 1997 में भारत सरकार ने ग्लोबल टेंडर बुलाया था, उस समय भी उसके विरुद्ध लोकल लोगों ने ग्लोबल टेण्डर को चलने नहीं दिया

केरल सरकार ने काम शुरू किया। अरान्टापुरा 2002 में वहाँ भी निजी कम्पनी को लेकर आया, जन सुनवाई हुई, खनन करने की स्वीकृति दे दी। काम शुरू हुआ, हमें विदेशी कहा, विदेशी कम्पनियों को मदद करने हेतु आन्दोलन किया। सोशल मीडिया ने इस मुद्दे को बाहर फैलाया। हमारे सोशल मीडिया की मदद से हम अपने आन्दोलन की सच्चाई समझा पाए

पुलिस, सरकार सारे विभाग इस आन्दोलन के विरुद्ध हैं। कोई साथ नहीं देता। पंचायत में खनन पर्यावरणीय स्वीकृति के बिना ही चल रहा है। चुनाव चल रहा है, चुनाव ने इस मुद्दे को नहीं उठने दिया। झोंपड़ी हटाने की धमकियाँ मिल रही हैं। अब लोग यहाँ की वास्तविक चुनौतियों को समझते हैं, तो आन्दोलन के साथ जुड़ जाते हैं; अन्यथा सभी सरकारी खेल में फँस जाते हैं। यह आन्दोलन अलपाड की जमीन बचाने के लिए है। पहले यहाँ की भूमि 87.50 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली थी, अब यह घटकर कुल 7.50 वर्ग किलोमीटर बची है। यह सब 1955 से 2019 तक हुआ है। 2000 में सुनामी की सबसे ज्यादा मार इसी क्षेत्र में हुई थी। आई.आर.ई. भारत सरकार चावरा 500–600 ट्रिपल सेंड के.एम.एम.एल. केरल सरकार टेकिंग सेंड – यह मेटेरियल सुरक्षा से सम्बन्ध रखती है। सिद्धन अल्लपाड जिला कॉलम के रहने वाले हैं। ये अपनी जमीन खो रहे हैं। सरकार से यह बहुत नाराज हैं। इन्होंने 30 वर्ष पहले आन्दोलन शुरू किया था। बहुत से स्थानों पर यह हो चुका है, लेकिन सरकार इस पर विचार नहीं कर रही है। योगीसरन टी. एस. कैनाल का हिस्सा है। यह

छोटी नदी समुद्र की खाड़ी है। यह आन्दोलन ज्ञापन दे चुकी है, लेकिन भारत सरकार और केरल सरकार दोनों ही ध्यान नहीं दे रही हैं। केरल खनिज को गत वर्ष 200 करोड़ का लाभ हुआ। भारत सरकार की कम्पनी सुरक्षा से सम्बन्ध रखती है, इसलिए लाभ–हानि घोषित नहीं करती है। सुरक्षा से सम्बन्ध होने के कारण एक कुछ भी समाज से बातचीत नहीं करते हैं। अर्थ से रेयर मैटेरियल निकाल रहे हैं। थोरियम एक एटमिक मैटेरियल है, लेकिन भारतीय सुरक्षा के लिए ऐकिसनल एरिया यह भारत का सबसे गहरे कटाव कड्डलमा समुद माता है, भगवान है। इसके बीच में दोनों सरकारी कम्पनियों ने हड़कम्प मचा दिया है। पुरुषत्व भाव से इस पर अतिक्रमण, प्रदूषण व खनन करके इसका शोषण कर रहे हैं। मछुआरे समुद्र पुत्री और उसकी माँ कड्ड लम्मा के विषय में विचार नहीं कर रहे हैं। मछुआरे निराश हैं, लेकिन लड़ रहे हैं। ये पर्यावरणीय कानूनों की अवहेलना कर रहे हैं। राजनीतिक दल भी कम्पनियों के संरक्षण में लगे हैं। कोई भी मछुआरों के विषय में विचार नहीं कर रहे हैं। राजनीतिक दलों को भी कम्पनी हित नहीं दिखता है

भारत जल गुरु था

भारतीय लोग अपने अतिथि के सम्मान से लेकर अपने जीवन के सभी संस्कार जल से ही करते हैं। जन्म से लेकर मरण तक की सभी क्रियाएँ जल द्वारा सम्पादित करने वाला भारतीय, जो जल को जीवन और जीवन का संकट हरण करने वाला भी मानता है। धरती से आसमान तक के सभी जुड़ाव भी जल से ही मानता है। भगवान को भी जल से ही निर्मित मानता है। पंचाक्षरा भगवान शब्द 'भ' से भूमि, 'ग' से गगन, 'व' से वायु, 'अ' से अग्नि, और 'न' से नीर है। नीर (जल) ही अन्य भगवत महाभूतों का योग करके सभी जीवां का निर्माण करता है। इसी से इनका संचालन और संवर्धन होता है। यही भारतीय विज्ञान और ज्ञान है। जल से बना जहान है। वर्तमान ब्रह्माण्ड को जल ने ही अन्य तत्वों के साथ मिलकर बनाया है। इस विश्वास के साथ बना भारतीय ही आज बेपानी बनता जा रहा है। प्यासे मरते जीव–जगत और इंसान को देख कर भी आज भारतीय की आँखों से पानी निकलना बन्द हो गया है। उसका हृदय नहीं पसीजता। ऐसा क्यों हो गया है आज ? भारत की सभ्यता और संस्कृति की आधारभूत भारत की माँ गंगा बीमार होकर मरणासन्न है। माँ की बीमारी ने कानपुर से कन्नौज के बीच सबसे ज्यादा कैंसर रोगी बना दिए हैं। फिर भी हम अपनी माँ की असली बीमारी अविरलता को भूल कर निर्मलता के नाम पर घाट निर्माण करने में जुट गए हैं।

हमारी माँ गंगा जी हृदय रोग से ग्रसित हैं, लेकिन इनका इलाज दाँतों का चिकित्सक कर रहा है। अब तो गंगाजी ही बेपानी हो गई हैं, तब भारत कैसे पानीदार रहेगा ? दिल्ली जैसा शहर तालाबों, कुइयों से भरा हुआ था।

पचकुँइयाँ रोड पर पाँच कुँइयाँ थीं। हौजखास जल का झालरा और टैंक था। खारी बावड़ी भी बावड़ी ही थी। पूरी राजधानी में सैकड़ों ताल, हजारों जोहड़, लाखों कुएँ और बावडियाँ थीं। कहाँ चली गयीं सब ? हम नयी सुविधाओं के लालची हैं, इसी लालच को हम विकास कहते हैं। विकास की शुरुआत विस्थापन से होती है। पहले हमारे ज्ञान का विस्थापन होता है, फिर पुरानी परम्पराओं और परम्परागत जल संचनाओं का। हमारी प्राचीन जल संरचनाओं को हमने उजाड़ दिया, विस्थापित कर दिया, ये सभी सनातन थीं। ये सदैव नित्य नूतन निर्माण प्रक्रिया से निर्मित हुई थीं। पहले इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार से लाख, करोड़ बनीं। भारत में समुदायिक विकेंद्रित जल प्रबन्धन में करोड़ों जल संरचनाएँ निर्मित हुई थीं। आज ये सभी नष्ट होती जा रही हैं। कौन नष्ट कर रहा है ? हमारी सुविधाओं का लालच। लालची विकास ने इन्हें नष्ट कर दिया है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक 'ताल, पाल और झाल' जैसी पंचांग जल संरचनाएँ थीं। जहाँ से वर्षा–जल इकट्ठा होकर आता था, उसे 'आगोर' कहते थे। जिस रास्ते से आता था, उसे 'नाला' या नाली तथा जहाँ जल इकट्ठा होता था, उसे 'आगर' कहते थे। पानी को इकट्ठा करने के लिए बनाई गई मिट्टी की दीवार को 'पाल' कहते थे और पाल सहित पूरे भराव क्षेत्र को 'ताल' कहते थे। जल के भराव की सीमा से अधिक होने पर जहाँ से जल बाहर निकलता था, उसे 'अपरा' कहते हैं। इसे प्राकृतिक रूप से ऊँचे स्थान पर बनाते थे। कभी–कभी पानी को इकट्ठा करने के लिए जब इसे नाले या नदी के बीच में बना कर एक सीमा तक पानी भरकर बाहर निकालते थे, तब इसे 'झाल' कहते थे। भारत की बाढ़ व सुखाड़ मुक्ति का यही सनातन उपाय था। हम बाढ़ कंट्रोल नहीं करते थे, बल्कि उसका सहवरण करने वाली संरचनाओं का निर्माण करते थे। आज इससे उल्टी सोच, दिशा और दृष्टि बन गई है। अब हम बाढ़ नियन्त्रण विभाग बनाते हैं, इनसे बाढ़ नियन्त्रण होती नहीं है; बस, बाढ़ प्रभावितों को राहत पहुँचाने के काम को ही नियन्त्रण कह देते हैं।

'ताल, पाल और झाल' जैसी संरचनाएँ बाढ़–सुखाड़ सहवरण के लिए होती थीं, जो अतिवृष्टि के समय जल को सहेजती थी और दुष्काल के समय भू–जल पुनर्भरण करती थीं। इस सतही जल से या अधो भू–जल, भूजल और पाताल के जल से हम बिना उजड़े अपना जीवन चला लेते थे। इसीलिए दुष्काल में भी हमारे भू–जल भण्डार रिजर्व जल बैंक से पूर्ण रूप से भरे रहते थे। अब हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों ने हम भारतीयों को समझा दिया कि भू–जल बैंक कभी खाली नहीं होते। इसलिए आज पेयजल से लेकर खेती, उद्योग सभी कुछ भू–जल पर ही टिका है। आज 72: भू–जल भण्डार खाली हैं। पुनर्भरण से ज्यादा भू–जल शोषण ने हमारे कुएँ, बावड़ी, ताल, तलैया सभी कुछ सुखा दिये हैं। नदियाँ भी बेपानी होकर मर रही हैं। शहरों के किनारे गंगा, यमुना,

कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ गंदे नाले बन गई हैं।

भारत में शुद्ध व अशुद्ध को अलग–अलग रखने की प्राचीन परम्परा थी। 90 वर्ष पूर्व तक नदियों में गन्दे नाले नहीं मिलने दिये जाते थे। ब्रिटिश शासन काल में 1932 में पहली बार काशी आयुक्त 'हॉकिन्स' ने गंगाजी में गन्दे नालों को मिलाने का आदेश दिया था। उसके बाद तो सभी नदियों में गन्दे नाले मिलाये जाने लगे। फलस्वरूप भारत की पवित्र नदी गंगा भी एक गन्दा नाला ही बन कर रह गई। 'हॉकिन्स' के इस आदेश ने अन्य सभी नदियों को भी गन्दे नाले बनाने का रास्ता तैयार कर दिया।

काशी में प्राचीन जल शोधन व्यवस्था त्रिकुण्डीय थी। शहर का गन्दा जल पहले ऊपर के गन्दे ताल में इकट्ठा होता था। उसमें केवल गन्दा पानी ही आता था, वर्षा जल नहीं आता था। इस पहले ताल का गन्दा जल पहले अपरा के रास्ते दूसरे ताल में जाता था। उसमें जो भी गन्दगी होती थी, नीचे बैठ जाती थी। तीसरे ताल में प्राकृतिक रूप से उपचारित जल ही जाता था। यह तीसरा ताल धरती की सळों (शिराओं या धमनियों) पर बना होता था। इनके माध्यम से यह जल भू–जल से मिलकर उस पर दबाव डालकर चोवा या झरना बनकर बह कर बड़ी नदी गंगा जी में मिल जाता था। इसीलिए काशी जी ज्ञान की नगरी कहलाती थी। इसने जब तक गंगा जी को गन्दा नहीं होने दिया, तब तक भारत के ज्ञान की राजधानी वाराणसी (काशी जी) ही बनी रही। जब से यहाँ की गंगा जी गन्दी हुई हैं, तब से बनारस (वाराणसी) की यह ज्ञान की उपाधि निष्प्रभावी हो गई है। भारतीय पवित्र जल से पोषित ज्ञान ने ही हमें विश्व गुरु बनाया था। इस ज्ञान की गहराई में नदी नीर और नारी का सम्मान ही था। हम पुरुषत्व के रूप में नहीं जाने जाते थे। हमारी दैवी शक्ति तो आध्यात्मिक नीर–जीवन नारी–नया दूसरा जीवन बनाने वाली और नदी जीवन को पोषण करने हेतु प्रवाहित थी। इसी से हमारा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रवाह निर्मित हुआ था। इसीलिए भारत की शक्ति मातृत्व से निर्मित मानी जाती है। यही सनातन सत्य है। हमारे इस सत्य की रक्षा भी अहिंसामय थी। अहिंसामय जीवन जीना ही सर्वोत्तम माना जाता है। वही गुरु होता है। अपने जीवन के लिए किसी दूसरे को कष्ट नहीं देता हो, वही "जिओ और जीने दो" सिखाता था। दुनिया के लिए हमारी यही सीख थी।

हम दुनिया को सिखाने वाले थे। हमारी जीवन पद्धति में प्रकृति से उतना ही जल लेना था, जितना हम वापस दें। जैसा लें, वैसा ही बनाकर प्रकृति को लौटाने वाले जल को उपचारित करने वाले जल शोधन त्रिकुण्डीय व्यवस्था सनातन चली आई थी। हमारी मल–शोधन शुष्क पद्धति में भी मिट्टी से दबाकर मल की मिट्टी बनाते थे। हमारे ज्ञान में था कि जो हम खाते हैं, वह जल, मिट्टी, वायु, आकाश और सूर्य की ऊर्जा से बना है। हमारे शरीर के पोषण के बाद वह

मिट्टी ही है, उसी में उसका विलय करना उत्तम माना जाता रहा है। मानवीय मल को सुखा कर या मिट्टी में दबा कर मिट्टी बनाने की प्रक्रिया एक काल तक चली। अब हमारी पद्धति बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण और बदली हुई जीवन पद्धति के कारण बदली है। इसी परिवर्तित पद्धति के कारण हमारा जल प्रदूषित हो रहा है। आधुनिक जल शोधन तन्त्र आज तक भारत में प्रभावी नहीं हुआ है। अब जल शाधन पद्धति को सिखाने वाला भारत ही जल शोधन में पिछड़ रहा है। हम इस पर नए सिरे से विचार तो करें। हम आज क्यों सफल नहीं हो पा रहे हैं ? कारण साफ है, शोधन के काम में लगी कम्पनियाँ लाभ कमाने में जुटी हैं। उन्हें भारत के शुभ, साझे, वर्तमान और भविष्य की चिंता नहीं है। लाभ तो निजी के लिए होता है, शुभ साझा होता है। साझे भविष्य की चिंता और पर्यावरण रक्षा का काम नहीं चल रहा है। उसे चलाने की अब 21वीं सदी में सबसे ज्यादा जरूरत है। 21वीं सदी के जल संकट का समाधान समुदायिक विकेन्द्रित जल प्रबन्धन ही है। आज भारत में जहाँ इस विधि से काम किया गया है, वहाँ सभी जगह सूखी नदियाँ पुनर्जीवित हुई हैं। ऐसा ही काम करके गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी सभी को शुद्ध सदानीरा बनाने का काम किया जा सकता है।

लोकसभा चुनाव में सभी पार्टियों के घोषणा पत्रों में गंगा की अविरलता गायब है। इसका कारण साफ है, हमारे नेता सच्ची मेहनत करके सच्चा काम करना नहीं चाहते। अभी इन्हें ग़लतफ़हमी है। चूँकि नदियों से वोट नहीं मिलते, इसलिए किसी भी पार्टी के घोषणा पत्र में नदियों के प्रति गम्भीरता से काम करने की प्रतिबद्धता का दर्शन नहीं हुआ है।

पहले केवल बूथ लूटे जाते थे, अब तो घोषणाओं एवं घोषणा पत्रों द्वारा पूरा चुनाव ही लूट लिया जाता है। घोषणाओं और घोषणा पत्रों पर विश्वास करके लोग वोट देते हैं। अब घोषणाएँ वोटर को लूटने हेतु होती हैं। वर्ष 2014 के चुनाव में नरेंद्र मोदी जी रोज गंगा के बुलावे की याद दिला कर गंगा को अविरल निर्मल बनाने की बात पूरे उत्तर भारत की सभी ज्यादातर सभाओं में बोलते थे, लेकिन पिछले 5 वर्षों में गंगा जी की निर्मलता में कोई सुधार नहीं हुआ। निर्मलता के नाम पर घाट निर्माण एस.डी.पी. आदि के काम दिखाने मात्र के लिए ही हुए हैं। गंगा जी कहीं से भी प्रदूषण मुक्त नहीं हुई। अविरलता की तो बात ही करना बन्द हो गई है। अविरलता के बिना निर्मलता सम्भव नहीं है। यह बातें हम जैसे बहुत लोगों ने भारत सरकार को सुनाई हैं। सरकार ने इन बातों को सुनते सुनते महान् इंजीनियर व वैज्ञानिक प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल जी (स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द जी) को मरवा दिया। वे आधुनिक विज्ञान और पर्यावरण के इंजीनियर तो थे ही, भारतीय ज्ञान के ज्ञाता ऋषि भी थे। वे चाहते थे कि जल शोधन की प्राकृतिक विधियों को गंगा जी के शोधन में उपयोग

किया जाए, लेकिन धर्म, संस्कृति संरक्षक सरकार ने उनसे बातें तक नहीं कीं।

भारतीय राजनीति में मानवता और प्रकृति का बराबर सम्मान होना चाहिए

हमारा देश नदी, नीर और नारी का सम्मान करने वाला विश्व शिक्षक था। हमारा आचरण और व्यवहार कृतज्ञता से परिपूर्ण था। माँ जन्म देती है, कष्ट सहती है, पर बदले में सन्तान पर अतिक्रमण नहीं करती; बल्कि उसके स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखने का पूरा खयाल रखती है। वह उसे कष्ट व प्रदूषण से बचाती है और शोषण भी नहीं करती। लेकिन आज हमारे राजनेताओं के मन में मतदाताओं पर अतिक्रमण करने तथा सामाजिक संरचनाओं से लूट फूट करने का विचार बहुत प्रबल हो गया है। अब राजनीति में प्राकृतिक और मानवीय मूल्यों का सम्मान नष्ट हो गया है। भारतीय राजनीति तो मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि मानकर निर्मित संविधान से चलती है। संविधान में प्रकृति और मानवता के लिए बराबरी की संरक्षण व्यवस्था है। इस व्यवस्था को हमारे राजनीतिक दल सत्ता में आने के बाद भूल जाते हैं। कुछ वर्षों तक भारतीय राजनीति में इसका सम्मान करने वाली व्यवस्था को जीवित रखा गया था, पर अब अतिक्रमण करने वाले औद्योगिक घरानों का प्रभाव बढ़ गया तो संविधान का सम्मान भी कम हो गया। वे संवैधानिक व्यवस्थाओं व संस्थाओं की अनदेखी करने में जुटे हैं। इस अनदेखी से भारत में अराजकता और हिंसा बढ़ेगी। सत्य अहिंसा के रास्ते पर चलाता है, झूठ हमें हिंसा के रास्ते सुझाता है। इसलिए अब हम सत्ता पाने के लिए मिलाजुला युद्ध करने से भी नहीं बचते हैं। जब कोई देश में सत्ता छोड़ने के स्थान पर युद्ध अपनाने लगे तो समझो हम अपना मूल रास्ता छोड़कर अपनी सत्ता को बनाए रखने का कोई भी रास्ता पकड़ने के लिए आसानी से तैयार हो जाते हैं। 'सत्यमेव जयते' अहिंसामय पथ पर चलकर मिला था, अब हम झूठे लालची सपने दिखा कर सत्ता पाएँगे तो वही सत्ता सरकार फिर 'सत्यमेव जयते' की पक्षधर नहीं होकर, 'झूठमेव जयते' बन जाती है। उसमें हिंसा सहजता से आ जाती है। झूठ कभी अहिंसक नहीं हो सकता। सत्य ही अहिंसक होता है, वह सनातन अहिंसक बना रह सकता है। जब सत्ता और शक्तियों के लिए हम झूठे वादे करते हैं, तब जनता को धोखा देते हैं। यह सत्ता का झूठ जनता को हिंसामय रास्ते पर चला देता है। हिंसा तो मानवीय और प्राकृतिक मूल्यों को भुलाकर अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण करने की प्रेरणा ही देती है। आज चन्द परिवार ही भारत की आर्थिक व्यवस्था पर कब्जा कर रहे हैं। भारत की गरीबी इसी से बढ़ रही है। चन्द औद्योगिक परिवार गरीबी को सतत् बढ़ाएँगे; क्योंकि ये प्राकृतिक साझे संसाधनों– पहाड़, समुद्र, नदी, जंगल व खनिजों आदि सभी पर कब्जा कर रहे हैं। परिणामतः हमारे देश का बड़ा हिस्सा पानी, जवानी व किसानी की लाचारी, बेकारी व बीमारी का शिकार हो रहा है। पानी मिट्टी काटते हुए बह रहा है। परिणामतः

बाढ़ व सुखाड़ बढ़ रहे हैं। गाँव में जवानों को अब काम नहीं है, बेरोजगारी बहुत ही बढ़ गई है, किसानों की खेती चौपट है, उन्हें उनके पसीने की कमाई का उचित दाम नहीं मिल रहा। वह कर्जदार होकर लाचार, बेकार व बीमार बन रहा है। हमारे सत्ताधारी दलों के घोषणा पत्रों में ये बातें आ भी जाएँ तो भी सरकार बनाकर वे भूल जाते हैं। जैसे– चुनाव से पहले रोजाना गंगा जी का स्मरण करके वोट माँगे थे, सरकार बनाते ही भूल गए। बस 2019 के चुनाव में फिर ऐसा धोखा ना खाएँ। अपने उम्मीदवारों की ईमानदारी व पारदर्शिता जानें। उनका इतिहास जानें। भूत को जाने बिना भविष्य का विचार नहीं किया जा सकता। अतः इस बार ईमानदार उम्मीदवार को चुनें। दलगत राजनीति में भी कभी–कभी अच्छा ईमानदार व्यक्ति चुनकर आ जाता है; वह बुरे कामों को रुकवाता है और अच्छे काम शुरू करवाता है।

मानवता और प्रकृति को बराबरी से सम्मान करने वाला उम्मीदवार चुनें। अहिंसक और सत्य का व्यवहारी देखो, प्रचारक को नहीं, प्रामाणिक को ही पकड़ कर देख परख कर ही चुनना चाहिए। हिंसक, भ्रष्टाचारी को न चुनें। सत्यनिष्ठा, सदाचारी व अहिंसक को ही चुनें। ये ही मानव व प्रकृति को बराबर सम्मान करके शान्तिमय, समृद्ध राष्ट्र निर्माण का काम करेगा।

भारत को स्वावलम्बी व समृद्ध राष्ट्र निर्माण हेतु अब लालची विकास के नारों से बचाकर प्राकृतिक पुनर्जीवन के काम नदी, नीर और नारी का सम्मान कर के काम करने वाली सरकार चाहिए। प्रकृति व मानवता पर अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण करने वाली सरकार नहीं चाहिए। हमारी राजनीति में स्पष्टतः सरलता व सादगी की राह पर चलकर समृद्धि लाने वाली व्यवस्था चाहिए।

विकेन्द्रित लोकतन्त्र हो

विनाश रहित विकास रोककर पुनर्जीवन शुरू कर सकता है। "आज बगलू प्रेस क्लब में देशभर के पर्यावरणविद् इकट्ठे होकर बैठक में मिलकर काम करना तय हुआ।" प्रकृति पुनर्जीवन का बराबर सम्मान करने वाले मानव एक साथ आएँगे। 17 लोकसभा चुनाव के सभी घोषणा पत्र प्रकृति के विरुद्ध लालची विकास का सपना भारत भर के पर्यावरणीय संगठनों को इस कार्य में जोड़ने हेतु भारत अविरल गंगा यात्रा चलाएँगे। ईमानदार, पारदर्शी व जिम्मेदार नेताओं को वोट द्वारा देश चलाने की हकदारी देने का सर्वसम्मति से निर्णय हुआ। भारतीय जनता गंगा नदी के लिए झूठ बोलकर वोट माँगने वालों को वोट नहीं दे। हम सत्य–अहिंसा की रक्षा करने वालों को ही देश चलाने का मौका देंगे। दिखाकर वोट माँग रहे हैं। हम साझे भविष्य की सुरक्षा हेतु भारत में पर्यावरण चेतना जगायेंगे। सभी राजनीतिक दलों से कहेंगे। लोगों के जीवन–जीविका–ज़मीर को सुरक्षित बनाने और सभी को सुरक्षित रखने की दिशा में काम करें। वोट उसी को मिलेगा, जो प्रकृति और मानवता को बराबर

सम्मान देगा। आज प्रेसवार्ता में कहा गया विकेन्द्रित लोकतन्त्र ही भारत में सत्य–अहिंसा कायम रख सकता है। डराने वालों और 'झूठमेव जयते' करने वालों को सरकार बनाने से रोकेंगे। व्यक्ति–केन्द्रित लोकतन्त्र तानाशाही की तरफ ले जाता है। उसे रोककर प्राकृतिक विकेंद्रित लोकतन्त्र कायम करने वालों को ही हम दलगत राजनीति से ऊपर उठकर चुनेंगे। इस हेतु जल संसद् बनाकर नदी घाटी संरक्षण प्रबन्धन कानून बनाएँगे। जल का निजीकरण रोककर सामुदायिकरण की चेतना जगायेंगे।

अविरल गंगा यात्रा में स्पष्ट दिख रहा है। जवानी में रोजगार नहीं पानी का क्रोध है। किसानी में पैदावार का दाम नहीं मिलने का। पानी बह जाता है। मिट्टी के साथ जन **प्रतिबद्धता से इसे ठीक करने का अवसर नहीं है। 17वीं लोकसभा चुनाव की घोषणा संकल्प में केवल मतदाताओं को भ्रमाकर मत प्राप्त करना ही लक्ष्य दिखाई देता है। मत माँगने से पहले मत पाने वालों को अपनी प्रतिबद्धता प्रकट करनी चाहिए। अब मत माँगने वाला ऐसा कोई भी दल या व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा है। केवल मतदाता को भ्रमाना ही लक्षित हुआ है। नेता की प्रतिबद्धता देखकर मतदाता अपनी शक्ति मत द्वारा हस्तान्तरित करता है। वही शक्ति मतदाताओं के वर्तमान और भविष्य की बेहतरी हेतु हस्तान्तरण की जाती रही है। यही प्रकिया स्वस्थ लोकतन्त्र बनाती है। जब नेता अपने जुमलों से मतदाताओं को भ्रमाता है, तब वोट पाकर शक्तिशाली बनकर तानाशाही का रास्ता पकड़ता है। अभी ऐसा ही हो रहा है। जनता की कोई आवाज बनने ही नहीं दी जा रही है। जनता के अपने सवाल स्वयं या मीडिया द्वारा उठाने के सभी रास्तों पर रोक लगी है। पिछले 5 वर्षों मैं इन घटनाओं ने देश को भयभीत कर दिया है। झूठे वायदों ने 'सत्यमेव जयते' के प्रति विश्वास और आस्था निष्ठा सभी कुछ मिटा दिया है। झूठे जुमलों पर ज्यादातर लोगों में विश्वास पैदा हो गया है। जिनमें अभी भी सत्य में विश्वास है ऐसे लाखों–करोड़ों हैं। उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। उनकी प्रतिबद्धताओं को ही जन–प्रतिबद्धता 2019 कहा है।**

भारत का भू–जल भण्डार ही हमारा असली बैंक है। यह खाली हो रहा है। अभी तक आधे से ज्यादा खाली हुआ था, अब इस को खाली करने की गति 100 गुना तेज हो गई है। इसके शोषण की गति 10% होनी चाहिए। तभी भारत पानीदार बना रह सकता है। यही काम हमें पुनर्भरण करने हेतु 100% बढ़ाना पड़ेगा। धरती के ऊपर मिट्टी लेकर बहने वाला जल प्रवाह रुके। अन्तः जल प्रवाह बढ़े। ऐसा करने से हमारा भारत बाढ़–सुखाड़ मुक्त बनेगा। तभी कृषि उत्पादन एवं अन्य सभी उत्पादनों की गति भी तेज होगी। इस दिशा में हम

काम करना तय करते हैं। भारत की गंगा नदी के लिए अविरलता सुनिश्चित हो, जिससे गंगा जी की विशिष्टता वापस उसके जल में लौट आए। जैसी यह विलक्षण प्रदूषण नाशनी शक्ति वाली नदी पहले थी, वैसी ही बन जाये। इसका जल रोकने से उसकी विशिष्टताएँ नीचे बैठ जाती हैं। गंगाजल ठहरने के बाद अपनी विशिष्टताएँ खो देता है। उनको भारत की अपनी मूल पहचान कायम रखने स्वास्थ्य और समृद्धि रहने के लिए जरूरी है।

इस दिशा में 2009 में काम शुरू हुआ था, बाद में रुक गया। वह पुनः चलना चाहिए। भागीरथी की तरह अलकनन्दा व मन्दाकिनी आदि गंगा की हिमालय की नदियों में काम होना चाहिए। जलविद्युत की अपेक्षा अब सूर्य विद्युत व हवा विद्युत ज्यादा सस्ती है। इसलिए गंगा को पुनर्जीवित करने का ही काम हो। उनकी हत्या अब बन्द होनी चाहिए। गंगा जी अविरल होंगी तभी निर्मलता की प्रक्रिया तेज होकर यह शुद्ध सदानीरा बनकर अपने गंगत्व के साथ गोमुख से गंगासागर तक जाएँगी। अब गंगा जी के साथ धोखा रुकना चाहिए। इस हेतु कानून बने। कानून प्रारूप तैयार है। पहले अधिवेशन में ही इसे पेश करके पास कराएँगे।

पूरे भारत की नदियाँ यूँ तो गंगा ही कहलाती हैं। इनको शुद्ध सदानीरा बनाने का भी कंाम विकेन्द्रित रूप से आरम्भ होना ही चाहिए। अविरल गंगा यात्रा के दौरान मैंने देखा कि कर्नाटक, महाराष्ट्र व तमिलनाडु में अब सामुदायिक विकेन्द्रित प्रबन्धन की इच्छा बहुत से लोगों में दिखती है, पर फिर भी यह काम क्यों नहीं हुआ ? मोटे तौर पर समझ में आया कि हमारी सरकार और नेता कमाते रहते हैं। अधिकारी बोलते हैं। हम यह सभी काम कर रहे हैं। नेता उनसे समस्या समाधान प्रकिया नहीं पूछते। इसलिए यह सभी नेता बोलकर ही अपने को बचा लेते हैं। अब हमने इस यात्रा में सीधे इच्छुक लोगों को प्रशिक्षित करना शुरू किया है।

पहला शिविर तमिलनाडु में डिंडीगल फिर ताम्रवर्णी, फिर मदुरई में शिविर आयोजित करके युवा तैयार किये हैं। इन्होंने मदुरई की वाडेगई नदी पर काम शुरू किया है। इन्होंने नदी भूमि से कब्जा हटा का जल संरक्षण शुरू किया है। यहाँ बहुत ही अच्छा कार्य कुननसानम के नेतृत्व में ने आगे बढ़ाया है। ताम्रवण र्णी में गुरुस्वामी ने शुरू किया है। यहाँ प्रदूषण करने वाली कम्पनी के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हुआ है। इसी प्रकार चेन्नई में दिशा ने अड़ीयार नदी में प्रदूषण के विरुद्ध काम हुआ है। केरल में अकोडम आन्दोलन आरम्भ हुआ है। कर्नाटक में भी कार्यकर्ता प्रशिक्षण देकर अपनी नदियों की पुनर्जीवन योजना बनाना आरम्भ हुआ है। यहाँ के पूरे प्रदेश के साथ कार्यकर्ता महादेवन के नेतृत्व में काम करेंगे। तेलंगाना के 38 कार्यकर्ता प्रशिक्षित किये गये हैं। यह भी चुनाव के बाद राज्य में जल साक्षरता आरम्भ करेंगे। गाँव से नदी पुनर्जीवन चेतना

बढ़ाएँगे। मध्य प्रदेश में भी शुरू हुआ है। यहाँ आभा शर्मा की देखरेख में काम आगे बढ़ेगा। हरियाणा में रामनारायण यादव ने जल साक्षरता अभियान चलाने की जिम्मेदारी ली है। बिहार पटना में रमेश की अगुवाई में आपदा विभाग इस कार्य को आगे बढ़ाएँगे। राजीव पहावा ने। उज्जैन में जल संरक्षण व वृक्षारोपण का काम तेज किया है। इन्होंने अपने को प्रशिक्षित करने का काम पूरी लगन से आरम्भ किया है। मध्य प्रदेश में सुधीन्द्र मोहन ने भू–जल पुनर्भरण एवं जल साक्षरता का काम हाथों में लिया है।

केरल के मछुआरों के साथ बहुत अच्छा कार्य आरम्भ हुआ। यहाँ सन्नल ने जिम्मेदारी ली है। त्रिवेन्द्रम आदि क्षेत्रों में इसके काम की पहचान है। यह वेणुगोपाल के नेतृत्व में काम शुरू कर रहा है। त्रिशूर में हुसैन और आविदा मिलकर जल व जीवन को समझने की शिक्षा देते हैं। ये भविष्य में नदियों की सेहत मानव की सेहत के साथ जुड़ी है, इस विषय को पढ़ाएँगे। इनके विद्यालय में इस पढ़ाई की शुरुआत करने पर लम्बा विचार–विमर्श हुआ। होल कोटी में जे.के. जमादार और साहूकार अच्छा काम करते हैं। इन्होंने पहले भी एक इच्चन हल्ला एच.के. पाटिल एवं डी.आर. पाटिल के साथ मिलकर काम किया था। आज कल भी ये इसी दिशा में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। यहाँ ग्राम स्वराज विश्व विद्यालय आरम्भ हुआ है, इसमें प्रकृति व मानवता के रिश्ते को बढ़ाने का कार्य आरम्भ होगा। इन्हें यहाँ के कुलगुरु, कुलसचिव एवं शिक्षकों व विद्यार्थियों को एक साथ बैठाकर लम्बी बातचीत की है। कर्नाटक के दुष्काल मुक्त क्षेत्र की यात्रा हावेवरी, धारवाड़, हुबली, रायचूर, बालाघाट, गदग आदि की यात्रा भी हुई। यह केवल सम्पर्क व संवाद यात्रा ही रही है। इसमें हमने सुखाड़ मुक्ति के लिए काम करने वालों को ढूँढ़ा और उनसे बातचीत करके उसके साथ संवाद का कार्यक्रम बना। इनका प्रशिक्षण होगा, इन्हें प्रशिक्षण हेतु हमने तैयार किया है। दिल्ली में बैठक कर इस लम्बी यात्रा का अनुभव और लोकसभा चुनाव का सम्बन्ध समझ आया। फिर सभी राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र पढ़कर समझे। समझ आया सभी राजनीतिक दलों को भारत के 367 जिले 17 राज्यों में उस काल का लोक क्रोध और प्रकृति क्रोध परिवर्तन की तैयारी कर रहा है। इसलिए इसे किसी भी राजनीतिक दल ने मुद्दा ही नहीं बनने दिया। विपक्ष इसे मुद्दा बना नहीं पाया। सत्ता ने लोगों को इससे भटका दिया। घोषणा पत्र भटकाऊ हैं। एक दल का घोषणा पत्र मानवीय संकट, हकदारी व जिम्मेदारी से जुड़ा दिखता है, लेकिन करने की स्पष्टता इसमें भी प्रकट नहीं की गई है।

पानी, नदी, जीवन, जीविका और ज़मीर की चर्चा हुई है, किन्तु बहुत ही सतही है। ऐसी सतही चर्चाओं से समाज में कुछ करने का विश्वास सृजित नहीं होता। इसलिए राजनीतिक दलों की घोषणाओं और संकल्पों से निराश होकर भारत की जनता का घोषणा पत्र तैयार करने हेतु दिल्ली में डेरा डाला

है। यहाँ मीडिया से भी बातचीत करके इन्दौर के लिए 5 अप्रैल को प्रस्थान किया। जामफव पहाड़ से सात नदियाँ निकलती हैं। यहाँ एक शिविर इस पहाड़ और पहाड़ से निकलने वाली नदियों को पुनर्जीवित करने की बातचीत की। यहाँ से छत्तीसगढ़ बिलासपुर पहुँचकर यहाँ के इंजीनियरों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को नदी पुनर्जीवित करने हेतु चेतना जगाने का काम किया। यह पुष्पेंद्र अच्छा काम करता है। इसने इस कार्य को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी ली है। यहाँ से आन्ध्रा विशाखापट्टनम गया। यहाँ के तालाबों को ठीक करने की तैयारी से पहले इनकी मौके पर जाकर यात्रा करके देखा और इस काम को हमारे राष्ट्रीय संयोजक बुल सेट्टी को लगाया। इन्होंने इस कार्य में रुचि लेकर करने का संकल्प लिया।

बिहार में रमेश ने सुखाड़ मुक्ति हेतु जल साक्षरता का काम पंकज मालवीय के साथ करने के लिए 2 दिन के सरकारी प्रयास को दिशा दी। बिहार की बाढ़ व सुखाड़ दोनों को ही मानव निर्मित आपदा मान कर उसका समाधान खोजना जरूरी समझा। इस हेतु इस राज्य में जल साक्षरता आरम्भ कराना तय कराया।

11 अप्रैल को दिल्ली विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जाकर जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभाव रोकने का कार्य सुखाड़ क्षेत्र में जल संरक्षण करके जलवायु परिवर्तन अनुकूलन व अनुमूलन तरुण भारत संघ का अनुभव बाँटा। यह सभी को समझ में आया। विद्यार्थियों ने इस दिशा में काम करने का संकल्प सुनाया। गंगा सद्भावना यात्रा का अनुभव अविरल गंगा यात्रा में कैसे प्रभावी बनाएँ ? इस पर तरुण भारत संघ की कोर टीम ने चर्चा करके सामग्री प्रकाशन एवं सोशल मीडिया पर ज्यादा जोर दिया। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल से मिलकर यहाँ जल साक्षरता आरम्भ कराने की तैयारी कराई। यहाँ के अतिरिक्त मुख्य सचिव के साथ बातचीत करके शिमला की दो छोटी नदियों पर काम करना तय हुआ 13 अप्रैल को फिर चेन्नई में जनता घोषणा पत्र पर मीडिया के साथ बातचीत करके कोयम्बटूर की भेपल नदी में जाकर पुनर्जीवन कार्य सीधे ही शुरू करा दिए। यहाँ की युवा टीम बहुत योग्य है। इन्होंने तरीका प्रत्यक्ष समझ कर काम शुरू कर दिया है। यह अच्छी आशा की किरण है।

15 को बैंगलूरू में प्रेस के साथ बातचीत आरम्भ कर दी। यहाँ भी जनता का घोषणा पत्र जारी किया है। यहाँ बीजापुर की हमारी पहली घोषणाओं पर बहुत अच्छी चर्चा हुई। हमने सुखाड़ मुक्त भारत चेतना यात्रा और बीजापुर में सम्मेलन आयोजित किया था, उसकी याद यहाँ के पत्रकारों की थी; इसलिए देख कर बहुत अच्छा लगा। पत्रिका और हिंदू अखबार ने यहाँ अधिक रुचि लेकर एक लेख भी लिखा। बेंगलूरू से 16 को मध्य प्रदेश में जाकर गांधी भवन में जन घोषणा पत्र पर चर्चा करके हमने जनता की प्रतिबद्धताओं को उजागर किया। इस पर भोपाल का मीडिया बहुत रुचि लेकर आगे बढ़ा। उन्होंने भोपाल

में जल साक्षरता चलाने में भी रुचि दिखाई। बिहार में भय मुक्त भारत बनाने वाले जन घोषणा पत्र पर लम्बी चर्चा मधेपुरा, नवगच्छिया, भागलपुर में हुई। पुराने साथी रामशरण ने इसमें रुचि लेकर संवाद आरम्भ कराया। भावानन्द ने क्रान्ति गीत सुनाकर सभी को सम्बोधित करके आगे की जिम्मेदारी भी ली। बिहार में बुद्धि और बातचीत बहुत है, काम शुरू करके पूरा करने के लिए विश्वास की कमी दिख रही है।

19 को जयपुर में जल के निजीकरण को रोकने पर बहुत अच्छी बातचीत करके कार्य योजना बनाई। माही रोज में नारायण निवास होटल में जाकर राजस्थान के जल संरक्षण के ज्ञान पर बातचीत की। इस बातचीत में राजस्थान के विद्वान् लोग आए थे। यहाँ जल निजीकरण को रोकने की अच्छी शुरुआत हुई है। इसका सभी ने ताली बजा का स्वागत भी किया। राजस्थान को पानीदार बनाने हेतु वर्षा–जल को गन्दे जल में नहीं मिलने दें, इस पर भी कुछ अच्छी चर्चा हुई। राजस्थान में जल संरक्षण का अच्छा संस्कार था, अभी भी शेष है, इसे व्यवहार में लाकर ही जीवित रखते हैं। जो व्यवहार में रहता है, वही संस्कार बनता है। राजस्थान अपने इस संस्कार को बचाकर रखेगा तो लाभ के साथ शुभ की चिंता भी यहाँ के व्यापार में बढ़ेगी। यहाँ की बातचीत को जनता का घोषणा पत्र यहाँ के मीडिया को दिया। इनसे यहाँ बात भी की।

20–21 अप्रैल को कर्नाटक के क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिलकर सूखाग्रस्त कर्नाटक की दूसरी बार यात्रा करके कुछ करने की सम्भावनाएँ तलाश की। यह यात्रा रवि वर्मा कुमार के साथ अप्पा प्रो0 राजेन्द्र पोद्दार तथा अन्य बहुत वरिष्ठ अनुभवी कर्नाटक के साथियों से बातचीत करके समाधान खोजने की तैयारी करने वाली सिद्ध हुई। इस यात्रा में देवगौड़ा, पूर्व प्रधानमन्त्री, न्यायमूर्ति गौडा जैसे बड़े लोगों से आर.एच. साहूकार और रवि कुमार के साथ–साथ सत्यनारायण बुलशेट्टी के साथ मिला। यह यात्रा डी.आर. पाटिल, एच.के. पाटिल से मिलकर ऊर्जादायी बनी रही।

ग्रामीण विकास विश्वविद्यालय के कुलपति ने अकाल मुक्ति पर रुचि दिखाई है। वे भी कुछ करेंगे। इस यात्रा में चुनावी सरगर्मी भी समझ में आई। यह चुनाव किसानों का क्रोध, सुखाड़ की मार के साथ–साथ कर्ज़ में डूबने का गुस्सा भी है। ग्रामीण युवा तो वर्तमान सत्ता विरुद्ध नज़र आया है। शहरी युवा तो वर्तमान नहीं पुनरावर्तन करता दिखाई देता है। मुसलमानों में बहुत ही बदलाव की चाह है। मध्यमवर्गीय शहरी एक बार और मौका देने की कुछ जोरों से पुकार कर रहा है। यह चुनाव शहरी, ग्रामीण, किसान और व्यापारी के बीच लड़ा जा रहा है। कहीं–कहीं तो महात्मागांधी और गोडसे के बीच में लड़ा जा रहा है। जातियों के आधार पर मतदाता भी बँटा हुआ है। बिहार का कुर्मी पूर्णतः बिहार और दिल्ली की सरकार पूर्वतः बना कर रखना चाहता है।

यादव बदलना चाहता है। चुनाव के साथ उत्तर प्रदेश; बिहार, कर्नाटक व मध्य प्रदेश सभी जगह जातिगत समीकरण बहुत प्रभावी बन जाते हैं। इसे रोकने की आवश्यकता है, लेकिन कोई भी दल या राजनेता इस विषय में काम करने आगे नहीं आता। उत्तर प्रदेश व बिहार यात्रा में सबसे बड़े नेता भी जातिगत समीकरण पर बात करके निर्णय ले रहे हैं। दिल्ली का दृश्य भी कमोबेश वैसा ही है।

22 अप्रैल लखनऊ में भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में कई दलों के नेता मिलने आए। सभी का दर्द अपना–अपना समाधान वोट ही में देख रहे हैं। सच्ची बात करने को कोई तैयार ही नहीं होता है। सभी कम–ज्यादा झूठ बोल कर वोट मांगते रहे। समझ नहीं आ रहा झूठ कब तक चलेगा। मैंने जल संकट पर एक प्रेस को बुलाया। मीडिया सभा किया। पत्रकार भी समझते नहीं है। हो सकता है मैं ही समझ नहीं पा रहा हूं। यही सत्य को दबाकर उसी पर झूठ का रंग चढ़ाते हो। विश्वविद्यालय शिक्षा संस्थान भी आज ऐसी ही दिखावटी कार्यों में अधिक रुचि लेकर संगोष्ठी सम्मेलन करके अपनी नौकरी और वेतन ही पूरा करते हैं।

पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल बाबा भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में वैश्विक, भौतिक व रासायनिक गैस के बिगाड़ से बचाव हेतु काम करें। इसका उद्घाटन करते हुए मैंने कहा, पंचमहाभूत का विनाश ही सबसे बड़ा दुःखद कारण हैं, हम इन्हें जब सम्मान करके सँभालते हैं तो बहुत बड़ा सुधार होता है। धरती का बुखार और मौसम का मिज़ाज़ सुधर जाता है। रसायन और भौतिक पदार्थ हमारी बिगाड़ की समझ में मदद करते हैं। बिगाड़ रहे हैं। सुधार तो पंचमहाभूत ही करेंगे। उन्हीं को सँभालने की जरूरत है।

कुम्भ इलाहाबाद में लोग इकट्ठे हुए। बहुत से शौचालय बनाए गये। अन्तमें सारी गन्दगी गंगा में छोड़कर ही चले गए। गंगाजल में सभी शौचालय का दूषित जल मिलकर और गन्दा हो गया है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने दोनों सरकारों को सख्त डाँट लगाई, लेकिन आजकल सरकार सुनती ही कहाँ है। 23 अप्रैल को हम गोरखपुर राप्ती नदी के किनारे गए। यहाँ हजारों लोग नदी को मोड़ने का विरोध करने इकट्ठे हुए। हमने भी संगठित होकर नदी से छेड़छाड़ का विरोध किया है। गोरखपुर में प्रेस वार्ता को नदी नहीं मोड़ने के कारण समझाएँ।

23 से 25 राजस्थान के जयपुर, करौली, मासलपुर व भीकमपुरा आदि क्षेत्रों में अकाल का समाज द्वारा किया क्षेत्र भ्रमण किया। जयपुर का नीमी गाँव, अलवर का गोपालपुरा तथा करौली का भूड़खेड़ा आदि गाँवों में देखा कि जिन लोगों ने अपने परिश्रम से काम कर के जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने का काम किया है, उनके मन में अब बहुत रचना और अनुशासन जन्मा है। ये

अपनी समृद्धि और साझी सम्पदा के प्रति बहुत सजग हैं। लुटेरों से लड़ने और फूट से बचने का काम भी इन्होंने संगठित होकर किया है। लेकिन अब ये वोट माँगने वालों से भी सवाल पूछते हैं-- नेता को हम अपना मताधिकार देते हैं, वह हमारे साझा भविष्य के लिए क्या करेगा ? ये सवाल इस क्षेत्र के नेताओं का क्रोध बढ़ाते हैं। नेताओं की उन सभी लोगों से नाराज़गी रहती है, जो अपना काम स्वयं कर लेते हैं। स्वावलम्बन स्वराज से आजकल के नेता नाराज हैं। आजादी के समय के नेता समाज को स्वावलम्बी बनाते थे, आज सभी कुछ उल्टा हो गया है। अब जनता यदि राजनेताओं के आश्रित होकर वोट देती है, तब वे नेता बहुत प्रसन्न रहते हैं। अब कोई नेता समाज को स्वस्थ व स्वावलम्बी बनाकर नहीं रखना चाहता, क्योंकि वोटर परावलम्बी बनेगा तभी तो वह नेताओं के अधीन बना रहेगा। नेताओं को भी अब व्यक्ति नहीं, चमचे चाहिएँ। चमचे तो स्वयं में कुछ नहीं होते। उन्हें तो चलाने वाला ही होना जरूरी है। आज नेता व्यक्ति निर्माण नहीं कर रहा, वह तो चमचों का निर्माण करने में लगा है। इसीलिए हमारा समाज अब स्वावलम्बन छोड़कर परावलम्बन पसन्द करता है।

आज हमें केवल लेना सिखाया गया है। आज की राजनीति हमें सम्मान से जीना नहीं सिखाती। वह हमें पोषण, रक्षण व शिक्षण से दूर शोषण, अतिक्रमण व प्रदूषण से परिपूर्ण जीवन, जीविका, ज़मीर बना रही है। इससे अब हमारे बदलने के रास्ते भी रुक गए हैं। अब की प्रबन्धकीय शिक्षण पद्धति में जैसे हैं वैसे ही रह कर भोग की चाह बनाए रखना जरूरी मानते हैं। जब भी हम वर्तमान व्यवस्था से दुःखी होकर बदलने की कोशिश करते हैं, उसे प्रबन्धकीय शिक्षा क्रान्ति कहते हैं। क्रान्ति को रोकना हमारे प्रशासन की प्राथमिकता है। अतः क्रान्ति से परिवर्तन इस व्यवस्था में सम्भव नहीं है। इसलिए शोषण, अतिक्रमण व प्रदूषणकारी व्यवस्था को बदलना अब आसान नज़र नहीं आता। प्रकृति के प्यार और सम्मान से इसे बदल सकते हैं। यह हमारे राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में सफलतापूर्वक हुआ है। इसी तरीके से इसे बदलना है। उजड़े लोग अपने आप पुनर्वासी हो गए हैं। शहरों से वापस गाँव लौट आये हैं। वीरान भूमि में जल संरक्षण करके खेती करने लगे हैं। अब दुनिया को पुनर्जीवन की ज्यादा जरूरत है। लालची विकास से बचकर हम प्रकृति का पुनर्जीवन का काम करें। क्रान्ति परिवर्तन अब कठिन है, जो कि भारतीयता को लालची विकास के भ्रमजाल से बचा सकता है। इसलिए प्रकृति के प्रति प्रेम व सम्मान को लाकर विस्थापन विकृति और विनाश मुक्त प्रकृति पुनर्जीवन प्रक्रिया को चलाना और आगे बढ़ाना सरल और सहज सम्भव है। जैसे हमारे यहाँ हुआ है। उजड़े लोग वापस अपनी जमीन पर आकर बसे हैं और खेती करने लगे हैं। इस नई पैदा हुई हरियाली ने जलवायु परिवर्तन के खतरों को खत्म किया है। धरती का बुखार कम हुआ है। मौसम का मिजाज सुधर गया है।

यह 21वीं सदी के लिए सबसे ज्यादा जरूरी प्रक्रिया है। यही सनातन है। इसी से हमारी आस्था और पर्यावरणीय रक्षा होगी। यही भारतीय ज्ञानतन्त्र से पुनर्जीवित होकर हमारा स्थायी विकास करेगी। भारत का स्थायी विकास भारत के भगवान से जुड़ा है। भ–से भूमि, ग–से गगन, व–से वायु, अ–से अग्नि और न से नीर ये पंचमहाभूत ही हमारे भगवान हैं। यह बात मेरे गाँव के लोगों ने मुझे कही थी। तभी से मेरे मन में प्रकृति के प्रति प्रेम बढ़ा। आज वह इसी विचार से पोषित और पल्लवित होकर मेरे जीवन को प्रकृतिमय बना रहा है। मैंने देखा, जिनके मन में प्रकृति प्रेम है, वह शुभ कार्य में संलग्न हैं। शुभ ही साझे भविष्य को सँवारने की समझ और शक्ति देता है। जब हम प्रकृति को समझते हैं तो इसे सहेजने लगते हैं। प्रकृति को सहेजने वाला ही दूसरों को समझाने में जुटता है। हमें अपने शरीर की निर्माण प्रक्रिया से प्रकृति का महत्त्व समझ आता है। यह समझ ऐसा कार्य करने से ही बनती और आगे बढ़ती है। यह हमारी शिक्षा का हिस्सा है। शिक्षा को अब पोषण, रक्षण व शिक्षण से मुक्त बना दिया गया है। यह कार्य भारतीय राजनीति ने किया है। जैसी राजनीति होती है, वैसी ही धर्मनीति और शिक्षानीति बन जाती है। आज ये तीनों नीतियाँ लूट–फूट करके आगे जा रही हैं; समाज पीछे छूट रहा है। आज भी इसे आगे बढ़ाने हेतु हमें अपने समाज को शिक्षण, संरक्षण व प्रकृति पोषण के रास्ते पर चलाना है। इसी का असर दिखाई देता है।

जहाँ–जहाँ तरुण भारत संघ ने बापू के रास्ते पर चलने का काम किया है, वहाँ सभी जगह अच्छा स्थायी स्वावलम्बन का रास्ता प्रशस्त हुआ है। मेवात के न्याणा गाँव में सभी लोग बेपानी होकर रोजी रोटी की तलाश में शहर चले गए थे; लेकिन जब गाँव में पानी का काम हो गया तो सभी वापस अपने ही गाँव में आकर पानी का काम करने लगे हैं। पानी के संरक्षण से कुओं में पानी आ गया। लोग वीरान धरती पर खेती करने लगे। हरियाली बढ़ी। यहाँ सब हमारे जलवायु अनुकूलन व उन्मूलन से बड़ा परिवर्तन हो गया है। यह भौतिक विकास नहीं था, बल्कि प्रकृति पुनर्जनन हुआ है। 21वीं शताब्दी में इसी की जरूरत है।

तरुण भारत संघ ने मुस्लिम बहुल क्षेत्र तिजारा, रामगढ़, झिरका फिरोजपुर व टपूकड़ा आदि क्षेत्रों का प्रदूषण रोकने हेतु जल शोधन करने वाले उद्योगों पर अदालत में जाकर रोक लगवाई। अदालती रोक के बाद भी कुछ काम चालू थे, उनके विरुद्ध जल सत्याग्रह किया। इस कार्य में सबको जोड़ने के लिए 'जल–जंगल–जमात' तीन माह तक चलाई। हमारी इस यात्रा में मुस्लिम भाई बड़ी संख्या में जुड़े। एक जल जुम्बिश बन गई। इन लोगों ने संगठित होकर शराब, पेयजल व अन्य प्रदूषक पेय पदार्थों के उद्योग बन्द करा दिये।

राजस्थान सरकार में गहलोत सरकार ने प्रदूषण उद्योगों पर रोक लगा

दी। कम पानी की जगह कोई उद्योग नहीं लगाने का निर्णय लिया। इससे हमारा उत्साह बढ़ गया। हमने इस कानून को दूसरे राज्यों में भी अपनाने का वातावरण बनाने का काम किया। राजस्थान में तो हम सफलतापूर्वक चला पाए।

राजस्थान सरकार बदलते ही वसुन्धरा जी ने बेपानी क्षेत्र में भी प्रदूषण उद्योग लगाने की स्वीकृति दे दी और हमारी संस्था पर क्रोध बरसा दिया। हमारे जल विद्यालय का 25 वर्ष पुराना भवन तोड़ दिया। सारे भवन को तहस–नहस कर दिया। हमने शान्ति कायम कर के सभी सहन किया। भारत सरकार से प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह का सम्बल मिला। जल संसाधन मन्त्री प्रोफेसर सैफुद्दीन सोज़ स्वयं हमारी संस्था में पहुँचे। उन्होंने वसुन्धरा राज्य सरकार के इस कृत्य की बहुत भृर्त्सना की। हमने अपना काम जारी रखा। जल संरक्षण कार्य अभी भी जारी है।

तरुण भारत संघ ने मेवात के 200 से ज्यादा गाँवों में जल संरक्षण कार्य कर के लोगों की खेती में जल उपयोग दक्षता बढ़ाई है। यहाँ के किसानों ने वर्षा–चक्र को समझकर कुछ गाँव का फसल–चक्र तय किया है। खेती व पशुपालन को बढ़ावा दिया है। जबकि बेपानी होकर उजड़कर फसल चक्र को वर्षा–चक्र समझकर जोड़ना शुरू हुआ तो इस क्षेत्र में सरसों की फसल का चलन आरम्भ हुआ। बाद में लोगों ने प्याज जैसी बाजारी फसलों पर भी जोर दिया, लेकिन साथ ही साथ जौ, सरसों, चना, ज्वार, बाजरा भी बराबर बनाकर रखा था, जिससे कि जल उपयोग में सन्तुलन बना रहे। बेपानी क्षेत्र पानीदार बन गया। जाट मालियर गाँव में जल संरक्षण करके तालाब, बाँध, ताल–पाल–झाल बना कर बेपानी गाँव को पानीदार बना दिया। ये गाँव अब अपनी खेती, पेड़–पौधे व जंगल बचाकर तिा हरियाली बढ़ाने का काम करके सुखी और समृद्ध हैं। ऐसे गाँवों की सनातन समृद्धि हो सकती है। यहाँ के राजनेता लालची विकास के स्वप्न नहीं दिखाएँ, लोगों को स्वावलम्बी सदाचारी बना रहने दें। राजनेता को समाज का स्वावलम्बन रास नहीं आता, इसीलिए आज हमारा समाज राजनेता और मतदाता दो वर्गों में बँट गया है। राजनेता समाज को जाति–वर्ग व धर्म–संप्रदाय के आधार पर बाँटता है; इसलिए मतदाता बँट गया है। मतदाता को क्रान्ति, परिवर्तन व विकास की प्रक्रिया समझ में नहीं आती, इसलिए वह केवल अपने लालची विकास के नारों में बँट गया है। हमने तिजारा, रामगढ़, थानागाजी में किये गये तरुण भारत संघ के कार्यों में विकास के नारे नहीं दिए; समाज जो करना चाहता है, वही करने के लिए प्रेरित, शिक्षित और संगठित किया है। परिणामस्वरूप यहाँ के लोग अपने काम को अपने सारे कामों के साथ जोड़कर और देख कर स्वयं करने लगते हैं। मिशाल के तौर पर हमारे क्षेत्र के तालाबों के लिए 'जल बचाओ जोहड़ बनाओ यात्रा' पिछले 35 सालों से देव उठनी ग्यारस से आरम्भ करके जरूरत के

अनुसार लोगों द्वारा हर साल चलायी जाती रही है। रक्षा बन्धन पर पेड़ों के राखी बाँधकर 'पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ चेतना यात्रा' चलाते हैं अप्रैल–मई में 'ग्राम स्वावलम्बन यात्रा' सतत् चली आ रही है। ये सभी काम समाज ने स्वयं अपनी समझ से ही आरम्भ किये थे। इन्हीं कामों के आधार पर अब 'जल बचाओ बिजली बचाओ' जैसे नारे विकसित किए हैं और ऐसे ही सामाजिक कामों के दर्शन से भारत सरकार ने 'मनरेगा' योजना आरम्भ की थी। लोकतन्त्र वही है, जहाँ लोक की बातों को तन्त्र मानता ही हो। तन्त्र लोक की आवश्यकताओं को पहचान कर उनकी पूर्ति की दिशा में काम करता है। लोक– व्यवहार व संस्कार से सीख कर तन्त्र काम करे, तभी मानो लोकतन्त्र है। जब लोकमत से निर्मित लोक–शक्ति से बना नेता और तन्त्र लोक को सुनें नहीं और उससे बराबरी का संवाद ही नहीं साधे, तो मानो वह लोकतन्त्र नहीं है। तानाशाही–तन्त्र भी हो सकता है, जो उद्योगपति या ठेकेदारों का हित साधने वाला औद्योगिक तन्त्र या ठेकेदार तन्त्र भी बन सकता है। आज भारत में यही दिखाई दे रहा है। जहाँ–तहाँ राज्यों में भी वैसा ही दर्शन है। पंचायत नगर निगम में भी ठेकेदारों के इसी प्रकार के प्रभाव का दर्शन होता है। ऐसी व्यवस्था को लोकतन्त्र नहीं कह सकते। लोक दर्शन से संचालित तन्त्र ही लोकतन्त्र कहा जा सकता है। धन–शक्ति व हिंसक बल–शक्ति से चलने वाला तन्त्र लोकतन्त्र नहीं होता। भारतीय लोकतन्त्र का संचालक सूत्र "सत्यमेव जयते" हैं। अहिंसा का सूत्र बराबरी के रास्ते पर चलने के लिए बना था। सत्य अहिंसक होता है, इसमें गरीब और अमीर दोनों बराबरी से जी सकते हैं। हिंसा केवल शक्तिशाली की ही रक्षा करती है, हिंसा चन्द लोगों को ही शक्तिशाली बनाती है। जब गरीब को दबाकर धनी ऊपर आता है, तब समझो झूठा लोकतन्त्र है। सच्चे लोकतन्त्र में गरीबी और अमीरी की दूरियाँ कम होती हैं। जब गरीबी और अमीरी की दूरियाँ बढ़ जाती हैं, उस देश में लोकतन्त्र जीवित नहीं रहता। यदि नाम के लिए लोकतन्त्र है, तो वह झूठ है, सत्य नहीं है। इसीलिए मुझे ऐसा लगता है कि आज भारत का "सत्यमेव जयते" वाला सिद्धान्त अब "झूठमेव जयते" या "असत्यमेव जयते" में बदल गया है। झूठ को चलाना व टिकाना हिंसा द्वारा ही सम्भव है। झूठ कभी अहिंसक नहीं हो सकता। अहिंसा पर झूठ और हिंसा आसानी से कब्जा कायम कर लेते हैं। भारत में आज इसी का दर्शन हो रहा है।

25 अप्रैल को जाट मालियर और नीमी गाँव में देखा कि जाट और मुस्लिम तथा गुर्जर और मुसलिम कितने प्यार से रहते हैं। लेकिन राजनेता इन्हें लड़ाने का प्रयास कर रहे हैं। आजादी के आन्दोलन में भी यहाँ हिंदू मुसलमानों की गहरी लड़ाई कराई थी, तब बापू ने विनोबा को भेजा था और स्वयं बापू भी 19 दिसंबर को घासेड़ा आए थे। क्योंकि बापू 'सत्यमेव जयते' द्वारा अहिंसक समाज की स्थापना करना चाहते थे। अब तो मैं 12 जनवरी से आज 26 अप्रैल तक

भारत के सभी राज्यों में एक बार अविरल गंगा यात्रा करके जा चुका हूँ। देख रहा हूँ, झूठ फैलाया जा रहा है, लोगों को लड़ाया जा रहा है। अब तो चुनावी माहौल है, चारों तरफ छूट की गर्मी का दर्शन है, इसमें तो केवल 'झूठमेव जयते' ही दिखाई दे रहा है। सभी नेता अपनी–अपनी घोषणाएँ मतदाताओं को बढ़ा–चढ़ाकर सुना रहे हैं। जनता भी झूठ पर तालियाँ बजा रही है। सत्य बोलने व जो करो वही बोलो का आग्रह नहीं कर रही। इसका अर्थ यह नहीं कि जनता भी सम्पूर्ण रूप से झूठ ही चाहती है, लेकिन नेताओं की घोषणाएँ और लुभाने वाले नारे लोगों का बड़े अच्छे लगते हैं। इसलिए जनता भी आनन्द से झूठ को सुनती है। अब झूठ का असर लोगों में भी बहुत दिखता है। ये भी अब झूठ का ही सहारा लेने लगे हैं। ये आपस में झूठ नहीं बोलते, लेकिन अदालतों, नेताओं व अफसरों से झूठ बोलकर काम कराने लगे हैं। अब बदलते युग में समाज का बदलाव इस दिशा में होना चिंताजनक है। इससे समाज राज्य में अविश्वास ही बढ़ेगा और अपने विचार व काम पर भी अविश्वास बढ़ता है। मैं देख रहा हूँ कि राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा व उत्तर प्रदेश में फैले मेवात में परिवर्तन किस दिशा में लेकर जा रहा है। आजादी की क्रान्ति से यहाँ टूटा, बिगड़ा विश्वास बापू के प्रयासों से पुनः स्थापित हुआ था; लेकिन अब पुनः वही स्थिति बन गई है। इसे बदलना पहले तो आसान था, लेकिन अब पुनः कठिन हुआ है। मैंने जब काम शुरू किया था, तब लोग मुझ पर विश्वास करके अपने काम स्वयं कर लेते थे; लेकिन आज उन्हें उनके कामों को करने के लिए दूसरों की मदद की जरूरत होती है। यह मदद वैशाखी की तरह कुछ दिन तो ठीक है कि पैर टूट जाने पर पैर की मरम्मत करने हेतु सहारा बन जाए, लेकिन जब सदैव वैशाखी से चलने का सहारा ढूँढ़ें, तो वह कभी भी स्वावलम्बी नहीं बनने देती, बल्कि परावलम्बी बना देती है। आज की हमारी व्यवस्था, हमारे मन मस्तिक का ऐसा ही निर्माण कर रही है, जो हमें परावलम्बी बनाता है, लेकिन भारतीय लोकतन्त्र को अब यह बीमारी लगी है, तानाशाह अपने को चुनवाने हेतु चुनाव आयोग को भी निष्प्रभावी बना देता है। आवेदन करने के दिन एक उम्मीदवार अपने ऊपर 12 करोड़ रुपये फुलखर्च करने की इजाजत देता है। रैली निकालने हेतु सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च होने देता है। जब एक उम्मीदवार अपने चुनाव पर इतना अधिक खर्च कराएगा तो अन्य भी सभी वैसा ही करेंगे। उन्हें कौन चुनाव आयोग रोकेगा? भारतीय संसदीय व्यवस्था में संसद् सदस्य ही अपना नेता चुनते हैं, वह चुना हुआ नेता ही प्रधानमन्त्री बनता है। लेकिन आज प्रधानमन्त्री पूरे देश की गली–कूँचे में वोट माँगने जा रहा है, ऐसा पहली बार हुआ है। अच्छा चुनाव आयोग इस पर रोक लगा सकता था और दो माह के लिए ऐसे प्रचार को रुकवा सकता था। सभी सांसद उम्मीदवार अपनी और अपने दल की रीती नीति बता कर घोषणा पत्र में लिखी संकल्पनाओं

की जानकारी देकर वोट माँगते हैं। वे चुने जाने के बाद क्या करेंगे? वह भी बताते हैं। प्रतिनिधि चुनाव तो उम्मीदवारों की योग्यता, क्षमता और उसकी रीति नीति को देख कर ही होता है; इस बार ऐसा नहीं हो रहा है। अब केवल कुछ ही नेता हैं, उनमें से भी केवल एक ही बराबर सभी सभाओं में बोल रहा है– मैं प्रधानमन्त्री हूँ और मैं ही रहूँगा। मुझे देखकर ही आप अपना मतदान करो। मतदाता इस बार मोदी के प्रचार को वोट दे रहा है, पर आयोग की हिम्मत नहीं है कि ऐसे प्रचार को रोके। कोई दूसरा प्रधानमन्त्री बनने के नाम पर वोट नहीं माँग रहा है, फिर पक्ष विपक्ष कहाँ है? जब केवल प्रधानमन्त्री का उम्मीदवार जनता से वोट माँगने नहीं जाना चाहिए, अभी तो जा रहा है। रोकने वाला कोई नहीं है। तब इस चुनाव को निष्पक्ष कैसे कहें? यह चुनाव पूर्णतः पक्षपाती चुनाव है। एक ही व्यक्ति चुनाव प्रचार करने में लगा हुआ है। वह अपने ही नाम पर वोट माँग रहा है। दूसरी तरफ साझी मत माँग है। लोकतन्त्र कोई एक नहीं बनाता, सभी मिलकर सभी के लिए लोकतन्त्र का निर्माण करते हैं। अभी तो एक ही व्यक्ति संविधान के विरुद्ध कार्यरत है। सारी संवैधानिक संस्थाएँ आज एक ही व्यक्ति के इशारों पर चल रही हैं। जो नहीं चलतीं, उन्हें अपमानित करके हटा दिया जाता है। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को शंकाओं के घेरे में खड़ा कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया से आज पूरा देश आहत है। नहीं जानते क्या होगा? भारतीय जनता दूरदृष्टि वाली है, भारत में जब भी कभी लोकतन्त्र पर ऐसा संकट आया है, तभी मिलकर उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन किये गये हैं। इस बार कई कारणों से मतदाता सशंकित हैं, किसे चुनें? भारतीय संविधान का सम्मान करने वाले प्रधानमन्त्री को मत नहीं देंगे के अपनी 17वीं लोकसभा उम्मीदवारों को ही भविष्य को सुधारने, मानवता और प्रकृति को सम्मान देने वाले उम्मीदवारों को ही अपना मत देंगे। जीता हुआ सांसद ही प्रधानमंत्री के लिए चुनाव करेगा। भारत का लोकतन्त्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र होकर चल रहा है, यह लोकतन्त्र अभी तक किसी भी तन्त्र के प्रभाव में नहीं आया। उद्योगपतियों, धनपतियों व शक्तिपतियों सभी से मुक्त था, अब जरूर चन्द उद्योगपतियों के नियन्त्रण में आ रहा है। ऐसा लगता है, अब चुनाव भी प्रभावित हो रहे हैं। मीडिया भी प्रभावित है और वह मतदाताओं को भी प्रभावित कर रहा है। चुनाव के समय दो माह शड्यन्त्रकारी राजनेताओं के दुष्प्रचार से लोकतन्त्र को बचाने हेतु चुनाव आयोग को सत्ता से पूरी शक्ति से अनुशासन पूर्वक कार्यवाही करना चाहिए। एक व्यक्ति को शक्तिशाली बनाने से रोकना है लोकतन्त्र साझी शक्ति है, साझी शक्ति को ही बढ़ावा देना चाहिए। राष्ट्रीय साझा भविष्य से जुड़े साझी समतामूलक लोकशक्ति को शक्ति प्रदान करना ही लोकतन्त्र का मूल मन्त्र है। भारतीय संविधान समाजवाद और समता की तरफ आगे बढ़ाता है। जिस नेता ने संविधान विरुद्ध काम किया हो, उसे

नहीं चुनें। आज संविधान का दिखावटी सम्मान करने वाले बहुत हैं। सच्चा सम्मान करने वालों को पहचानें। संविधान का सम्मान भारत के आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक बराबरी से सम्मान करने वाले ही सच्चे लोकतन्त्र रक्षक व समर्थक होते हैं। जो धर्म सम्प्रदाय को बाँटते हैं, वे सच्चे लोकतन्त्र समर्थक नहीं होते। इन्हें संविधान का सिद्धान्त भी समझ में नहीं आता। इनके आचरण में भी संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करने का भाव नहीं आता। संविधान में शक्ति है। संविधान की शक्ति में भक्ति बड़े हिस्से में खत्म है, केवल दिखावा कर रहे हैं। एक समूह है, जो अभी संविधान का सम्मान करता है, लेकिन बिना जाने समझे कैसा सम्मान ? भारत में आज तक संविधान का जन शिक्षण किया नहीं गया। एक समय था, जब संविधान को जानने वाले ही नेता के रूप में चुनकर आते थे; वे समाज को भी साथ–साथ सिखाते थे। आज भारत में ऐसे व्यक्ति चुनकर नहीं आ रहे हैं। इसीलिए अब संविधान शिक्षण नहीं है, केवल लालची विकास का ही प्रचार प्रसार और शिक्षण हो रहा है। यही हमें लालची बनाकर हमें लूट फूट का शिकार बना रहा है। यह कार्य अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण करने वाले ही कर रहे हैं। 17वीं लोकसभा चुनाव के दौरान मैं अविरल गंगा यात्रा में जहाँ भी गया, वहाँ सभी जगह पर मोदी चर्चा मीडिया करता ही था। बहुत कोशिश के बाद पत्रकार मोदी के विषय में समर्थन उत्तर पाने वाला सवाल पूछते थे, क्योंकि वह जानता था कि मैंने भारत भर में गंगा सद्भावना और गंगा अविरलता यात्रा की है। इसीलिए पूछते थे, भाजपा कितनी सीट जीत रही है ? मेरा उत्तर था– मालूम नहीं। इस प्रकार मुझे प्रोत्साहित किया जाता था। मैं कहूँ कि अमुक सीट जीत रहे हैं। उम्मीदवार का नाम लेकर सवाल नहीं पूछते थे, बल्कि मोदी की सीट कहकर पूछते थे। ऐसा लगता था, जैसे बी.जे. पी. नहीं, मोदी ही अकेले चुनाव लड़ रहे हैं। इस वातावरण ने मुझे बहुत दुःखी किया। लोक उम्मीदवार का नाम क्यों नहीं बोल कर पूछते थे, क्योंकि पूरे देश का मीडिया केवल और केवल मोदी हेतु ही काम कर रहा है। उनको कोई दूसरा नेता सुहाता नहीं है। जब वे भारत के अकेले ही नेता हैं तो दूसरा उनके सामने कोई और कैसे होगा ? प्रधानमन्त्री कार्यालय ने मीडिया को कैसे बोलना बन्द कराया है ? सवाल है। हिंदू, इण्डियन एक्सप्रेस जैसे अखबार एन.डी.टी. वी. व्यापार जैसे कुछ सत्य प्रकट करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन इन पर भी प्रधानमन्त्री कार्यालय का मजबूत शिकंजा कसा हुआ है। फिर भी भारत का मीडिया अभी पूरा बिका नहीं है, खरीदा भी नहीं जा सकता। हम आशा करते हैं कि अब मीडिया कुछ आजाद होकर अगले चुनाव तक जनता के सवाल– साझा भविष्य, नदी के स्वास्थ्य और समाज के स्वास्थ्य के रिश्ते, हमें आर्थिक समता नहीं तो जीवन, जीविका, ज़मीर के रिश्तों को 60% जनता हेतु विचारणीय हैं। इन पर विचार किये बिना भारत का लोकतन्त्र समृद्ध नहीं बच सकता है। आज

जलवायु परिवर्तन घोर संकट में है। इसे समझे बिना भारत की किसानी, जवानी व पानी तीनों नहीं बचाये जा सकते। खेती प्रधान भारत आज 70% बेपानी बन गया है। 60% जनता को स्वस्थ पेयजल उपलब्ध नहीं है। इस समस्या का समाधान हमने 35 वर्षों में सफलतापूर्वक किया है। किसानों ने देशभर में जहाँ तहाँ हमारे अनुभव अपनाये हैं, लेकिन राजनेताओं ने सदैव अड़चन ही पैदा की है। क्योंकि इस स्वाबलम्बी काम से नेता को भ्रष्टाचार करने वाला बनाने का अवसर नहीं मिलता, वह दान–दाता नहीं बन सकता, वह अपने चमचों का संरक्षण नहीं कर सकता। इसलिए उन्हें स्वाबलम्बी काम पसन्द नहीं हैं। लोगों को भिखारी बनाओ, उन्हें भीख देकर वोट माँगो तो यह मामला बराबर हो जाता है। इसे ही हमारे आज के नेता बराबरी कहते हैं। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक बराबरी की समझ उनकी समझ से बाहर है। इसीलिए वोट पाना ही इनका सबसे बड़ा मख्य लक्ष्य है, इसके सामने वे कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। मताधिकार पाकर जीतने के बाद सभी कुछ भूल जाना अब इनकी आदत बन गई है। यह आदत वहीं छूटती है, जहाँ के लोग भिखारी नहीं बनते, बल्कि नेता को ही भिखारी बना देते हैं, वहाँ नेता की बुद्धि मतदाता के प्रति उत्तरदायी बनी रहती है। हमारे बहुत से कार्य क्षेत्रों में हमने प्रत्यक्ष देखा है शक्ति आने पर बाग बाग जाने पर भीगी बिल्ली बन जाते हैं। हम किसी को भी भीगी बिल्ली नहीं बनाना चाहते, लेकिन लोक शक्ति साकार बनी रहे, संगठित रहे। उसका प्रमाण है, नेता को गलत काम करने से रोकना।

राजस्थान में 2019 में सरकार ने सब का जल दर समान हक सिद्धान्त पारित किया है। 15000 लीटर प्रत्येक शहरी परिवार को निःशुल्क देने का काम किया है। यह भारत के जल का बाजारीकरण व निजीकरण रोकने के लिए सफल व बहुत अच्छा होगा। यह जल के सामुदायिक अधिकार हेतु सुनिश्चितता प्रदान करता है। ऐसा ही दूसरे राज्यों में भी होना चाहिए। इस हेतु अविरल गंगा यात्रा में हमने सभी सरकारों से बातें की हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, दिल्ली आदि राज्यों ने ध्यान देकर किया है। हमने जल साक्षरता पर भी जोर दिया है। पर्याप्त जल होने पर भी कुप्रबन्धन के कारण जल संकट है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा बान्ध बनने पर भी बेपानी होने का सबसे बड़ा उदाहरण है। यही सबसे ज्यादा आत्महत्याएँ हुई हैं। क्योंकि वहाँ जल उपलब्ध नहीं तो रोजगार नहीं और पानी नहीं तो खेती नहीं । आज पानी की कमी और अधिकता उजाड़ती है। वह लाचार, बेकार और बीमार बनाती है। आज 2019 में भारत ऐसा ही दिखाई दे रहा है। भारत की लाचारी और बीमारी का कारण बेकारी ही है। यह 5 वर्षों में बहुत तेज गति से बढ़ी है।

मुझे याद है, जब मोदी जी ने कहा था पिछली सरकार गंगा जी के लिए 30 वर्षों में नहीं कर पाई वह हमारी सरकार 3 माह में कर देगी। आप अपना

अनशन रोक दो। प्रोफेसर जीडी अग्रवाल जी बहुत सरल, संतऔर वैज्ञानिक थे। उन्होंने इनकी बात सुनकर अनशन रोक दिया था। इसे रोकने के लिए शंकराचार्यश्री निश्चलानंद जी ने भी बहुत आग्रह किया था। अनशन रोकने के 3 वर्ष तक बहुत से लोगों द्वारा प्रधानमंत्री जी को स्मरण कराया। प्रधानमंत्री जी ने नहीं सुना। 20 जनवरी को प्रोफेसर जीडी अग्रवाल जीने पत्र लिखा। 22 जून से आमरण अनशन शुरू हुआ। दूसरा पत्र लिखा फिर आखरी तीसरा पत्र लिखा। जिसमें लिखा राम जी के दरबार में जाकर नरेंद्र मोदी आप को दंडित कर आऊंगा। आपने राम जी की पूज्या गंगा जी को धोखा दिया।झूठ बोला है। गंगाजल हाथों में लेकर हम प्रतिज्ञा करते हैं। उसे जरूर पूरा करते हैं। विश्वास दिलाने हेतु भी हम गंगा की शपथ लेते हैं। नरेंद्र मोदी जी ने उक्त किसी भी बात को स्मरण नहीं किया। ना तो जीडी अग्रवाल से बात करी और ना ही उनसे बात करने किसी को भेजा। जीडी अग्रवाल ने अपने संकल्प शक्ति से 111 दिन आमरण अनशन करके चले गये। नरेंद्र मोदी जी को गंगा जी दण्डित करेगी या आर्शीवाद देगी? 23 मई को पता चलेगा। इस दुनिया से

कर्नाटक 20 अप्रैल

पश्चिम घाट सुमोगा के आसपास 3 सभाएं आयोजित करके उनमें जलवायु परिवर्तन पानी, खाद्य सुरक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। ग्रीन एनर्जी के लिए भी जल की मांग को कम करना है। लगातार बाढ़ और सूखे की बढ़ती प्रवृत्ति पूरी दुनिया के लिए चुनौती है। वहीं बढ़ती आबादी के बोझ के कारण नदियों और जल संरचनाओं का अस्तित्व संकट में है। कई देश अपनी नदियां ठीक कर चुके हैं या करने का प्रयास कर रहे हैं। पूरी दुनिया में पवित्र गंगा की स्वच्छता की चिंता है। दूसरी तरफ नवाचार के नाम पर पूरी दुनिया में पानी का बाजार खड़ा करने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों की सक्रियता और साजिश लगातार बढ़ रही है। नवाचार के नाम पर कम्पनियां अपनी तकनीक बेचकर अधिक लाभ कमाना चाहती हैं। दक्षिण कोरिया तकनीकी और औद्योगिक विकास के लिए उभरती अर्थव्यवस्था है। जहां इलेक्ट्रानिक और ऑटो मोबाइल का बड़ा बाजार है। डेगू जैसे शहर में 99 प्रतिशत पानी की सप्लाई निजी क्षेत्र में है। और कोरिया वाटर के नाम की संस्था लगातार प्रयास कर रही है कि इसी तरह के मॉडल को बढ़ावा दिया जाये।

विश्व जल सम्मेलन में हंगरी, उजवेकिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों ने अपने संकटों को पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया वहीं भारत जैसा विशाल देश वैश्विक स्तर पर जल संकट के समाधान के लिए वैश्विक स्तर पर हो रहे चिंतन में पिछड़ा हुआ दिखाई दे रहा है। इस महत्वपूर्ण आयोजन में भारत की तरफ से किसी मंत्री और विभागाध्यक्ष की अनुपस्थिति ने पूरी दुनिया को अचरज में डाला है। मौजूदा सरकार नदियों को निर्मल और अविरल

बनाने के प्रयासरत है। वहीं वैश्विक आयोजन में इसकी झलक दिखाई न देना भारतवासियों के लिए निराशा है। जल संकट के समाधान के लिए भारत सरकार के प्रयासों को इस तरह के अवसरों पर और अधिक प्रभावी ढ़ंग से दिखाने की जरूरत है। जब सरकार नदियों को अविरलता और निर्मलता के लिए संवेदनशील दिखाई दे रही है। जो पानी के लिए दुनिया के सबसे बड़े कार्यक्रम में इस झलक दिखाई देने की आवश्यकता है।

राजनीतिक दलों का सुखाड़–बाढ़, हरियाली और जल की कमी अधिक से धरती को चढ़ता बुखार बिगड़ता मौसम का मिजाज लाचारी बेकारी बेरोजगारी की तरफ ध्यान क्यों नहीं जा रहा है। नदियों के स्वास्थ्य से मानव स्वास्थ्य जुड़ा है। खनन से रेत खाली होती है। मानो जैसे फेफड़ा आदमियों से अलग कर दिया है। पश्चिमी घाटों के संरक्षण की सरकार ने कोई भी रिपोर्ट लागू नहीं की है। इन पर राजनैतिक दल चर्चा क्यों नहीं कर रहे हैं? उक्त सवालों में चेतना है? लेकिन जवाब खोज कर काम करने में कोई लगन नहीं चाहता है। यह मेरी बातचीत का निष्कर्ष है। मैंने बहुत प्रयास किया। ये तैयार होकर दलों को सच्ची राजनीति सिखाएं। मैंने हिमालय व गंगा का जिक्र किया।गंगा अविरलता आंदोलन की बातें सुनाई। सुनने में बहुत रुचि है। हिमालय और पश्चिमी घाटों की विभिन्नताएं व विविधताओं पर बातें होने लगी। आज पूर्व प्रधानमंत्री श्री देवगोड़ा भी हमारी सभा में आए। उन्होंने कहा वर्तमान सरकार तो पानी व पर्यावरण की चिंता नहीं करती है। उसके सामने बातें रखने से काम नहीं चलेगा। आज हमारी सरकार आई तो हम पानी पर्यावरण आदि सभी बातें करेंगे। पहली सरकार के एडवोकेट जनरल रवि वर्मा ने भी अपनी बात रखते कहा। अब मानव, प्राकृतिक अधिकारों की अनदेखी एवं संविधान की हत्या हो रही है। हमें संविधान में जो मिला पहले उसे प्राप्त करें। फिर आगे की बातें करेंगे।

21 अप्रैल को गदग कर्नाटक मैं मीडिया के साथ बातचीत में कहा डीआर पाटिल के घोषणा पत्र में पानी पर्यावरण है। इन्होंने प्रकृति हित में लोगों से मिलकर अच्छी बातचीत और अच्छा काम किया है।इचनहल्ला पर अच्छा काम किया था। हम ऐसे ईमानदार नेताओं को संसद भेजें। यहां के लोगों में भी चेतना नजर आई। उन्होंने मोदी के गंगा संकल्प जाने। गंगा में क्या किया? मैंने कहा निर्मलता के नाम पर नमामि गंगे खाते से बड़ी राशि बांट दी है। अविरलता के लिए कुछ भी नहीं किया। इसलिए हमें गंगा अविरलता यात्रा आयोजित करनी पड़ रही है। प्रोफेसर जीडी अग्रवाल जी के गंगा सत्याग्रह करते हुए प्राण निकल गए।सरकार ने इनकी एक भी नहीं सुनी है।

पृथ्वी दिवस लखनऊ 22 अप्रैल बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन का संकट और समाधान पर बोलते कहा हरियाली का

घटना, ताप का बढ़ना है, नदियों–धरती का दूषित होना हमारी बीमारी का बुलावा है। कानपुर कन्नौज के बीच कैंसर रोगियों का बढ़ना इसी बात का प्रमाण है। राजस्थान का अनुभव हमने उन्हें सुनाया बताया। जब खनन ने अरावली पहाड़ियों को नंगा कर दिया था तो सूरज की किरणें वहां का तापक्रम ऊपर उठा देती थी। जब खनन बंद हुआ जल संरक्षण शुरू हुआ तो हरियाली वापस लौट आई और राजस्थान में वर्षा का चक्र घुमा। अब यहां अच्छी वर्षा होती है। तापक्रम भी कम हुआ। जो लोग बेपानी होकर पलायन करके चले गए वे अब पानीदार बनकर अपनी जमीन पर खेती करने लगे हैं। मेरे इस भाषण को सुनकर कई लोगों ने जिन्होंने इस काम को देखा था उन्होंने अपनी सकारात्मक टिप्पणी करते हुए कहा "सामुदायिक विकेंद्रित जलप्रबंधन" ही जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उन्मूलन का एक सच्चा उदाहरण है। हमें अपने विकास की नीति बदलनी होगी। विस्थापन–विकृति–विनाश मुक्त विकास काम ही प्रकृति पुनर्जीवन कर सकती है। अब विकास का नारा नदी पुनर्जीवन का नारा राजनेताओं को समझ कर काम करना होगा।

आधा भारत बाढ़-सुखाड़ का शिकार है

भारत में आधे से ज्यादा छोटी नदियां सूख कर मर गई हैं। चन्द बड़ी नदियां ही नाले के रूप में समुद्र में जाकर मिलती हैं। बड़ी नदियां भी अब केवल वर्षा के दिनों में ही समुद्र तक पहुँचती हैं। हमारी नदियों को सुखाने का काम जंगलों की कटाई से शुरू हुआ है। भारत की 98 प्रतिशत नदियां भू–जल से ही बनती और बहती हैं। जैसे ही भूजल खाली होता है, वैसे ही नदियां सूख जाती हैं।

सूखी नदियों को पुनर्जीवित करना कठिन नहीं है, बहुत ही सरल और आसान काम है। हम वर्षा जल को मिट्टी को घोल कर बहा ले जाने से रोकें।धरती का पेट शुद्ध पानी से भरें। धरती का पेट भरते ही अंदर के जल दबाव से जल स्रावित होता है। जल स्राव की बहुत सारी धाराएं मिलकर ही नदी का प्रवाह बनाती हैं।

हमें नदियों को शुद्ध सदानीरा बनाकर भारत की खेती, व्यापार और जीवन को दुरूस्त करने के इस रास्ते पर चलना होगा। इस रास्ते पर चलने के लिए जहां पानी बरसता है और मिट्टी को साथ लेकर दौड़कर चलता है, उसे धरती का खुला पेट देखकर उसमें बैठा देना होगा। फिर उसको सूरज की नजर नहीं लगेगी अर्थात् पानी उड़ेगा नहीं। जब वाष्पीकरण नहीं होगा तो धरती का पेट पानी से भर जायेगा। वही जल, धरती से निकलकर झरने का रूप लेकर, जल धारा बनायेगा और बहुत सारी जल धाराएं मिलकर नदियां बनायेंगी।

तरुण भारत संघ ने पिछले 34 वर्षों में इसी प्रकार काम करके नदियों को पुनर्जीवित किया है। हमने अब पूरे भारत में इसी प्रकार का काम करने का संकल्प लिया है। जिन जिलों में सुखाड़ है, वहाँ बीजापुर 'राष्ट्रीय जल सम्मेलन' की जल घोषणाओं के प्रकाश में वर्षा जल को सहेजने का कार्य शुरू किया है। अब पूरे भारत देश में 'जल बिरादरी' और 'जल जन जोड़ो अभियान' के लोग बाढ़–सुखाड़ मुक्त भारत बनाने हेतु अपने–अपने कार्य क्षेत्र में जुटे हैं।

हमने भारत भर के सभी राज्यों में छोटी–छोटी नदियों पर एक–एक, दो–दो गांवों में जल संरक्षण हेतु 'सामुदायिक विकेन्द्रित जल प्रबंधन' के काम शुरू किए हैं। महाराष्ट्र में अग्रणी नदी पर नरेन्द्र चुघ जी, कर्नाटक में रामलिंग नदी पर पीटर एजेक्जेण्डर जी, चन्द्र भागा नदी को पुनर्जीवित करने हेतु किशोर धारिया जी और संजय यादव राव जी, तमिलनाडु में ताम्रवर्णी में गुरूस्वामी जी और अम्बे जुगई में होरणां नदी पर अनिकेत लोहिया जी, जम्मू में झेलम नदी पर मेजर जर्नल गोवर्धन सिंह, उत्तर प्रदेश में श्री संजय सिंह, मध्य प्रदेश की कुछ नदियों पर भी संजय सिंह एवं नोर्थ ईस्ट की नदियों पर

विभूति राय जी और हरि जी ने जल साक्षरता करके लोगों को जल, जंगल और ज़मीन के संरक्षण के कार्यों में लगाया है।

इस प्रकार भारत भर की सैकड़ों छोटी–छोटी नदियों के पुनर्जीवन का काम तरुण भारत संघ के मार्गदर्शन में अब नये सिरे से आरम्भ हुआ है। इस संगठन को पुराना अनुभव है। इस संगठन ने राजस्थान की आठ छोटी–छोटी नदियों पर 34 वर्षों में प्रत्यक्ष जल, जंगल और जमीन संरक्षण के कार्य करके पुनर्जीवित करने का कार्य किया है। इस कार्य को आरम्भ कराने वाला व्यक्ति आयुर्वेद का साधारण वैद्य है। लेकिन जब उसे जल संरक्षण कार्यों की लगन हुई, तो वह अपने समाज से सीख कर नदी पुनर्जीवन के काम में जुट गया था। अब हमारा समाज देशभर में इस काम को अपना काम मानकर स्वयं करने लगा है।

इस अनुभव को विस्तार देने हेतु जल साक्षरता का एक राष्ट्रीय अभियान शुरू किया है। इसका पहला सम्मेलन कर्नाटक के बीजापुर में था। अभी दूसरा सम्मेलन बुन्देल खण्ड में नवम्बर 2019 में होगा। लोगों को सुखाड़ और बाढ़ मुक्त भारत बनाने के लिए यह अभियान पूरे जोरों से भारत भर में चलाया जा रहा है।

समाज के सभी वर्गों को जल साक्षरता हेतु प्रशिक्षित करने का प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतभर में चालू किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत उन्हीं के कार्य क्षेत्रों में प्रत्यक्ष जा कर उन्हें जल संरक्षणकार्य समझने, जल सहेजने, जल के सभी पक्षों कोलोगों को समझाने तथा जल के अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण को रोकने हेतु 'जल जुम्बिस' आरम्भ हो चुकी है। इस जल जुम्बिस का नाम 'जल जन जोड़ो अभियान' रखा है। इस का शुभारम्भ तीन वर्ष पहले तरुण भारत संघ में किया गया था, जो अब बहुत तेजी से विस्तार कर रहा है।

आज सितम्बर 2019 में भी तमिलनाडु और कर्नाटक पूरा सुखाड़ की चपेट में है। बुन्देलखण्ड, केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगना व छत्तीसगढ़ राज्य भी लगभग आधे से ज्यादा सुखाड़ ग्रस्त हैं। मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, उड़ीसा व पश्चिमी बंगाल आधे से थोड़ा कम सूखा ग्रस्त हैं। सितम्बर के पहले सप्ताह में ही भारत के 254 जिले और 19 राज्य सूखा प्रभावित हैं। यह सूखा, नदी जोड़ से नहीं मिटाया जा सकता।

सोच समझकर पर्यावरणीय दृष्टि से जहाँ उचित हो वहाँ नदियों को तालाबों से जोड़ें – बुन्देलखण्ड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आदि राज्यों में नदियों को तालाबों से जोड़ना उचित होगा। इस कार्य में हमारा सरकारी खजाना खाली नहीं होगा। देश के गरीब से गरीब गावों के लगभग सभी समुदायों को, जीने के लिए अन्न, जल व काम मिलेगा। खेती व व्यापार के लिए जल के रूप में एक बड़ा सहारा उपलब्ध हो सकेगा। इस कार्य से जल विवाद मिटेगा। नदी

जोड़ से तो जल विवाद बढ़ेगा ही। इसलिए हमें जल संरक्षण का सामुदायिक प्रबंधन करना चाहिए। 21 वीं शताब्दी के लिए इसकी आवश्यकता है। तरुण भारत संघ अपने 34 वर्षों के अनुभव से भारत को बाढ़ व सुखाड़ मुक्त बनाने का कार्य तेजी से कर रहा है। इसीलिए जल साक्षरता द्वारा जल संरक्षण का प्रत्यक्ष (सीधा) काम हाथ में लिया है।

भारत स्वाराज्य और सुशासन के लिए भारत का बाढ़–सुखाड़ मुक्त होना जरूरी है। राज–समाज सभी को इस कार्य में तत्काल जुट जाना चाहिए। भारत बाढ़–सुखाड़ मुक्त बन सकता है। बाढ़–सुखाड़ को सहवरण करने योग्य बनाया जा सकता है। हमें तत्काल मिलजुल कर भारत को बाढ़–सुखाड़ मुक्त बनाने के कार्य में जुट जाने की जरूरत है। इसी कार्य से भारत की सभी छोटी–छोटी नदियों के पेट में पानी रहेगा। सूखी नदियां पुनः जीवित होकर शुद्ध सदानीरा बन जायेंगी।

23 अप्रैल उत्तर प्रदेश अयोध्या में यहां सरयू नदी की हालत खराब है। वहीं सरयू नदी यहां के लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रही है। इस पर कोई राजनेता चर्चा नहीं करता है। यहां बाबरी मस्जिद व राममंदिर की चर्चा कौन करवाता है? राजनैतिक दल जीवन–जीविका–स्वास्थ्य–शिक्षा के मुद्दों पर चर्चा नहीं करते हैं, बल्कि ऐसे मुद्दों पर चर्चा करते हैं जिनका आदि और अंत ही नहीं है। राममंदिर का कोई आदि या अंत किसी चुनाव में नहीं हुआ। उसी पर चर्चा है। सरयू नदी एक ही चुनाव अंतराल में ठीक हो सकती है। उस पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। यहां से गोरखपुर के गांव में गया। वहां भी रापती नदी को मोड़ने वाली परियोजना आरंभ करने की बात चल रही थी। इसके विरोध में पूरा क्षेत्र खड़ा था।यहां के लोग इस नदी को नहीं मोड़ने के लिए आंदोलनरत हैं। मैंने इनसे बातचीत करते हुए कहा आज हमारी सरकार भारत के नीर–नारी–नदी के रिश्तो को भूल गई है। इसलिए इनके साथ खिलवाड़ कर रही है। कहीं बांध बनाकर हत्या करती है तो कहीं मोड़ना चाहती है। यह काम नहीं नीर–नारी–नदी का अपमान है। किसानों की जीविका जीवन और जमीर का सवाल है। संगठित होकर कई नदियों को अपनी आजादी से बहने दे। इसके साथ छेड़छाड़ करना उचित नहीं है। हजारों की संख्या में लोग मौजूद थे। सभी ने एकमत होकर कहा गंगा और राप्ती की आजादी और अविरलता चाहिए। अविरलता के लिए लड़ेंगे और जीतेंगे। इस संकल्प के साथ सम्मेलन संपन्न हुआ। गोरखपुर में आकर प्रेस को संबोधित करके वापस प्रस्थान किया।

सत्यमेव जयते वाला भारत आज "झूंठमेव जयते" वाला देश बन रहा है। झूंठ बोलने वाले बाबाओं के डेरे भरे रहते हैं। भगवान बने बापूओं के पंडाल लबालब रहते थे। ब्रह्मचारी–फलाहारी बाबाओं का व्याभीचारी होना सभी झूंठ

दिखता था। लेकिन झूठे बचनों से ढका रहता था। धन्य हमारी न्यायपालिका कुछ झूठ तो सामने आये। लेकिन संतों, राष्ट्रीय संताई से नवाजे गये संत केवल माई से कमाई में जुटे हैं। फिर भी राज्य चलाने वाले उन्हें संत की उपाधि देकर सम्मानित कर रहे हैं। कमाई के लिए दुकानदारी करने वाला संत नहीं होता। यह भारतीय शांतों का कहना और मानना है। नदियां भारत की "माई" हैं जब सद्गुरू इनसे भी केवल कमाई का ही विचार पालता है। तब इन्हें हम सद्गुरू कैसे कहें? इन्हें उद्यमी कहें। उद्यमी नदी चिंतक नहीं हो सकता वह तो केवल और केवल लाभ का लालची उद्यमी ही हो सकता है। नदी चिंता तो शुभ के लिए भी हो सकती है। उसमें नदी की सेहत नदी के लिए नदी की सेहत ठीक रखने में नदी की जमीन केवल नदी हेतु सुनिश्चित कराना। नदी का अविरल–निर्मल प्रवाह बनाना। उद्योगों का प्रदूषित जल नदी में नहीं जाना। आज सरकारी संस्थाएं नगरपालिका, पंचायतें सभी अपना गंदा जल नदी में डाल रही हैं उसे रुकवाना होता है। सद्गुरू वह होता है। जो सत्य को अहिंसक ढंग से राज–समाज को मानने हेतु तैयार करता है। जब संत, राज–समाज से डर के उनके लिए लालची और मिट्ठी–मिट्ठी बातें करके अपना रंग जमाता है। कमाई करता है। वह सदगुरू नही हो सकता है। आज लालची ही सद्गुरू है। सत्य–अहिंसक लोग 'झूठ मेय जयते' के चलते निष्प्रभावी बन रहे हैं। सत्य–अहिंसा कभी नष्ट नहीं होगी। वह सदैव जीतेगी।

आज इसपर झूठ की धूल मिट्टी जम गई है, लेकिन समय सत्य हो तो चमकाता है। वही चमकेगा। इसे चमकाने का रास्ता केवल अहिंसा है। आज की हिंसा ने अहिंसा का सभी जगह अपमान किया है। अहिंसा को अपनाना पड़ता है। वह भूखा–प्यासा रहकर भी अहिंसक बना रहता है। हिंसा स्वयं अपने लालची घमण्ड में पिटती है। इसे भी कालचक्र ही चमकाता और सम्मान देता है। दुनिया में हिंसक चमके और चले गये। अहिंसा आई। प्रभावी बनी। यह केवल भारतीय भूमि पर दिखाई देती है। ऐसा नहीं पूरी पृथ्वी पर कालचक्र इसे चमकाता रहे हैं। आज हिंसा और झूठ चमक रहा है। पूरी दुनिया में हिंसा और झूठ दिखता है। भारत में सत्य अहिंसा कालचक्र में जल्दी–जल्दी चक्र लगाती है। इसलिए सत्य और अहिंसा के लिए काम करने वाले भारत में चमकेंगे। वे प्रेम का अहिंसक विश्वास पैदा करेंगे। यह सनातन सत्य में विश्वास पैदा करेगी। यह विश्वास जय जगत, वासुदेव कुटम्बकम पूरी दुनिया एक है। यह बनी भी पंचमहाभूतों से है। इसलिए पंचमहाभूतों का सम्मान बढ़ेगा। यह सम्मान पंचमहाभूत निर्मित ब्रह्माण्ड की शक्ति के प्रति श्रृद्धा उत्पन्न करेगा। श्रृद्धा से भक्ति भाव जगेगा। वह भाव ही इस प्रकृति को पुनर्जीवित करके हमारे जीवन में पुनः सहजता–सरलता–सादगी को जन्म देगा। हमारे जीवन में आई सादगी ही हमें अहिंसक व सत्यनिष्ट बनाने की शक्ति पैदा करेगी। इससे जीवन का

डर मिट जायेगा और हम निर्भय होकर प्रकृति के साथ अनुशासित होकर व्यवहार करने लगेंगे। आज अनुशासन कम हुआ है। शिक्षा ने शासन सिखाया है। शासन तो लालची बनाकर शोषण कराता है। वह पोषण के नाम पर शोषण करता है। शासन हमेशा पोषण की दुहाई देकर शोषण ही करता है। शोषण से शासन में शक्ति केन्द्रित होती है। शासन की शक्ति–भक्ति से नहीं आती है। अहिंसामय सत्यनिष्ठा की शक्ति तो भक्ति से आती है। इसकी शुरूआत प्रकृति प्रेम से होकर सदाचार हमारे व्यवहार में लाती है। सदाचार से आया विश्वास हमारे मन में अपने प्रकृति प्रेम के प्रति श्रृद्धा पैदा करता है। श्रृद्धा से भक्ति भाव जन्म लेता है। भक्ति में अनुशासन होता है। अनुशासन की शक्ति व्यक्ति को भयमुक्त बनाती है।

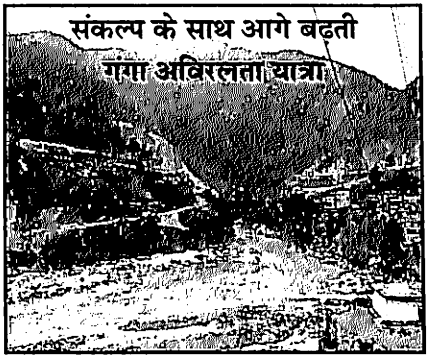

प्रकृति के क्रोध तथा बाढ़ व सुखाड़ का समाधान ढूँढ़ना होगा

लोकतंत्र में लोक की सुनवाई अब नहीं है। लोक सुनवाई से लोक खड़ा होकर अपने अधिकार से पहले अपने कर्तव्य को समझ कर राष्ट्रीय हित के काम करता है। जब उसकी सुनवाई नहीं होती, तब मानव क्रोध बढ़ता है। वही प्रकृति क्रोध बढ़ाने में जुट जाता है। उसका लालची विकास उसकी अहसास और आभास प्रक्रिया को रोकता है, तभी राष्ट्र प्रेम व प्रकृति प्रेम घटता है। लालची विकास के, विनाश से प्रेम बढ़ता है। यही लालची विकास प्रकृति क्रोध का जनक है।

सुखाड़ और बाढ़ को भारत के लोग प्रकृति का क्रोध मानते हैं, लेकिन प्रकृति का यह क्रोध स्वतः नहीं है, मानव निर्मित है। मानव जब प्रकृति के साथ अन्याय करता है, तभी प्रकृति का क्रोध बढ़ता है। आजादी के बाद राज और समाज दोनों ने ही प्रकृति का क्रोध बढ़ाया है।

प्रकृति क्रोध से बाढ़–सुखाड़ और मानवीय जीवन में विनाश बढ़ता है। जब धरती की हरियाली नष्ट होती है तो उससे मिट्टी का कटाव बढ़ जाता है। कटाव बढ़ने के कारण मिट्टी की जल धारण क्षमता नष्ट होती है। इससे मिट्टी और धरती का स्वास्थ्य खराब होने लगता है। फिर उसमें सुखाड़ से लड़ने की क्षमता नहीं बचती।

जब भी वर्षा होती है तो उसके साथ मिट्टी बह कर चली जाती है। नीचे जाते ही नदी के तल में जम जाती है और नदी के तल को ऊपर उठाती है। भू–जल के भण्डारों के रास्ते और रेती में रहने वाले पानी के कोष्ठक सिल्ट से अवरूद्ध हो जाते हैं। फिर जब भी ऊपर से पानी आता है तो उसमें बहने वाली मिट्टी नदी में जाकर धरती का तल ऊपर उठाती है। जल नदी में बहने की वजह से घरों में भरने लगता है। परिणामस्वरुप वह क्षेत्र बाढ़ में बदल जाता है।

यह प्रक्रिया हमारे लालची विकास से जन्मी, मानव निर्मित है। इसलिए यह बाढ़ और सुखाड़ मानव निर्मित कहलएंगे हम यदि अपनी धरती को बाढ़ सुखाड़ से मुक्त कराना चाहते हैं तो प्रकृति का सम्मान बढ़ायें। पहले प्रकृति को समझें, फिर सहेजें, उसके बाद दूसरों को समझायें, पहले प्रकृति संरक्षण सम्मान हेतु कुछ स्वयं सीधा काम करें। फिर ही दूसरों को समझाना सफल होता है। इसी प्रकार मिट्टी के कटाव और जमाव को रोकने के काम किये जायें।

यही कार्य प्रकृति को प्रिय होते हैं। ऐसे कामों से प्रकृति का क्रोध शांत होता है, और प्रकृति में बाढ़–सुखाड़ का आना घट जाता है। हमारा लालची विकास जिस गति से बढ़ रहा है। उससे भी तेज गति से हमारा बाढ़ और

सुखाड़ बढ़ रहा है। हमें अपने बाढ़ सुखाड़ को कम करने के उपाय अब सोचने ही हांगे। यदि हम बाढ़ सुखाड़ रोक पाते हैं तो भारत की मरती हुई छोटी नदियां पुनर्जीवित कर सकते हैं। नदी बचाने की बात करने वाले पहले स्वयं कुछ प्रत्यक्ष काम करें, तभी सरकारों से मांगने का नैतिक दायित्व बनता है। बिना काम किये मांगने से आपको सभी कुछ मिल जायेगा। लेकिन उससे वैसा कर नहीं पायेंगे।

भारत की छोटी नदियों के मरने, सूखने और बड़ी नदियों के प्रदूषित होने से हमारी आय का बहुत बड़ा हिस्सा दवाई पर खर्च होता है। राष्ट्रीय पर्यावरणीय औद्योगिक संस्थान नागपुर की रिपार्ट के अनुसार हमारी 66 प्रतिशत बीमारियां अब केवल नदियों के प्रदूषण के कारण होती हैं। नदियों के प्रदूषण से सतही एवं भू–जल दोनों स्तर पर जल का प्रदूषण हो रहा है। धरती और जल का सेहत से सीधा सम्बन्ध है।

इस प्रदूषण को रोकने के लिए कोई कारगर उपाय अभी भारत में नहीं हैं। प्रदूषित जल पिलाकर मारने वालों के खिलाफ अभी कोई आपराधिक मुकद्दमे नहीं बनते हैं। जब तक प्रदूषण करने वाले तथा प्रदूषण से मारने वाले को सजा–ए–मौत नहीं होगी, तब तक नदियां चाहे गंगा, यमुना, गोदावरी और कावेरी आदि सब इसी तरह मरती रहेंगी और प्रदूषण करने वाली व मारने वाली कम्पनियों को खुली छूट मिलती रहेगी। अपराधियों की खुली छूट से ही नदियों में प्रदूषण, अतिक्रमण और भूजल का शोषण बढ़ा है। इसको रोकने वाला और नदी को शुद्ध–सदानीरा बनाने वाला एक जन आंदोलन होना चाहिए।

लोकतंत्र में जब तक तंत्र पर लोक हावी नहीं होता, तब तक जनता की आवाज नहीं सुनी जाती। जनता मौन होकर देखती रहती है। सहन करती रहती है और समय आने पर अपने अवसर और अधिकार का उपयोग भी करती है। हमें भारत में प्रकृति के क्रोध को कम करने वाला कोई स्थायी उपाय ढूँढ़ना होगा।

24 अप्रैल राजस्थान जयपुर पहुंचकर पांच प्रयाग यात्रा 3 जून से 7 जून तक हिमालय में आयोजित होगी उसकी रूपरेखा बनाई। इस यात्रा का उद्देश्य भी गंगा अविरलता ही है। 12 जनवरी को गंगा सागर से शुरू होने वाली यात्रा 3 जून को पंच प्रयाग पहुंचकर इसका 7 को समापन होगा। उसकी संपूर्ण तैयारी की जिम्मेदारी भूपाल प्रोफ़ेसर कमान सिंह को दे दी। 25–26 अप्रैल को तरुण भारत संघ भीकमपुरा में संस्था के कार्य देखे और कार्यकर्ताओं को बातचीत करके गंगा अविरलता यात्रा की जानकारी दी। 26 को मेरठ बागपत दिल्ली में काम करके लोगों से संपर्क करके हरियाणा के बहालगढ़, पानीपत करनाल में बातचीत करते हुए 27 को शिमला पहुंचे। यहां शिमला के जल संकट पर सरकार के साथ बातचीत की। इनकी गोमा और अश्वनी नदी का

उद्‌गम से संगम तक सरकारी अधिकारियों के साथ भ्रमण करके समाधान सुझाव। पेयजल के लिए पहाड़ पर ऊपर ही पानी रोक कर नीचे लाना सरल सस्ता सनातन है। इसी विधि को काम लेना चाहिए। इन्हें मेरी बात समझ आई। फिर इन्हें साइट दिखाकर कुछ काम करने के सुझाव के साथ कार्योजना बनवाई। सचिवालय के सभी अधिकारियों से दो बैठक भी करी। इनमें निम्न बातें कहीं:

वासु दैव कुटम्बकम्, जय जगत का भारतीय सन्देश यह बताता है, 'एक ही 'जल' से बनी दुनिया एक है'। जल पर सभी का हक समान है। सरकारें इसका मालिक बनकर समाज और सृष्टि को देती तो उनका कल्याणकारी कृत्य पूरा होता है। वै ऐसा नही कर रही हैं। जल का मालिक दुनिया की कुछ कम्पनियां को बना रही है। ऐसे बुरे काम में कमोंवेश दुनिया की ज्यादातर सरकारें जुटी हैं। सरकारों का उघोगपतियां के प्रति संरक्षण भाव जानकर उद्योगपतियों ने जल पर अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण करना शुरू कर दिया है। इस का परिणाम है दुनियाभर में जल के लिए लड़ाई–झगड़े शुरू हो गये हैं। इन झगड़ों को रोकने हेतु जहां समाज काम करता है। वहां सरकारें विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। मूलकारण जल को वे समझी हैं।

पानी–पेड़–हरियाली–मिट्टी के सम्बन्धां की समझ स्पष्ट करना है। जलवायु परिवर्तन के दुष्य परिणामों से बाढ़–सुखाड़ बढ़ गई है। अन्न जल की उपलब्धता कम हो रही है। शुद्ध प्राणवायु का संकट बढ़ रहा है। मिट्टी का कटाव धरती को धोता है। क्षरण करके नंगी धरती पर लाल–घातक तापक्रम बढ़ता है। इससे बादल बिना बरसे चले जाते हैं।

कभी–कभी टकराते हैं, और कभी ज्यादा वर्षा हो जाती है। यही बाढ़ बन जाती है। यही धरती के ऊपर से कटाव करके धरती को बाढ़ और सुखाढ़ ग्रस्ति बनाती है। इस के लिए सरकार राहत करती है। स्थाई निदान नही ढूंढती है। इसीलिए बिमारी बढ़ती जाती है।

धरती और नदियों की बीमारी से मानव भी बीमार हो रहे हैं। मानव और प्रकृति की बीमारी एक ही है। वैज्ञानिक इसे सामान्य ज्ञान के विज्ञान से जोड़कर देखें तो जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक बीमारी का निदान और समाधान मिल जायेगा।

जल का मिट्टी से सम्बन्ध है। जब भी मिट्टी में जल जाता है, तो पेड़–पौधों को जन्म देता है। ये वातावरण से कार्बन लेकर पेड़ो, मिट्टी, धरती में जमा करता है। हरियाली ही घास, पेड़ पौधे मिट्टी का कटाव रोकते हैं। वही जैव विविधता बढ़ने लगती है।

वायु मण्डल को सन्तुलित बनाने के लिए हरियाली बहुत बड़े चिकित्सक का काम करती है। धरती और मानव चिकित्सा हरियाली ही करती है।

धरती में नमी बढ़ाने और बनाने में हरियाली मद्द करती है। छोटी–छोटी जल संरचनायें, अधो सतह व भूतल सतह जल से भरकर बाढ़–सुखाढ़ का स्थाई समाधान कर देती हैं। यह सरल समाधान समझने–समझाने हेतु पूरी दुनिया में पेड़–पानी की साक्षरता अभियान की तरह चलनी चाहिए। इसी समझ से लड़ाई–झगड़े क्षान्ति में बदल जायेंगे। फिर जल के लिए तीसरा विश्व जल युद्ध नही होगा।

दूसरे दिन रात्रि में निकल कर प्रातः दिल्ली पहुंचे। दिल्ली से 30 अप्रैल को झांसी गया। झांसी जाकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश का बुंदेलखंड देखा। यहां बहुत जल संकट है। समाधान की कुछ कोशिश जल सहेलियों ने यहां की है। यही तरीका समाधान का है। यहां के अभी किसानों के साथ लंबी बातचीत करी। किसानों से कहा हिमाचल, बुंदेलखंड व उत्तराखंड सभी जगह अलग–अलग हैं। फसल चक्र भी अलग–अलग होना चाहिए। बुंदेलखंड का किसान जब तक वर्शाचक्र को फसलचक्र से नहीं जुड़ेगा पानीदार नहीं बनेगा। वर्षा चक्र को फसल चक्र के साथ जोड़ना आरंभ करें।

1 मई दिल्ली में प्रेस के साथ मिला। उन्हें अपनी अप्रैल गंगा यात्रा की जानकारी देकर कई लोगों से दिनभर मिला। सभी से गंगा के समाधान पर चर्चा की। एक लेख भी लिखा। गंगा सद्भावना का भी पूर्ण मूल्यांकन साथियों के साथ किया। अविरलता का अंतर स्पष्ट किया। कई साथी पूछ रहे थे। सद्भावना गंगा जी के दोनों तरफ की थी। अविरलता यात्रा पूरे विश्व में करने का उद्देश्य क्या है? नदियों का अधिकार भी आजादी है। मानव अधिकार और नदी अधिकार बराबर ही हैं। इसे दुनिया को समझना होगा। 21वीं सदी में यह समाधान बहुत जरूरी है। नदियों को हमने बिना समझे बांधकर हत्या कर दी है। नदियों को भूजल पुनर्भरण के लिए बांधना तो ठीक है। उससे हमारे मरते सूखते झरने फिर से बहने लगेंगे। धरती के पेट को सदानीरा बनाने हेतु हमें बांध बनाना बड़ा संकट नहीं है, लेकिन केवल नदी के प्रभाव को रोककर दूसरी जगह ले जाना खतरा पैदा करता है। दिल्ली में बहुत स्तरों पर बातचीत के बाद अविरल यात्रा सिपटल अमेरिका हेतु प्रस्थान किया।

2 मई शिपटल अमेरिका में जैक आकर मिला। उसने यात्रा से जुड़े कार्यक्रमों की जानकारी दी। उसने बताया वह दुनियाभर में जल–मिट्टी संरक्षण करके पृथ्वी उपचार का काम करता है। उसकी चार पहिया वाली गाड़ी ही उसका दफ्तर, कार्यशाला, प्रयोगशाला है। उसी में रहता और काम करता है। मुझे भी उसी वाहन से अविरल गंगा यात्रा कराई। शिफ्टल एयरपोर्ट से 3 घंटे की यात्रा करके पोर्ट ब्लैक सेंड पहुंचा। यहां पर माइकल पिलैरस्की (स्कीटर) से मिला। इसके साथ शान, जॉन, टॉम से भी मिले। ये तीनों ही दुनिया के बड़े वैज्ञानिक हैं। जो नदियों पृथ्वी की मिट्टी के विभिन्न पहलुओं के साथ–साथ

जलवायु परिवर्तन पर भी काम करते रहे हैं। जैंक अच्छी फिल्म बनाता है। इसने मेरा लंबा इंटरव्यू लिया। इंटरव्यू करके बाद पोर्ट वार्ड में आयोजित वैश्विक पृथ्वी चिकित्सा सम्मेलन में गया। यहां मैंने प्रारंभ सत्र में भी आदिवासियों के साथ बातचीत करी। यहां दुनिया की 13 महा माताओं में से कुछ आई थी। उनके साथ भी बातचीत हुई। इनका पृथ्वी के साथ आत्मिक रिश्ता भी समझ में आया। यह माताएं अपने जीवन को पृथ्वी के साथ ही जोड़कर देखती हैं। उनका पंचमहाभूतों का दर्शन भारतीय ही है। इसीलिए यह अपने आप को रेड इंडिया कहलाना पसंद करते हैं। उद्घाटन के बाद मेरा लंबा भाषण था। इसमें मैंने भारतीय अनुभव बांटे। हम कैसे प्रकृति को पंचमहाभूतों से निर्मित मानते हैं। पूरी भारतीय आस्था और पर्यावरण रक्षा का परिदृश्य प्रस्तुत किया यहां। मेरे पास 2 से 3 घंटे थे मैंने सूत्रों में अपनी पूरी पर्यावरण आस्था बताई।

तरुण भारत संघ पहुँची गंगा अविरलता यात्रा

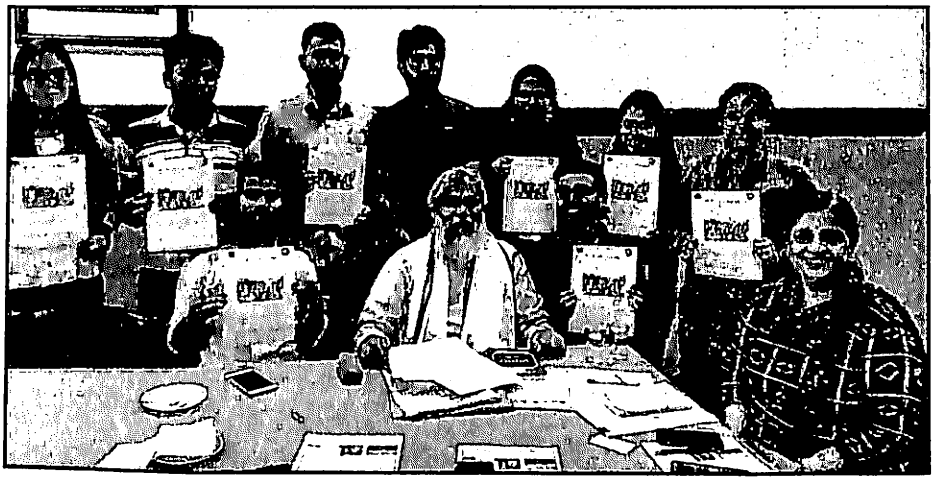

भारतीय आस्था और पर्यावरण रक्षा

रात्रि सत्र में एक समुह के साथ दुनिया के जल संकट पर चर्चा करते हुए दुनिया और जल एक ही है। सृष्टि जल से निर्मित हुई है जल सबके लिए समान है। यह व्यवस्था राज और समाज को मिलकर बनानी चाहिए। इस व्यवस्था को बनाने और चलाने का काम अब सरकारों ने अपने हाथों में ले लिया है। जल की मालिकी समुदायों से छीन कर कम्पनियों को देने का काम सरकार जल क्रान्ति के नाम पर कर रही है।

21वीं शताब्दी की जलक्रान्ति सब के पानी को कुछ कम्पनियों के हाथों में सांपने वाली है। 100 प्रतिशत जल का मालिक 1 प्रतिशत कम्पनियों के मालिक पूंजीपतियों को बनाना है। 4 प्रतिशत अवसरवादी लोग इस काम में 1 प्रतिशत पूंजीपतियों को मद्द करने वाले होंगे। 94 प्रतिशत जन सामान्य अपना जीवन चलाने हेतु पानी खरीदने के लिए मजबूर होंगे इनमें से कुछ खरीद कर पी सकेंगे। ज्यादातर गन्दा पानी को शुद्ध करने के नाम पर बनाने वाले बाजार में लुटते रहेंगे और दूषित जल पीकर बीमार होकर मरते रहेंगे। 0.07 प्रतिशत लोग इस लूट को रोकने के लिए बोलेंगे, संगठित होकर संघर्ष करेंगे। 0.03 प्रतिशत निर्णयकर्ताओं, लूटने, दूषित, शोषित करने वाली कम्पनियों तथा शोषितों के बीच में पुल बनाने का काम करेंगे।

विश्व जल युद्ध को शान्ति मार्ग से रोकने की बड़ी कोशिश शुरू हुई है। भारत, अमेरिका, जर्मनी, मैक्सीको, इजरायल, साउथ कोरिया, सीरिया, जॉर्डन आदि देशों के लोगों ने साउथ कोलफोर्निया में वीग पाईन से जल पद यात्रा शुरू कीं। वैसे तो यह यात्रा 31 अगस्त को मोनोलेक से आरम्भ हो गई थी। यह लेक ओनस नदी का उद्‌गम कहा जाता है। यह नदी शुद्ध सदानीरा बनकर बहती थी। अब यह पाईप मे बन्ध गई है। नदी सूख तथा मर गई है। मोनोलेक से 300 किमी नीचे ओनस लेक है। इसमें सैकड़ों किस्म के हजारों पक्षी रहते थे। यह मीठे जल की झील थी।

ओनस नदी के दोनों तरफ इण्डियन ट्राईव्स रहते थे। पहले इनकी सख्या 25,000 (पच्चीस हजार) से ज्यादा होगी। अब केवल 2,500 (पच्चीस सौ) ही आरक्षित पाई ट्राईव्स इस घाटी में आरक्षित बचे हैं। पाई आरक्षित ट्राईव्स कमीशन अध्यक्ष कैथी तथा ऐन, ट्राईव्स कमीशन सदस्य दोनों ही 10 दिन हमारी जल यात्रा में हमारे साथ ही रात दिन रहे।

इनका नाचना, गाना, खाना–पीना, बातचीत, सोचने–विचारने और जीवन जीने का तरीका भारतीयों से मिलता जुलता है। इसलिए औनस वैली के पाईन टाईवस अपने आपको भारतीय कहना और सुनना पसन्द करते हैं।

इन्होंने अपनी शिक्षण संस्थनों का नाम भी इण्डियन एजुकेशन सेन्टर रखा है। अमेरिकन के साथ हुए युद्ध को भी इण्डियन वांर नाम से बोलते हैं।

कैलिफोर्निया का डेजर्ट राजस्थान के डेजर्ट से मिलता जुलता है। भारत के रेगिस्तान में कोई डेथ वैली नही है। अमेरिकन डेजर्ट में डेथ वैली है। यहां आने वाले मर जाते हैं। कोई जिन्दा नही बचता। इस वैली का तापक्रम डिग्री सेन्टीग्रेड से ऊपर रहता है। यहां जाने वाले गर्मी में झुलसते हैं। जब झुलसने लगता है छाया में बैढ़ता है। बस मर जाता है। इस घाटी में जाकर आजतक कोई वापस नही आया है। 105 किमी दूर से इस वैली में नही जाने की सुचनाएं लिखी रहती हैं। इसे डेथ वैली ही बोला जाता है। मैंने इसे एक घाटी दूर से देखा है। हम ओनस वैली में यात्रा कर रहे थे यह डेथ वैली के समान्तर है।

बीग पाईन से ओनस लेक 120 किमी है। हमने 10 दिन में पदयात्रा पूरी कर ली थी। अपना भोजन पीने का पानी साथ लेकर चलते थे। टैन्ट आदि सभी कुछ अपने आप किचन के साथ अगले पड़ाव पर गाड़ी से पहुंच जाता था। प्रतिदिन व रात्रि में चार काउंसिल होती थी। एक में यात्रा की बात होती थी। दूसरी में दुनिया की जल समस्याओं व समाधान हेतु विश्वशान्ति जलयात्रा के विषय में दुनिया में कौन–कौन इस यात्रा को अपने–अपने देश में आयोजित करेंगे। इन सब से कौन कैसे सम्पर्क करे? इस यात्रा आयोजन में किसकी क्या भूमिका है? भूमिका निभाने का अहसास कराया गया।

महात्मा गांधी स्वयं आधुनिक उच्च शिक्षित व्यक्ति थे। उनके मन में भारतीय बुनियादी शिक्षा का सम्मान और उसी से स्वावलंबन एव स्थाई विकास की राह समाज को दिखाना चाहते थे। पूरी दुनिया तथा दलित विकास के खतरों से व स्वस थे। मशीनों से वे डरते नही थे। मगर मशीन को इंसान का सहायक बनाने के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि भारत में लोग मशीनों के गुलाम नहीं हो बल्कि मशीनों से लोग काम करें। इसीलिए उन्होंने हिन्द स्वाराज में गुलाम बनाने वाली मशीनों का विरोध किया और इंसान की सहायक मशीनों का सम्मान किया।

उनका मानना था कि भारत का हर गांव स्वावलंबी और स्वराज की एक इकाई का रूप में भारत को एक मजबूत लोकतंत्र बनाने में गांव की अहम भूमिका होगी इसीलिये सर्वोदय समाज "सदैव गांव बनेगा देश बनेगा" इस मंत्र का उच्चार जपता रहा है। मैंने स्वयं बापू के भारतीय ज्ञान के प्रति उनके नजरिये को समझा और उसी विश्वास के साथ गांव में सेहत में स्वावलंबन एवं सीखने की पाठशाला शुरू की थी। इन दोनों कामों में स्व. श्री सिद्धराज ढड्ढा का जीवनत मार्गदर्शन मिला था। लेकिन सात महिने की चिकित्सा सेवा से स्वस्थ होकर गोपालपुरा गांव के बुजुर्ग मांगु मीना और नाथी बलाई ने कहा कि पढ़ाई और दवाई से पहले जीने के लिये शुद्व जल चाहिए। मैंने उनसे काम

सीख कर उनके बतलाये अनुसार काम शुरू किया।

उन्होंने केवल दो दिन में मुझे उस क्षेत्र के सुखे हुऐ 25 कुओं मे उतार कर धरती का पेट दिखलाया और वर्षा जल को रोक कर धरती के पेट में संग्रह करने की विधि सीखा दी। इस विधि से जल का वाष्पीकरण रुक गया। मुझे मेरी 2 दिन पढ़ाई करने के बाद कहा कि अब बस जल संरक्षण का काम ही करना जल संरक्षण का संकल्प भूल कर विकल्प मत ढूंढना।

मैंने उनसे जो सीखा उसी के अनुसार काम शुरू किया। उन्होंने जिस प्रकार मुझे पानी का काम करते–करते मेरे मन पर पानी का जो आभास बनाया था, उसी को मैंने अपने गांव के युवा पीढ़ी को गांव में शहरों से वापस बुलाकर उनके मन में विश्वास पैदा किया और उन सब ने जल संरक्षण का काम शुरू कर दिया। 1200 गोपालपुरा के गांव से शुरू होने वाला काम गांव में फैल गया। 11000 से ज्यादा जल संरचना का काम लोगों ने किया परिणाम स्वरूप अरवरी, सरसा, भगानी, जहाजवाली, रूपारेल, साबी और महेश्वरा के धरती का पेट पानी से भर गया और कुओं का जल स्तर ऊपर आ गया। नदियों में पानी बहने लगा इस काम से 7 नदियां शुद्व, सदा नीरा बन गयी। सबसे पहले अरवरी नदी बहना शुरू हुई। सरकार ने उसमें मछली पकड़ने के ठेके दे दिये। लोगों ने जल सत्याग्रह करके मछली के ठेके रद्द कराये और पानी धरती के पेट से निकालने वाली कम्पनियों को भगाया और नई कम्पनियों को नही आने दिया। परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में हरियाली बढ़ी। बाढ़ और सुखाढ़ का इलाज हुआ और क्षेत्र में खुशहाली आयी। खेती को भूलते लोग दुबारा खेती करने लगे।

ये गांव के स्वावलम्बन और स्वराज की राह का प्रयोग है। इसकी बुनियादी तालिम पर खड़ी हुई है। लोगों से सीखकर लोगों को सीखाने का काम अभी तक राजस्थान के ही कुछ गांवों में ही चल रह था। अब ऐसे ही काम करने का तेलंगाना सरकार का काकतिया मिशन उत्तर प्रदेश का हरा और स्वच्छ उत्तर प्रदेश का घोष एव महाराष्ट्र का जल मुक्त शिवा शब्दों में उसी राह की तरफ बोलते हैं, लेकिन यु.के और अमेरिका थे यह ही प्रयोग सीखाने में सक्षम हुआ। यु.के की टेम्स रिवर में आयी बाढ़ का इलाज करने के लिये वहां के युवराज प्रिंस चार्ल्स एव वद्य की सम्बन्धित सरकारी विभागां ने लोकज्ञान के इस प्रयोग से सीख लेकर काम शुरू किया। इसी सुधार की अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य की ओनस नदी घाटी इसी प्रकार के प्रयोग शुरू हुये। 8 अक्टूबर की शाम को अमेरिकन सेन्टर में अमेरिका के राजदूत एवं अमेरिकन सेन्टर की डायरेक्टर ने इस प्रयोग को देखने और समझने की रूचि बतलायी। मैं वहां जाकर उनसे मिलकर बताया, समझाया, उन्हें अच्छा लगा।

19वीं शताब्दी में जब बापू ने हिन्द स्वराज लिखा तब तक हमारी धरती को बुखार नहीं चढ़ा था। 21वीं शताब्दी में जलवायु परिवर्तन का खतरा जल अन्न

की पूर्ति के लिए संकट बनता जा रहा है। ऐसा लगता है कि इसी शताब्दी में जल के लिए विश्व युद्व शुरू होगा। जल के विश्व युद्व को शान्ति में बदले की समझ भारत में विधमान है। इस संकट से बचने के लिए अब भारत को जल शांति का सवेरा देने का काम करना चाहिए। मैंने जो पिछले 1974 से सीखा और समझा है, उसके आधार पर दुनिया के जल संकट के पलायन और आश्रय देने वाले देशों में जाना तेय किया है।

अपना पश्चिमी मध्य एशिया व अफ्रीका तथा भारत और सीरिया के अनुभव यहां रखें। 4 अप्रैल को मैंने दो कार्यशाला आयोजित की। एक पहाड़ पर और दूसरी समुद्र किनारे। इन दोनों तंत्रों का जलवायु परिवर्तन में क्या योगदान है? इस पर दुनियाभर से आए साथियों को सुना। अंतमें सर्वसम्मति निर्णय रहा। पृथ्वी पर 70% जल 30% मिट्टी गैस, अग्नि, ऊर्जा, प्रकाश, आकाश शेष सभी कुछ हैं। ब्रह्मांड के 118 तत्वों में से 109 तत्व जल अपने अंदर घोलने की शक्ति रखता है। जल ही सबसे शक्तिशाली है। इसे समझना–सहेजना–समझाना आज की सबसे पहली भी जरूरत है। यह कार्य हम नदियों से शुरू कर सकते हैं। पहले नीर–नारी–नदी प्रकृति को समझने वाला तंत्र बनना चाहिए। उस तंत्र के निर्माण पर अमेरिका, यूरोप के देशों से आए लोगों ने रखी। मुख्यतः आधुनिक विज्ञान तथा भारतीय ज्ञान तंत्र को जोड़कर जो तंत्र बनेगा वही चलेगा। इस पर अलग–अलग संदर्भों में अलग–अलग लोगों ने अपने विचार रखे। दोनों कार्यशालाओं का समाधान मैंने ही किया। अंतमें पहाड़ों की हरियाली ही नदियों की पवित्रता और प्रभाव को शुद्ध सदानीरा बनाकर रखेगा।सूरज समुद्र ही पूरी दुनिया के लिए जलस्रोत है। सूरज समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाकर हमें जीने–पीने योग बनाता है। यह नदियों में बहकर समुद्र तक जाना ही चाहिए। इस पर समुद्र का संपूर्ण हक है। हमारे जीवन–जीविका और जमीन के लिए जल मिलता है। इस जल का सम्मान अब दुनिया में नहीं है। यह व्यापार लाभ की वस्तु के रूप में उपयोग होने लगा है। तभी से बाढ़–सुखाड़ की मार भी बढ़ने लगी है। भारत में जल जीवन है। इसीलिए इसका सम्मान होता है। अतिथि देवोभव भी हम इसी से करते हैं। जबकि दूसरे देशों मैं ऐसा नहीं है। हम सम्मान अनुशासित उपयोग, परिशोधन, परिमार्जन, पुर्नापयोग, पृथ्वी पुनर्जीवन भी जल से ही मानते हैं। भारत जल को 6 आर से संबोधित करता है। दुनिया में केवल 3 आर संबोधन हैं। हम वैश्विक पृथ्वी का उपचार भी जल ही मानते हैं। इसलिए ही भारतीय नीर–नारी–नदी को सम्मानित करके दुनिया का शिक्षक बना था। आज भी पृथ्वी उपचार में इसी जलदर्शन की अत्यंत आवश्यकता है।

5 मई को पृथ्वी उपचार के लिए जिम्मेदार–हिस्सेदार का संगठन कैसे बने? इस पर मेरा भाषण और मैंने ही इसका संचालन किया। इसमें सम्मेलन

की कोर टीम भी मौजूद रही।मैंने कहा पृथ्वी को समझना पहला काम है। समझकर सहेजना दूसरा काम सहेजने में लगने वालों को दूसरी को समझकर, प्यार करना, तीसरा काम इसी से संगठन निर्माण होगा। पूरी दुनिया के 500 खास लोग इस सम्मेलन में पृथ्वी उपचारक यहां आए। उन्हीं को अच्छे सेसमझाने वाली कार्यशालाएं उनकी कुशलता क्षमता का विकास करके काम में लाने की आवश्यकता है। जब यह तैयार होकर जैंक की तरह काम करने लगेंगे। फिर उन्हें संगठित होने का अवसर मिल जाएगा। फिर पृथ्वी उपचार करने वालों की ताकत बहुत मजबूत होगी। शाम को समापन सर्किल पर मुझे "पृथ्वी चिकित्सक सम्मान" से सम्मानित किया। सम्मेलन के बाद रात्रि में हम जैफ के घर खाना खाने गए। मैं तो सात्विक वनस्पति घास–फूस खाने वाला हूं। मेरे लिए अकेले को घास फूस वाला खाना मिला। खाकर जल्दी लौट आया। ये पी–खाकर नाच गा रहे थे। मैंने कहा जब हमारी नदियां पवित्रता से बहती थी। उनके सुबह–शाम–दोपहर हर घड़ी सूरज के साथ रंग बदलते थे। लोग उन रंगों के साथ नाचते–गाते थे। अब तो आपकी तरह ही भारतीय भी नाचने–गाने लगे हैं। फिर भी कुछ आप से गहरा और सुंदर प्राकृतिक घटनाओं का नाच–गान होता है। नदियों, सूर्य व पृथ्वी का भी है। मेरे पीछे पढ़े मैं बताऊं, लेकिन मुझे नहीं आता था। इसलिए मैंने केवल बताया दिखाया नहीं।

6 मई को पोर्ट टाउन सेंड में इलैश के घर पर कोर समुह की बैठक हुई। इसमें जैंक माइकल स्कीटर, हैना, ऐरिसिलिया चेन्नी जॉनआदि 15 लोग ही शामिल हुए थे।इन्होंने पहले सम्मेलन का मूल्यांकन किया। फिर आगे क्या कऱना चाहिए? उस पर भी बातचीत हुई। आगे किन–किन देशों में ऐसे सम्मेलन किए जाएं? मैंने कहा हम भारत में 17 से 19 सिरा में ऐसा ही एक सम्मेलन कर रहे हैं। इसमें कुछ साथी आए तो अच्छा लगेगा। भारत का निमंत्रण देखकर मैंने भारत हेतु प्रस्थान किया।

8 अप्रैल को प्रातः भारत पहुंचा। यहां जल बिरादरी के राष्ट्रीय समन्वयक सत्याबुल शेट्टी के साथ रहा। 02 बजे से हमारी बैठक शुरू हुई। यह बैठक जल का निजीकारण रोककर समुदायिकरण कैसे करें? इस पर चर्चा करें? इस बैठक में कोदई सेल्वेन, रमेश मुक्कला, संजय सिंह, जगदीश चौधरी, पृथ्वी, कनू , मेगा, सुबोध नंदन शर्मा, उदय अनिल पाटिल, अनिकेत लोहिया आदि साथी मौजूद रहे। लंबी चर्चा के बाद जल का निजीकरण करने वाली कंपनियों से कैसे लड़े हैं। इस पर बातचीत हुई। संगठन और काम की जिम्मेदारी बांटी गई। शाम को यूपी में एक और बैठक हुई। इसमें भी जल का भविष्य और हमारे काम की दिशा, क्षमता, कुशलता, दक्षता बढ़ाने के उपायों पर चर्चा हुई। रात्रि में वापस दिल्ली आकर प्रातः उच्चतम न्यायालय गए। वहां कृष्णा नदी खनन को रोकने के लिए सरकार को दंडित करने की सुनवाई हुई। उच्चतम न्यायालय ने

हमारे पक्ष में फैसला दिया। फैसला सुनकर मैंने उत्तर पूर्व के राज्यों से अविरल गंगा यात्रा ले जाने हेतु प्रस्थान किया। गुवाहाटी से कोकराझार वोईग गांव के एनटीपीसी कारखाने के बड़े अधिकारियों इंजीनियरों कार्यकर्ताओं महिलामंडलों के साथ एक बड़ा सा सम्मेलन हुआ। इसमें जल ही जीवन है विषय पर 3 घंटे का लंबा भाषण दिया। शाम 6:00 से 9:00 बजे तक चला पूरा। हॉल भरा रहा। तब तक मैं भी सवाल जवाब देता रहा। लोगों ने पूरे ध्यान से भाषण सुनाऔर बहुत से सवाल पूछे। मैंने सभी के जवाब दिए। मैंने कहा भारतीय भगवान भ–भूमि, ग–गगन, व–वायु, अ–अग्नि, न–नीर पंचमहाभूत ही है। नीर जीवन की शुरुआत है। एक कोशिय अमिला इसी से बनता है। यह मिट्टी, भूमि से मिलकर जलचर–उभयचर जीव और अंतमें मानव बनता है। मानवीय शरीर नीर–नारी से सृजित होकर उसका आकार बनने लगता है। आकार को आकाश चाहिए अर्थात स्थान मिलने पर यह फैलने लगता है। फिर इसे चलने के लिए प्राणवायु चाहिए। जब इसको चलने की ऊर्जा चाहिए तो सूरत से मिलती है। हमारा जीवन जल से शुरू होकर अन्य चार महाभूतों के योग से बनकर चलता है। इसीलिए जल ही जीवन इसे कहा है। अब जीवन पर संकट है उत्तर पूर्व में बहुत वर्षाजल है। फिर भी गुवाहाटी आदि शहरों का जलस्तर नीचे गिरता ही जा रहा है। उत्तर पूर्व में धरती से जल निकलने पर पूर्ण रोक होनी चाहिए। केवल वर्षा जल से जीवन–जीविका–जमीर की सभी जरूरत पूरी करनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा ने हमें केवल प्राकृतिक शोषण ही सिखाया है। इसलिए हम जल्दी से साझे संसाधनों पर अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण करने में जुटे हैं। नारी प्रकृति का लक्षण संरक्षण पोषण भूल गए हैं। हमें इस काम में लगने की अब आवश्यकता है। हमने इस शताब्दी में जहां नीर–नारी–नदी संरक्षण किया है। वहां प्रकृति सुख–समृद्धि लौट आई है। पूर्व में उजड़े लोग अपनी भूमि पर पुनः लौट आए हैं। राजस्थान में हमने अपना पूरा अनुभव उनके साथ बांटा। सभी ने इसे देखकर समझा। नीर–नारी–नदी का संरक्षण–पोषण ही पुनर्जीवन है। हमें इस कार्य में लगना चाहिए। मैंने महाराष्ट्र, कर्नाटक व बुंदेलखंड के दूसरे अनुभव भी बांटे। एक पत्रकार ने नमामि गंगे के विषय में पूछा। मैंने उन्हें पूरे विस्तार से पुराना मोदी की बातें और उनके दिए गए वायदे याद दिलाते हुए कहा वोट के लिए गंगा जी स्मारण की जाती हैं। चुनाव जाने के बाद गंगा को भूल जाते हैं। नमामि गंगे में गंगा जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ।अविरलता की दिशा में कोई काम किया ही नहीं है। गंगा जी का जल हाथ में लेकर हम शपथ लेते हैं। उसी गंगा जी को झूठ बोला धोखा दिया वे ऐसा करने वालों को दंडित करती रही हैं। मैं भारत सरकार के मन से भाषण दे रहा हूं। इसलिए किसी का नाम लेकर नहीं बोलना चाहता हूं। इसलिए आप समझे गंगा की अविरलता निर्मलता की दुहाई देने वाले चुनकर जाने के बाद

उन्हें भूल गए हैं। इसीलिए प्रोफेसर जीडी अग्रवाल जी को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। उन्हें प्रधानमंत्री बनने से पहले जो वायदा किया था वह पूरा नहीं किया। इसलिए प्रोफेसर जीडी अग्रवाल के अंतिम पत्र अनुसार राम जी के दरबार में जाकर गंगा जी को झूठ बोलकर धोखा देने वालों को दंडित कराने का कार्य करेंगे। उनकी आत्मा इस कार्य को कर रही है। इस संवाद के बाद वापस लौटते समय कई स्थानों को कोकरा झार रिफाईनरी बोईगांव स्कूलों में बातचीत करके गुवाहाटी पहुंचा। यहां का संग्रहालय देखा। आज यहां गंगा सप्तमि पर महिलाओं ने नए सुंदर वस्त्र धारण करके पूजा–पाठ, सांस्कृतिक उत्सव जैसे कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए थे। इनमें भी भागीदार हुआ संग्रहालय अच्छे से दिखा। मैंने कहा नीर आपके पास बहुत है। नारी भी बहुत सशक्त सक्षम है। नदियां यहां सबसे बड़ी नदी नहीं नद है। ब्रह्मपुत्र छोटी–छोटी नदियां यहां हर चार–पांच किलोमीटर की दूरी पर हैं। भारत में नीर–नारी–नदी का सम्मान का यही दर्शन देता है, लेकिन अब आगे इन्हें संरक्षण–पोषण नहीं किया तो तीनों पर संकट है। इनको संकट मुक्त रखना ही उत्तर पूर्व राज्यों की सुख सकती का साधन बन सकती है। संग्रहालय की बातचीत के बाद मैं हवाई अड्डे आकर जयपुर पहुंचा।

12 मई को कुमारप्पा संस्थान के निदेशक व अमित आदि से राजस्थान के हालात पर बातचीत करी उन्होंने कहा जल का संकट है। समाधान के अच्छे काम हो रहे हैं। यहां के हालात बदल रहे हैं। प्राकृतिक खेती का काम आगे बढ़ाना है।

गंगा अविरलता यात्रा 12 जनवरी को गंगा सागर से आरम्भ होकर 3 जून को देहरादून पहुँच रही है। यह 10 जून तक हिमालय में रहेगी। पंच प्रयाग बचाने हेतु चेतना जागरण करना इसका लक्ष्य है। वैसे तो अविरल गंगा यात्रा पूरी दुनिया में मानवीय और नदी अधिकार को बराबरी से दिलाने के लिए है। भारत की सभी नदियों को सम्मान देने हेतु गंगा कहने लगते हैं। यह यात्रा नीर–नारी–नदी की सम्मान यात्रा है।

भारत का भगवान पंचमहाभूत है। भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि, न से नीर। नीर ही सब महाभूतों का योगकर्ता है। गंगा नीर विशिष्ट गुण वाला है। यह विशिष्टता जिन स्थानों पर बढ़ती है। उन्हें ही हम प्रयाग कहते हैं। वैसे तो गंगा जी में बहुत सी नदियां मिलती हैं, लेकिन सभी स्थानों को प्रयाग नहीं बोला जाता है। गंगा के विष्णु प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नंद प्रयाग, रूद्र्द प्रयाग, देव प्रयाग गंगा जी के लिए सबसे जरूरी है। इनपर बांध बनने से ये नष्ट हो जायेगे। इन प्रयागों को बचाने के लिए आन्दोलन जारी है। इस आन्दोलन की कोई परियोजना किसी सरकार या कम्पनी द्वारा पोशित नहीं है। स्वपोशित है। जहां यह यात्रा जाती है। वही का समाज इस यात्रा की सभी

व्यवस्थाएं करता है। उत्तराखण्ड–गढ़वाल में भूपाल सिंह चौधरी, विनीता चौधरी, कूँमायू में राजेन्द्र सिंह विष्ठ आयोजन कर रहे हैं।

हिमालय वासियों से अपील है। पंचप्रयाग बचाओ अभियान में जुड़ें। बांध निर्माण रुकवायें।

तिथि	पहला कार्यक्रम	द्वितीय कार्यक्रम	तृतीय कार्यक्रम	रात्रि विश्राम
03 जून 19	देहरादून में यात्रा का प्रारम्भ	ऋषिकेश		ऋषिकेश
04 जून 19	देव प्रयाग			पौड़ी
05 जून 19	पौड़ी प्रातः 10 बजे	श्रीनगर 1 बजे		रुद्रप्रयाग
06 जून 19	रुद्रप्रयाग	कर्णप्रयाग	गोपेश्वर	
07 जून 19	नंद प्रयाग	विष्णु प्रयाग	बद्रीनाथ माणा	कर्णप्रयाग
कुमाऊ मण्डल का कार्यक्रम				
08 जून 19	विकासखण्ड सभागर गरूड़	अणागांव	बागेश्वर	बागेश्वर
09 जून 19	काण्डा	बेरीनाग	पिथौरागढ़	पिथौरागढ़
10 जून 19	दन्या	अल्मोड़ा	हल्द्वानी / नैनीताल	

गंगत्व

गंगत्व गंगा जल का वह विशिष्ट गुण है, जो मानव आरोग्य के संरक्षक जीवाणुओं को बचाता है। यह रोगाणुओं को नष्ट करने की विशिष्ट विलक्षण शक्ति रखता है; जिसे अंग्रेजी में 'बायोफाज' तथा संस्कृत में 'ब्रह्मसत्व' कहते हैं। इसका निर्माण हिमालय की वनस्पतियों एवं खनिजों से होता है। बाँधों से गंगत्व नष्ट होता है। गंगत्व हिमालय की खनिज सफेद भवभूति से होता है। यह सिल्ट के रूप में जल में घुलकर गंगाजल के साथ हिमालय से समुद्र तक जाता था। उस समय पूरी गंगा जी का जल अविरल–निर्मल था। बाँध बनने पर यह सिल्ट नीचे बैठ जाती है। बँधे जल के ऊपर हरी नीली रंग की काई (अल्गी) बन जाती है, जिससे गंगाजल दूषित होकर अपने विशिष्ट गुणों को खो देता है। गंगाजल के विशिष्ट गुण के करण ही भारतीय अपने अन्तिम साँस के समय इसकी दो बून्द कष्ट में चाहता था। गंगा आस्था अन्धविश्वास नहीं, विज्ञान था। यही आज अन्धविश्वास बन गया है। जब तक गंगाजल में विशिष्ट गुण प्रवाहित होता था, तब तक गंगाजल का सभी कर्मकांड लोक विज्ञानी समझ से होता था। बाँधों से ऊपर बने गंगाजल से जो होता है, वह तो आज भी सत्य है; लेकिन बाँधों के नीचे जो करोड़ों–लाखों की भीड़ सिर्फ़ स्नान कर रही है, वह आज गंगा स्नान नहीं, कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास है। इसे सच में बदलना है। पुराने बाँध हटाओ, बन रहे बाँधों को रोको, नये बाँध मत बनाओ। ऐसा जो करने के लिए तैयार है, उसी नेता को संसद् में भेजो। कह कर भी जो नेता वैसा नहीं करता है, तो उसे पकड़ा जा सकता है, उसके विरुद्ध आवाज उठाई जा सकती है। इससे गंगा सत्य बचाने का रास्ता खुलेगा, अन्धविश्वास मिटेगा, विज्ञान और सत्य स्थापित होगा। अब हमें गंगा जी के सत्य स्थापित करने का अवसर है।

गंगा को अविरल–निर्मल बनाने हेतु स्वामी निगमानन्द, स्वामी नागनाथ, स्वामी ज्ञानस्वरूप सानन्द (प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल) ने गंगा सत्याग्रह करके अपने प्राणों का बलिदान दिया है। स्वामी गोपाल दास परिपूर्णानन्द, गोकुल दास का अपहरण करके हत्या कर दी गई, क्योंकि ये गंगा जी के लिए सत्याग्रह (अनशन) कार्य में संघर्षरत थे और इनके संघर्ष से जिन को हानि होनी थी, उन्होंने इनका अपहरण कर दिया। गंगा जी की अविरलता की लड़ाई में स्वामी शिवानन्द सरस्वती, स्वामी दयानन्द मातृ–सदन के सभी स्वामियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस संघर्ष में रवि चौपड़ा, राशिद हयात सिद्दीक़ी, भरत–मधु झुनझुनवाला, हेमन्त ध्यानी, विमल भाई, पूर्णिमा, समर्पिता, माँ आनन्दमयी आदि ने भी साथ दिया। सभी नामों का विवरण देना सम्भव नहीं। गंगा लड़ाई में

हजारों लाखों लोगों का साथ मिला है। अब तो मेधा बहन व सन्दीप पाण्डे ने भी गंगा जी के लिए कुछ अच्छा काम आरम्भ कर दिया है।

गंगा के लिए लाखों–करोड़ों लोग हैं, ये सभी संगठित हो जाएँ तो गंगा जी को पुनर्जीवित करने का काम सम्भव है। अभी तक गंगा नवीनीकरण काम हुआ है, नवीन तो पूर्ण होने से पहले ही पुराना हो जाता है। गंगा जी के साथ अभी तक ऐसा ही हुआ। माँ गंगा जी को पुनर्जीवन चाहिए, यह अविरलता से ही सम्भव है। सरकार अविरलता की बात नहीं करना चाहती, जबकि अविरलता से निर्मलता आएगी। यह बात बहुत बार बोली गई है, फिर भी सरकार कम्पनियों के दबाव में आकर गंगा जी की अविरलता का काम करने को तैयार नहीं है। वैसे लोगों को हम भी सरकार बनाने लायक ना बनाएं अब लोक शक्ति को जगने और खड़ा होने का समय है। गंगा जी के लिए खड़े हों। 'गंगा जी की जंग में, हिंदू मुस्लिम सिख इसाई सब संग में' इस नारे से हमें गंगा जी के स्वास्थ्य और हमारे स्वास्थ्य सम्बन्धों को जोड़ कर देखने का अवसर मिलता है। इस अवसर को मत चूको।

गंगा, आयुर्वेद और आरोग्य विज्ञान से हमारे आरोग्य और अर्थ रक्षण करने वाली सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों से जोड़ने वाला प्रवाह है। यह प्रवाह जब तक आजादी से प्रवाहित हुआ, तब तक इसने सभी धर्मों का सम्मान करके शान्ति सद्भावना कायम रखी। इस प्रवाह से सभी को प्यार, ज्ञान, अध्यात्म सभी कुछ मिलता रहा है। जब से इसे बाँधा है, तभी से इसे धर्मों में भी जकड़ना आरम्भ किया; लेकिन माँ तो माँ होती है। वह सबको बराबर प्यार करके जिन्दा रखती है। गंगा जी को बाँध कर बेटे ने ही माँ को मारा है। अब माँ ने माँ को बाँधने वाला बेटा बुला लिया है। इसलिए माँ बँध कर मर रही है। जो जिन्दा रखने के लिए तैयार होते हैं, उन्हें बड़ा बेटा मरवा रहा है। हम अहिंसक, सत्य निष्ठ, भयमुक्त होकर गंगा जी को अविरलता के लिए बलिदान देते रहे हैं। जीवित रहकर गंगा के लिए काम करना ही सबसे बड़ा बलिदान है।

मई के अन्त और जून के शुभारम्भ पर हमें हिमालय के पंच प्रयागों को बचाने वाली यात्रा भी करनी है। गंगा जी को अब लोक राजनीति से ही बचा सकते हैं। यह लोक राजनीति के लिए सर्वश्रेष्ठ समय है। इस हेतु सभी अपनी निजी पहचान भूलकर एकाकर संगठित होकर लोक राजनीति में जुटें। गंगत्व बचाने का काम लोकतन्त्र में लोक राजनीति से ही सम्भव है। राजतन्त्र में राजा भगीरथ भी गंगा को लोक कल्याण हेतु लाए थे। अब लोक को ही गंगा जी को नीचे लाने का काम करना होगा। गंगा जी को पूर्व काल में हिमालय के जंगलों–पहाड़ों से निकाल कर लाए थे, अब तो केवल बाँधों का काम रोककर और पुराने से रास्ता बनाकर नीचे हरिद्वार, बिजनौर, हस्तिनापुर, गढ़मुक्तेश्वर, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना, साहबगंज व कोलकाता की जनता को

गंगा जल देने के लिए नीचे लाना है। अभी गंगाजल नहीं, गन्दा जल ही आता है। लोक राजनीति गंगाजल को नीचे लेकर आए, ऐसी रचना करनी होगी। शुरुआत अच्छी है, सफलता मिलेगी। भेदभाव भूलकर एक हो कर काम करें। हम जितना भी कर सकते हैं, उतना तो करें; आगे जो होगा, अच्छा होगा।

गंगा स्वस्थ भारत का स्वास्थ्य है, दोनों का बचना जरूरी है। दोनों को बचाने में धर्म, जाति कोई भी आड़े नहीं आता। आड़े लाने वाले रोड़े हैं, वे पहिए के दबाव से अपने आप छिटक जाएँगे। हम उन्हें भी पीसना नहीं चाहते, वे भी बचे रहें तो उन्हें भी गंगत्व समझ में आएगा। वे भी लोक राजनीति के साथ जुड़ जाएँगे। यही गंगा लोग राजनीति है, इसी से काम करें। प्राकृतिक पुनर्जीवन हेतु परिवर्तन जरूरी है। परिवर्तन ही पुनर्जीवन का आधार होता है। विकास तो विस्थापन करता है, यही विनाश है। इस विनाश को रोकने हेतु परिवर्तन करके पुनर्जीवन कर सकते हैं। भौतिक विज्ञान व तकनीक समाधान नहीं है, ये शोषण करते हैं।

आज की तकनीकी को देखे हमने धरती से तेल निकाल कर प्रदूषण किया है। यह शोषण की तकनीक नहीं आती तो सूरज या हवा से ऊर्जा पहले ही बन जाती, जो बाद में अब बन रही है। हमें कुछ भी अच्छी सुविधा मिलती है, उस पर आधारित होकर हम काम करने लगते हैं, जब हमारा मूलज्ञान काम नहीं करता है जब धरती पर विनाश हो जाता है, फिर भी हम समाधान के रास्ते खोजते हैं। जैसे आज हमने ऊर्जा खोजना शुरू की है। हमें सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा से पहले से ही अधिक उपयोग करना आता तो हम उसी से अपना जीवन चला लेते। हम पहले पवन (हवा) से अपनी नाव पार लगाते थे। हमें डीजल और पैट्रोल से अधिक सुविधाजनक साधन मिले तो हम उसी रास्ते पर चल दिए। अभी हमें अपनी गलती का एहसास हो रहा है। हमें जब तक अपनी भूल का एहसास होता है, तब तक हमारी हानि हो चुकी होती है। उसकी क्षतिपूर्ति फिर सम्भव नहीं होती।

कृष्णा नदी का आदेश अब इस क्षतिपूर्ति को पूरा कराना सम्भव नहीं लगता है। सभी दोषी अधिकारी, ठेकेदार अपने को बचाने पुनः अदालत में जाएँगे। अपने महँगे वकीलों पर खर्च करके बचाएँगे। अब बचाने पर समय, शक्ति और साधन खर्च होंगे। न्यायालय में जिसे दण्डित किया, वह दण्ड भरना उचित नहीं समझता। बचने पर ज्यादा खर्च करने की तैयारी कर रहे हैं। पर्यावरण हेतु प्रतिबद्ध–समर्पित सरकार ही ऐसी राशि को वसूलने का काम करा सकती है। जब गलती ही सरकार के इशारे पर होती है, नदी में खनन, अतिक्रमण, प्रदूषण सभी कुछ सर्वोच्च नेता ही कर रहे हों, तब बड़ा संकट होता है। आज आन्ध्र प्रदेश की नदियों पर राज्य ने ही खनन करा के संकट पैदा किया है। ऐसे में हमें इस राज्य व्यवस्था के सर्वोपरि न्यायपालिका से निर्णय मिला है।

इस निर्णय का क्रियान्वयन कराने वाली व्यवस्था खनन करा रही है; इसलिए आज हमें इस व्यवस्था में हरित मानस के लोगों को चुनकर भेजना चाहिए।

गंगा जी के लिए चला सत्याग्रह बड़े वैज्ञानिक प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल (स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द जी) का जाना और अब आत्मबोधानन्द जी को 155 दिन से अधिक आमरण अनशन गंगा सत्याग्रह की सरकारी अनदेखी भी इस सरकार को भारी पड़ेगी। यह बात अलग है कि विपक्ष भी गंगा जी के इस सवाल पर शान्त ही दिखाई दे रहा है। वह बिखरा हुआ है। ऐसे में जनता का विवेक ही काम आएगा। जनता ही निर्णय करेगी। संवेदनहीन सरकारों पर गंगा तपस्या का असर जरूर दिखाई देगा। यह काल लोक द्वारा लोक शक्ति सृजन का काल है, इसे सृजित कर दिया तो गंगा जी अपने प्रभाव से झूठ और धोखे का बदला बेटे से भी लेगी। गंगा जी बड़े–छोटे बेटों को समान दृष्टि से देखकर न्याय करायेगी। बड़ा बेटा संवेदनहीन है, छोटों को संवेदनशील बनाकर अपने और देश के स्वास्थ्य संरक्षण का काम करवायेगी। राष्ट्र और गंगा हित के लिए काम करने वालों को चुनकर अपनी चिकित्सा करने वालों को ही सत्ता दिलाएगी। यह बात भावनाशील है, गंगा जी के साथ भावनाशील व्यवहार ही सम्भव है।

2019 में जो गंगा जी की अनदेखी करेगा, गंगा जी और गंगा जी का समाज भी उसकी अनदेखी करेगा। बात स्पष्ट है, यह चुनाव अब गंगा जी की अविरलता को अनदेखा नहीं होने देगा। समाज अबकी बार प्रकृति और मानवता का बराबरी से सम्मान करने वालों को ही चुनेगा। प्रकृति पर अतिक्रमण, प्रदूषण व शोषण करने वालों को रोकेगा। 2019 का चुनाव लालची विकास एवं पुनर्जीवन के बीच है।

गंगा लोक राजनीति

मनमोहन सिंह ने गंगा जी की आवाज सुनकर पहले 5 वर्षों में बहुत अच्छे निर्णय लिए थे। उन्होंने गंगा जी को अपना मूल स्वरूप देने के लिए लोहारी नागपाला, पाला मनेरी व भैरू घाटी का चालू काम रुकवा दिया था। जनता ने उनके इस काम के लिए गंगा किनारे के ज्यादातर सांसद चुनकर संसद में भेजे थे। लेकिन मनमोहन सिंह जी ने अपने दूसरे काल में गंगा जी के लिए पहले जैसी तेजी से काम नहीं किया, तो जनता ने उन्हें नहीं चुना। आज के प्रधानमंत्री जी ने भी गंगा जी को अविरल–निर्मल बनाने के लिए बहुत वायदा किया तो जनता ने इन्हें भी ज्यादातर सांसद चुन कर दिए। लेकिन उन्होंने अपना वादा पूरा नहीं किया। अब जनता ने वादा करने वाले का झूठ और धोखा देख लिया है, इसलिए यह विचार करके ही 2019 में चुनने का निर्णय करेंगे। इस बार असली लोग राजनीति का दर्शन भारतीय जनता देगी। जनता की भी असली परीक्षा अब ही है, इसके लिए जनता को सत्य स्मरण कराना अब जरूरी है।

गंगा अविरलता यात्रा के मध्य अन्ना हजारे के साथ वार्ता करते जलपुरुष राजेन्द्र सिंह

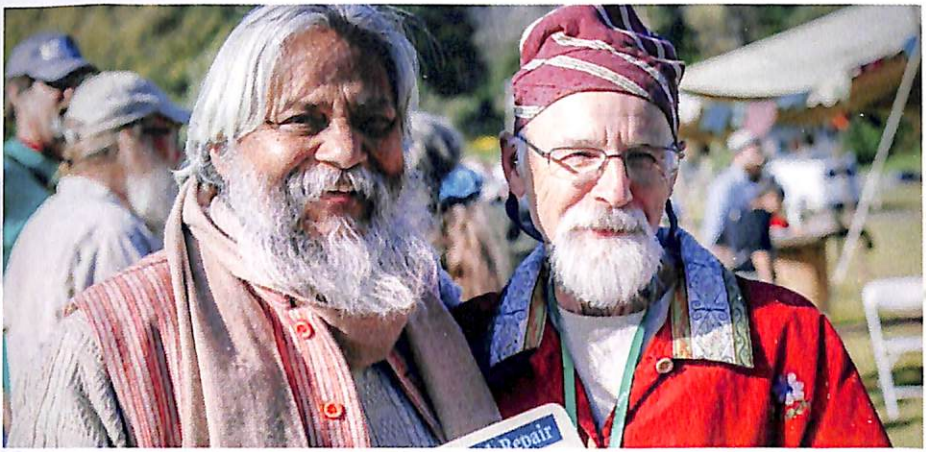

विश्व प्रसिद्ध ग्लोबल अर्थ रिपेयर के संस्थापक श्री माइकेल एवं जलपुरुष अमरीका में

गंगा अविरलता यात्रा हेतु जन चेतना सभा

दक्षिण भारत की नदियाँ कृष्णा, कावेरी और गोदावरी (गंगा की अविरलता यात्रा) की अविरलता पर वार्ता करते हुये जल विशेषज्ञों के साथ जलपुरूष

भाईजी डॉ. एस.एन. सुब्बा राव, बहन राधा भट्ट के साथ वार्ता करते जलपुरूष

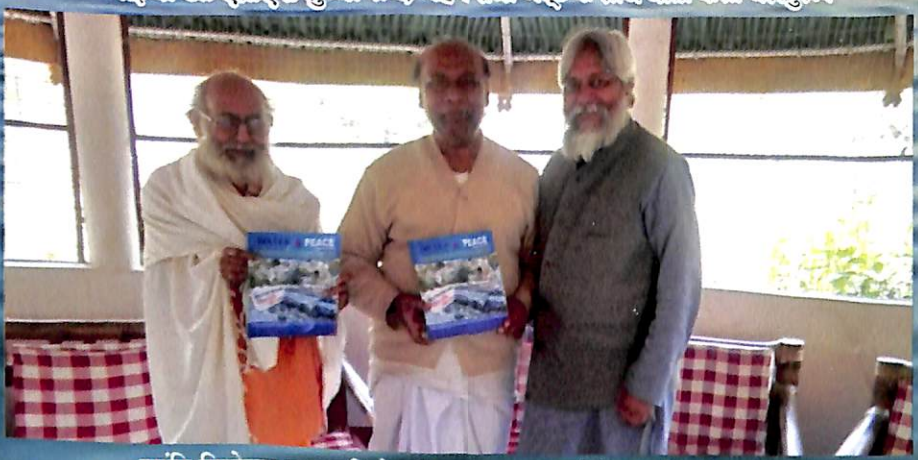

शांति निकेतन गुवहाटी के संस्थापक बाबू भाई, हेम भाई एवं जलपुरुष